CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधारससुधानिधि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्यारी दीदी

के करकमलों में

सादर भेंट

ऊषा

वृन्दावन

१८-१०-८२

ऊ415

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि. करौंदी
वाराणसी-5

शिवकुटी ग्रंथालय
आशु प्रवीण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥

गोस्वामी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु विरचित

श्रीराधारससुधानिधि

[अर्थबोधिनी भाषाटीका सहित]

V.B.T.

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

प्रकाशक तथा सम्पादक :
राजवैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
प्रेम गली, वृन्दावन

संवत् २०३८ बसंत पंचमी
मूल्य-प्रेम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक
राजवैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
प्रेमगली, वृन्दावन

★

द्वितीयावृत्ति——२२००

★

मुद्रक
लक्ष्मी प्रिंटिंग वर्क्स,
गली मदरसा मीर जुमला,
लाल कुआँ, दिल्ली-११०००६

230; 24
महाप्रभु

इस श्रीराधारससुधानिधि अर्थबोधिनी टीका में अनेक पूर्व टीकाकार, भोरी सखी जी के कृपापात्र श्रीहितदास जी, गोस्वामी श्रीहित रूपलाल जी महाराज, पूज्यवर बाबा श्री हितदास जी, विद्वद्वर पं० ओंकारदत्त जी शास्त्री, पू० पं० श्रीकृपालाल जी, भक्तधर्मचन्द्र जी, पं० प्रवर श्रीअमीचन्द्रजी शास्त्री आदि का सम्पादक परम आभारी है। इस शब्दार्थबोधिनी में उपरोक्त टीकाकारों की टीकाओं से बहुत कुछ लिया गया है अतः उपरोक्त वन्दनीय महानुभावों के हृदय की उदारता स्तुत्य है।

भक्तजनों का दासानुदास—
राजवैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

॥ श्रीजी ॥

प्रस्तावना

विक्रमादित्य की सोलहवीं शताब्दी के परार्द्ध काल में साकार सगुण भगवदाराधना में श्रीमच्चैतन्य (गौराङ्ग) महाप्रभु के माध्वगौड़ीय तथा शुद्धाद्वैत सिद्धान्त संस्थापक महाप्रभु श्रीमद्-वल्लभाचार्य चरण के पुष्टि सम्प्रदायों के द्वारा श्रीकृष्ण भक्ति का पूर्ण विकास किया जा रहा था।उसी समय श्रीवृन्दावन धाम में श्रीमन्महाप्रभु गोस्वामी श्रीहित हरिवंश जी द्वारा (१५३०-१६०६) में महामधुरोपासना (निकुञ्जोपासना) के एक नवीन सम्प्रदाय की स्थापना हुई थी। उस महामधुर (निकुञ्ज) उपासना का रहस्य मय पूर्ण परिचय भक्तजनों को करा देना प्रसंगोपात्त ही है। जब कि चार सौ वर्ष पूर्व सोलहवीं विक्रमी शती में प्रसारित समस्त प्रेमोपासक सम्प्रदाय प्रेमस्वरूप ईश्वर को परतत्व मानती चली आ रही है। गोस्वामी श्रीहरिवंश महाप्रभु द्वारा स्थापित श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय में प्रेम स्वरूप भगवान के स्थान में "भगवत् स्वरूप प्रेम" परतत्व माना जाता है, प्रेम स्वरूप भगवान, की उपासना करने वाले सम्प्रदायों में प्रेम को भगवान् की अभिन्न शक्ति मानते हैं भगवत् स्वरूप प्रेम को उपासनीय मानने वाले राधाबल्लभ सम्प्रदाय में प्रेम को भोक्ता, और भोग्य के बीच में रहने वाला एक परम मधुर सम्बन्ध माना गया है, और प्रेम की रचना के लिये भोक्ता, भोग्य और उन के प्रेम सम्बन्ध को अनिवार्य बताया गया है। प्रेम सम्बन्ध को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शास्त्रीय परिभाषा में 'प्रेरक प्रेम' कहा जाता है और अद्वय प्रेम-तत्त्व को भोक्ता, भोग्य और प्रेरक इन प्रेम के त्रिविध रूप में नित्य व्यक्त माना जाता है। इस सिद्धान्त की परिपक्वता शास्त्रों से सिद्ध है, श्वेताश्वतर श्रुति में स्पष्ट बताया है यथा—

एतद्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं नातः परं वेदितव्यं न किंचित्।
भोक्ता भोग्य प्रेरिता रञ्चमत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत्॥

इस श्रुति ने त्रिविध ब्रह्म-स्वरूप का वर्णन किया है। और उस अद्वय व्रह्म के त्रिविध ब्रह्म के तीनों रूपों में परस्पर भोक्ता, भोग्य और प्रेरिता का सम्बन्ध माना है।

परात्पर प्रेम किंवा हित तत्त्व के प्राकट्य की चार भूमिकायें हैं। पहिली [तथा अति शुद्ध] भूमिका निकुञ्ज है। जहाँ यह हित [प्रेम] तत्त्व, १-श्रीराधाकृष्ण, २-सहचरिगण एवं ३-श्रीवृन्दावन के रूप में नित्य प्रकट रहता है।

दूसरी भूमिका 'ब्रज' है, इस भूमिका में प्रेम का प्रकाश प्रथम भूमिका से अनेक अंशों में विलक्षण रहता है। दोनों भूमिकाओं में नाम, रूप-श्रीराधाकृष्ण के यद्यपि एक से ही हैं तब भी उनके प्रेम सम्बन्ध का प्रकार भिन्न ही है। इस विभिन्नता ही से निकुञ्ज की लीला औरं ब्रज के स्वरूप बहुत ही भिन्न बन गये हैं। इन दोनों भूमिकाओं से अलग तीसरी भूमिका वह है जहाँ प्रेम विभिन्न अवतारों के रूप में व्यक्त हुआ है। और चतुर्थ भूमिका तो वह है जो अनन्त नाम रूपात्मक दृश्य, अदृश्य प्रपञ्च जगत रूप में है।

प्रेम आस्वादित होकर प्रेम-रस कहलाता है। श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय का स्वयं का एक स्वतन्त्र प्रेम-रस सिद्धान्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

...ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

है, जो अन्य भक्ति रस परिपाटी के समान भरत मुनि के नाट्य-शास्त्र पर आधारित नहीं है। इस राधावल्लभीय रस सिद्धान्त में श्रीराधाकृष्ण की प्रीति समान बल-शालिनी कही गई है, श्रीहित हरिवंश (हिताचार्य) महाप्रभु ने इस दम्पति (राधा-कृष्ण युगल) में समतूल (समान) रस की स्थिति मानी है, और दोनों को एक दूसरे के गुणों द्वारा 'मात' (पराजित) बतलाया है यथा चतुराशी जी में कहते हैं—

बनी श्रीहित हरिवंश जोरी उभय गुन-गन मात।

इस सम्प्रदाय का संयोग-विरह-सम्बन्धी दृष्टिकोण भी सब सिद्धान्तों से पृथक ही है। इस सम्प्रदाय से अन्य सब हो सम्प्रदायों में संयोग वियोग एक के बाद दूसरे के क्रम से आते जाते हैं, किन्तु श्रीराधावल्लभीय रस सिद्धान्त में प्रेम की इतनी सूक्ष्म एवं तीव्र स्थिति का सामान्य रूप से ग्रहण हुआ है कि उसमें संयोग और विरह सम (एक) काल ही में प्रतिभासित होता रहता है। इस रसरीति की तीसरी विशेषता श्रीराधाजी की सहज प्रधानता है।

संयोग और विरह का एक ही काल में होने का वर्णन कई सिद्धान्त ग्रंथों द्वारा राधावल्लभीय कई रसिकों ने किया है, जैसे—

'देखिवो जहां विरह सम होई। तहां को प्रेम कहा कहै कोई।।

—श्रीध्रुवदास जी

मिल अन मिले रहत विवि अंग-अंग अकुलाहि।
प्रेमहि विरह स्वरूप जहाँ यह रस कह्यो न जाहि।।

—श्रीभजनदास जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रेमी विछुरत नाहि कहुँ, मिल्यो न सो पुनि आहि ।
कौन एक रस प्रेम कौ, कहि न सकत ध्रुव ताहि ।।

—श्रीध्रुवदास जी

श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय का उपासना मार्ग अन्य उपासना मार्गों से कई अंशों में विलक्षण है । परात्पर प्रेम-तत्त्व के अंगभूत भोक्ता, भोग्य और प्रेरक उपासना के क्षेत्र में क्रमशः उपासक, उपास्य और गुरु कहलाते हैं । एक ही तत्त्व के तीन रूप होने के कारण तीनों उपासक, उपास्य और गुरु में समान पूज्यता मानी जाती है । इसीलिए इष्ट और गुरु की उपासना के साथ उपासक (भक्त) की उपासना का विधान इस सम्प्रदाय में किया गया है । यह उपासना प्रेम के प्राकटच की प्रथम भूमिका निकुञ्ज से सम्बन्धित है, अतः सम्प्रदाय की सेवा पद्धति में वैकुण्ठ-लीला से सम्बन्धित शंख, चक्र आदि नहीं रखे जाते हैं और न घंटा पर गरुड़ ही रहता है । शालिग्राम शिला में निकुञ्ज-लीला के चिह्न वंशी और मुकुट आदि नहीं रहते हैं, अतः उसका ग्रहण सेवा में नहीं होता उसकी जगह नाम-सेवा का उपयोग होता है ।

इस सम्प्रदाय का मुख्य सिद्धान्त प्रेम ही है प्रेम विधि निषेध की दीवाल का उल्लंघन कर डालता है जहां प्रेम है वहां नियम कैसे निभ सकता है ।

अपने इष्ट को अपना निजी आत्मीय माना गया है । यह सम्प्रदाय राधा चरण प्रधान है अतः उपासक अपने को राधा जी की सहचरी भाव से व्यवहार करके उनको सदा सर्वकाल सुख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहुँचा नही अपना ध्येय मानता है। श्रीराधासुधानिधि दिव्य-वाणी ग्रन्थ में श्रीराधाजी का स्वरूप तथा उनकी दिव्य प्रेम लीलाओं का वर्णन हुआ है। साथ ही सहचरी भाव से उनकी उपासना का प्रकार भी विशद् रूप में वर्णन है। श्रीदिव्य वृन्दावन के दिव्य स्वरूप का दर्शन भी इस ग्रन्थ में होता है दिव्य वृन्दावन और वृन्दावन नित्य होने वाला श्रीराधा कृष्ण के नित्य बिहार का दर्शन इन ललितादिक नित्य सहचरियों की कृपा पर ही अवलम्बित है इन सहचरियों की कृपा ही से श्रीवृन्दा-वन का सम्यक दृग्गोचर होता है। यथा—

यद्राधापदकिंकरीकृतहृदां सम्यग्भवेद्गोचरं।
ध्येयंनैव कदापि यत् हृदि विना तस्याः कृपास्पर्शतः॥

—श्रीराधासुधानिधि

राधापद दासी प्रथम, होय हिये हुलसाय।
तब श्रीवृन्दावन विशद, महिमा भले लखाय॥
नवल किशोरी राधिका, अति ही मृदुल स्वभाय।
तासु कृपा विन श्रीविपिन, ध्यानहु में न समाय॥

श्रीरसिक प्रेमीजनों का दासानुदास
लक्ष्मीनारायण

लक्ष्मीनारायण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजी

श्रीमद्राधारससुधानिधि के श्रवण मनन
और
पाठ करने की विधि एवं प्रयोजन

प्रत्येक वस्तु के दो रूप हुआ करते हैं। अतः श्रीराधा-रससुधानिधि के भी दो स्वरूप हैं, एक बाहर का स्वरूप अक्षर शब्द वाक्य छन्द के रूप में जो सब ही को नेत्र श्रवण से दृग्गत होते हैं। दूसरा स्वरूप भी सदा इसमें विद्यमान है ही तथापि इस आभ्यंतरीय स्वरूप का दर्शन सब को नहीं होता है। इसका दर्शन तो किसी महाभाग्यशाली जन को ही होता है। वह भीतरी स्वरूप परब्रह्म साक्षात् श्रीकृष्ण की हृदयेश्वरी श्रीराधा ही हैं।

यह स्तोत्र तो कहने मात्र का ही है वास्तव में तो यह साक्षात श्रीराधा ही है यह बात जन साधारण के समझ में नहीं आवेगी अपितु अधिकार प्राप्त शुद्ध प्रेम सिक्त हृदयवान् की समझ में अवश्य आवेगी। क्यों आवेगी, कैसे आवेगी? इसको भी आप श्रीमद् राधासुधानिधि में रहस्य रूप में प्रतिपादित एक निकुञ्ज लीला से समझ लीजियेगा। एक समय सखीजनों ने

---

* श्रीराधासुधानिधि के अक्षर-अक्षर में मधुमयी अनेक निकुञ्ज लीलाएँ निहित हैं जिनका अनुभव भावोत्सव भजनी के हृदयों में अनुभूत होता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीलाड़िलीलाल का रच पचकर श्रृंगार किया और सभा मंडल पर विराजमान किये। समस्त सखी परिकर चौतरफा खड़ा हो गया। श्रीलाड़िली जी के पदनख मणि मयूख की किरणों में से एक छोटी सी किरण को बड़े भावोत्सव से चन्द्रानना सखी ने निहार कर अपने हृदय में निहित कर दिया इसके प्रभाव से उस चन्द्रानना सखी के हृदय में श्रीप्रियाजी के मानस में अपार प्रेम का जो सागर भरा था वह सखी के हृदय में उमड़ पड़ा और महाभाव प्रेम सागर ने चन्द्रानना को आप्लावित कर दिया उस आनन्द ने ब्रह्मानंद को तुच्छ बना दिया। यद्यपि उस समय बहुत सखियाँ उपस्थित थीं। किन्तु अकेली चन्द्रानना ही के पूर्णानुराग रससागर मूर्ति श्रीप्रियाजी की नखचन्द्रमणि की एक सूक्ष्म छटा से हृदय को आप्लावित कर महाभाव के आनन्द से उसको विभोर कर दिया। जब चन्द्रानना प्रिया जी की कृपा से सिक्त हुई तब उसमें महाभाव पूर्ण अनेक लीलाओं का निरंतर अनुभव होने लगा और श्रीप्रियाप्रियतम के प्रेम और रूप का शुद्ध बोध हुआ।

यत्पाद पद्म नखचन्द्रमणिच्छटाया:
विस्फूर्जितं किमपि गोपवधूष्व दर्शि।
पूर्णानुराग रससागरसारमूर्तिः
सा राधिका मयि कदापि कृपां करोतु॥

—श्रीराधासुधानिधि

श्रीचन्द्राननाजी को उपरोक्त अद्‌भुत आनँद की प्राप्ति का कारण उनकी भावोत्सव पूर्ण मनोदृष्टि ही है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भावोत्सव पूर्ण होकर श्रीमद्राधासुधानिधि का श्रवण, मनन, चिंतवन सब ही भावोत्सव युक्त होकर करने ही से श्रीलाड़िलीलाल के स्वरूप और लीलाओं का साक्षात् दर्शन (अनुभव) अवश्य होता है । यही श्रीराधासुधानिधि का आभ्यन्तरीय स्वरूप है ।

भावोत्सव युक्त होना क्या है । अति संक्षेप से इसका दिग्दर्शन कीजिए, विस्तार पूर्वक विशद वर्णन (भावोत्सव स्वरूप का वर्णन) भावुक भक्तगण इस प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राप्त करेंगे ।

यह नेत्रों से प्रतीयमान शरीर तो पृथ्वी जल आदि पांच तत्त्वों से बना है जो जड़ है तथा मन बुद्धि सूक्ष्म शरीर चार तत्त्वों से बना है वह भी जड़ ही है । अर्थात् प्रकृति है ।

मैं जो हूँ (चाहे स्त्री हो या पुरुष) नित्य श्रीराधा प्यारीजी की सहचरी सखी हूँ जो चिन्मय रूप की हूँ और श्रीप्यारीजी की भाँवती कृपा पात्र अति सुन्दर और प्रकृति के गुण विकार शून्य अति शुद्ध प्रेमरूपा हूँ जो नित्य ही उनके बिना एक क्षण भी नहीं सुहाता है मेरे तो प्राण धन जीवन सर्वस्व श्री लाड़िलीलाल ही हैं और मैं तो उन्हीं के कुञ्ज महल में रहती हूं यह जगत् और इनका दृश्य केवल स्वप्न ही है। असली वस्तु तो यही है जो सत्य है। और श्रीराधिका निकुञ्ज मंडल ही सत्य है ऐसी दृढ़ भावना कर प्रिया सखी स्वरूप के आवेश में रहकर इस श्रीराधासुधानिधि का सेवन पाठ करैं या श्रवण मनन करैं दूसरे विचारों को मन में आने ही न दे इस प्रकार की दृढ़ धारणा युक्त होने का सतत अभ्यास करैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तो निश्चय आभ्यंतरीय स्वरूपानंद की प्राप्ति होगी और इसी जीवन में श्रीवृन्दावन और श्रीवृन्दावनेश्वरी प्रिया-प्रियतम का सम्यक् दर्शन प्राप्त होगा।

एतावन्मात्रं जीवनसाफल्यम्।

बाह्य स्वरूप

आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी इस प्रकार चार तरह के भक्त माने गये हैं उनमें कोई आर्त है और अर्थार्थी भी हैं ये भी श्रीराधासुधानिधि का पाठ करें, पाठ करावें और श्रवण करें तो उनकी भी मनोकामना पूर्ण होती है। इसका अनुभव भी कईओं को हुआ है। रोगियों का रोग छूट जाता है, मुकदमों में विजय हो जाती है, निर्धनों को अर्थ-प्राप्ति भी होती देखी जाती है। यह श्रीराधासुधानिधि तो वास्तव में कल्पवृक्ष ही है। जैसे कल्पवृक्ष सब प्रकार के फल देता है और सबकी मनो-वांछा पूरी करता है। उसी तरह यह श्रीराधासुधानिधि सबके मनोरथों की पूर्ति करती है। यह श्रीराधासुधानिधि का बाह्य रूप है। कामना वालों को और निष्कामियों को पवित्रता पूर्वक शुद्ध एवं स्वर युक्त पाठ एकाग्रचित्त से करना चाहिए।

—संपादक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीस्वामिनी शृंगार-अष्टक

[श्रीप्रियाजी की श्रृङ्गार समय की शोभा]

★

※कवित्त※

मज्जन के हेत मणि चौकी जु बिछाइ दई,
बैठी ता पर आइ कैं लड़ैती लड़काइ कैं।
खोलि दियो जूरा, बगराइ दिये सखी बार,
छूटे ज्यौं पिटारे तें भुजंग सुत धाइ कैं।
सौंधौं कर डारें मानौं जादूगर मंत्र पढ़ैं,
हाथ हू न आवैं ये रहे हैं बल खाइ कैं।
वृन्दावन हित रूप श्याम दुरि देखी नेक,
दृष्टि मग ह्वै कैं हलाहल चढ्यो जाइ कैं।। १ ।।

प्रातःकाल जब सखियों ने स्नान के लिये मणियों की चौकी बिछा दी, तब श्रीस्वामिनी जी वहाँ आईं और उस चौकी पर झमक कर चपलता पूर्वक विराजमान हो गईं। सखियों ने जूड़ा खोल दिया। श्रीकिशोरी जी के सचिक्कण, घुँघराले, काले बाल इस प्रकार चारों ओर बिखर गये, मानो पिटारे के खोलते ही काले-काले नाग-शिशु छूट कर दौड़ पड़े हों। सखियाँ उनके वालों में शोधकमिश्रण डाल रही हैं। इस समय की छवि ऐसी हो रही है, मानो जादूगर मन्त्र पढ़ रहे हैं ताकि ये बाल-व्याल वश में रहें; किन्तु ये भला, किसके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाथ आने वाले हैं, ये तो अपनी वक्रगति से लहरा रहे हैं। ये नाग विलक्षण विषैले हैं। साधारण सर्प का विष तो काटने पर ही चढ़ता है, किन्तु इनका विष इन्हें देख लेने से ही सवार हो जाता है। इन काले नागों को प्रियतम ने स्नान-कुञ्ज के बाहर छिपकर दूर से तनिक देख-भर लिया है कि इनका हलाहल उनके नेत्रों के मार्ग से भीतर जाकर रोम-रोम में व्याप्त हो गया है॥ १॥

पट ही मंजूषा मानौं छिप्यौ हो जतन बहु
मज्जन के समय खुल्यौ अद्भुत रतन तन।
चौंक धुकि परी सखी शोभा हू न नीकें लखी,
फैलि गई आभा कुंज लता द्रुम वन घन।
दामिनी निकर कै समूह शशि उदय भये,
किधौं रूपजाल किधौं तेज कौ मिल्यौगन।
वृन्दावन हित रूपलाल दृग नान्हीं ओक,
छवि सिंधु बाढ्यौ क्यौं समात है विचारौ मन।२॥

श्रीकिशोरी जी के श्रीअङ्ग में उत्तम रत्न की-सी ज्योति है। वह अङ्ग-रूपी रत्न वस्त्र रूपी मजूषा में यत्न से छिपा हुआ रहता है। स्नान के समय जब श्रीअङ्ग निर्वसन हुआ तो उसकी अद्‌भुत दीप्ति चारों ओर फैल गई। यद्यपि श्रीअङ्ग इस समय अनावृत था, किन्तु फिर भी सखियाँ उसके सौन्दर्य का अवलोकन न कर सकीं क्योंकि सौन्दर्य-राशि की दीप्ति से उन सखियों की दृष्टियाँ चौंधिया गईं। और उन्होंने अपनी दृष्टि फेर ली। श्रीकिशोरी जी के अङ्गों की अनावृत कान्ति लता-वृक्षों से आच्छादित श्रीवृन्दावन को सघन कुञ्जों में फैल कर ऐसी जगमगाने लगीं मानो वह कोई सौदामिनी (बिजली) का समूह हो, अथवा शशियों का मण्डल एक साथ ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदय हुआ हो, अथवा रूप का जाल या तेज का पुंज उद्भासित हो रहा हो। श्रीलाल जी की छोटी-सी नेत्र-रूपी ओक (अंजुली) में यह प्रतिपल उमड़ता हुआ शोभा का सागर, भला, कैसे समा सकता है। आशय यह है कि श्रीलाड़िली जी का रूप-सौन्दर्य, लावण्य और माधुर्य इतना अपरिमित है कि लाल जी उसके सुख को कभी भी नहीं विलस सकते ॥ २ ॥

हीरन को चक्राकृति चौकी पर बैठी राधे,
उबटन करावैं सखी भीजीं है सनेह सौं।
कौतुक में नैन चौंधि रहै हैं विहंगनि के,
बाढी वन महा-जोति निकसी गौर देह सौं।
मिश्रित सुगन्ध जल उष्ण सौं न्हवावति हैं,
बिथुरे हैं बार अङ्ग अङ्ग गति अछेह सौं।
वृन्दावन हितरूप मानौं शशि आसन करि,
राजत हैं दामिनी लपेटी जैसे मेह सौं ॥ ३ ॥

हीराओं से निर्मित चक्राकार (गोल) चौकी पर विराजमान होकर श्रीराधारानी उबटन करा रही हैं। स्नेह से सिक्त सखियाँ उनके अङ्गों का उबटन कर रही हैं। प्रिया जी के गोरे-गोरे किसलय कोमल नवल अङ्गों से प्रतिपल बढ़ने वाली एक अद्भुत महा ज्योति प्रकट हो रही है। इस आभामयी छवि के कौतुक से विहंगमों (पक्षियों अथवा चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र आदि खेचरों) तक की दृष्टि चौंधियाँ रही है। सखियाँ सुगन्धित उष्ण जल से श्रीकिशोरी जी को स्नान करा रही हैं। इस स्नान के समय श्रीप्रिया जी का केश कलाप उनके वक्ष, पृष्ठ, भुजमूल आदि अङ्गों पर अनवरत रूप से छितरा-कर ऐसा सौन्दर्य उत्पन्न कर रहा है। मानो चन्द्रमा की चौकी पर सघन मेघ-मण्डल से लिपटी हुई दामिनी विराजमान हो। यहाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रमा चक्राकार चौकी का उपमान है, दामिनी किशोरी जी की अङ्गछटा का और मेघ-मण्डल उनके केशपाश का।

कोऊ कर मलें कोऊ परसें मृदु अंगनि को,
कोऊ बढ़ावति हैं हास वचन केलिन मे।
कोऊ जल सींचें कोऊ छवि कौं निहारि छकी,
कोऊ अँगोछें तन, नेह अति नवेलिन में।
चुनि पहिरावति हैं नाना पट रङ्गनि कैं,
राजति हैं राधाजू यों मुदित सहेलिन में।
वृन्दावन हित रूप उपमा अभूत ऐसें,
दामिनी उरझि रहीं मानो छवि बेलिन में ॥४॥

श्रीकिशोरी जी को स्नान कराते समय कोई सखी तो उनके हाथों को मल-मल कर धो रही है, कोई उनके सुकुमार अङ्गों के स्पर्श का सुख प्राप्त कर रही है, कोई अठखेली करती हुई हास परिहासमय सुकुमार वचनों-द्वारा उल्लास बढ़ा रही है, कोई उनका जल से अभिषेक करा रही है, कोई उनकी छवि को देखकर सुध-बुध भूली-सी खड़ी है और कोई उनके सुकुमार श्रीअङ्गों को कोमल अँगोछे से धीरे-धीरे पौंछ रही है। सभी नवेली अलबेली सहचरियों के अन्तराल में स्नेह का सागर उमड़ रहा है। स्नान कराने के उपरान्त सखियाँ छाँट-छाँट कर सुन्दर रङ्गों के शुभ रेशमी वस्त्र उन्हें धारण कराती हैं। उस समय सखी-परिकर के मध्य श्रीकिशोरी जी की जो शोभा हो रही है, उसकी उपमा तो कहीं है ही नहीं, फिर भी उसका वर्णन किया जाय तो यह कहा जा सकता है मानो छवि की लताओं में दामिनी उलझ रही हो। यहाँ छवि की लताएँ सखियों का उपमान है और दामिनी श्रीकिशोरी जी का।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डारि कैं फुलेल पाटी पारति हैं पाछैं बैठी,
लै लै कुसुम नाना भाँति विधिसों रचति हैं।
इत उततें मुकर समेटि सखी केशनि कौं,
दै दै गाढे बंधनि यौं डोरी सों खचति हैं।
मानौ अहि घरनी तपित लोट कमलनि पर
कैधों ह्वै मत्त कनक चौहटें नचति हैं।
वृन्दावन हित किधौं सुधापान करिबे कौं,
राका शशि-नियरो जामि चढिबे कौं पचति हैं ।।५।।

जब श्रीलड़ैती जी सुकुमार रेशमी वस्त्र धारण कर चुकती हैं, तब सखियाँ उनके पीछे बैठकर उनके केशों में फुलेल डालती हैं और फिर माँग निकाल कर बालों को नाना प्रकार के फूलों से सजाती हैं। फिर सखियाँ अपने सुकुमार करों से श्रीप्रिया जी के केशों को रेशमी डोर से कस-कस कर वणी के रूप में गूँथती हैं। उस समय वेणी की ऐसी शोभा हो रही है, मानो कोई क्रुद्ध भुजंगिनि सखियों के कर रूपी कमलों पर लोट रही हो, अथवा कोई उन्मत्त नागिन कंचन की चौहट्टी पर नाँच रही हो, अथवा श्रीप्रिया जी के मुख चन्द्र को निकट में पाकर कोई सुधा-पान करने के लिये उस पर चढ़ने का प्रयत्न कर रही हो।

जो जो सखी आवति सिंगारिबे कौं प्यारी ढिग,
सो सो अंग शोभा देखि अपनपौ बिसरि जात।
कोऊ नेह घूमति सी झूमति सी कोऊ ठाढ़ो,
कोऊ भूली पलकैं न आवत मुख कही बात।
मज्जन के समय रूपसिंधु मरजाद तजि
तजी छवि की लहरि बाढी ऐसे महा कमनी गात।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दावन हित रूप हिय अवनी बोरी प्रेम प्रीतम
सखिन के नैन मीन भये गोता खात।६।।

श्रीकिशोरी जी का श्रृङ्गार करने के लिये उनके पास उपस्थित समस्त सखियाँ उनके अङ्ग प्रत्यंग की छवि को देखकर अपना अपनपा भूली हुई हैं। अर्थात् वे उस रूपमाधुरी को एकटक निहारती ही रह गई हैं। प्रेम की उन्मत्तता के कारण कोई सखी तो मूर्त्ति की तरह खड़ी-की-खड़ी रह गई है और कोई प्रेम-विभोर हो झूम रही है। कोई सखी एकटक नेत्रों से उनके रूप-रस का पान करती हुई पलक गिराना भी भूल गई है तो कोई मुँह आई अपनी बात को भी नहीं कह पा रही है। स्नान के समय श्रीकिशोरी जी के सुकोमल छवियुक्त श्रीअङ्गों में शोभा की ऐसी लहरें बढ़ी हैं कि रूप के सिन्धु ने अपनी सीमा का ही उल्लंघन कर दिया है। इस सौन्दर्य सिन्धु ने प्यारे श्यामसुन्दर और सखियों के हृदय-रूपी वसुधा को तो प्रेम-सुधा के सागर में निमग्न कर दिया है और उनके नेत्र मीन बनकर इसमें गोता खाने लगे हैं।

पहिरि कैं दूकूल बैठी त्रियनि तिलक राधा,
देखो गति आलिन की संभ्रम बढ़ावत हैं।
साँवरी सहेली आइ सुविधि सिंगारैं अंग,
जाके मन धीरज बड़ौ नेह कौं जनावत हैं।
वृन्दावन हितरूप नख सिख बनाइ रची,
अञ्जन की रेखा दै कैं माला पहिरावत हैं।
दर्पन कर लै कैं लड़ैती जू बिलोकैं मुख,
आपने ही रूप कौं न आप पार पावत हैं।।७।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुन्दरियों में शिरोमणि श्रीकिशोरी जी दुकूल धारण किये हुए बिराजमान हैं। इन सखियों की दशा तो देखिये, जो इनके रूप देख-कर अपने सम्भ्रम की पराकाष्ठा को प्राप्त होगई हैं। सखियों की ऐसी स्थिति होने पर एक श्यामा सखी वहाँ पर पधारती हैं। वे श्रीप्यारी जी के श्रीअङ्ग को भली भली प्रकार से सजाने लगती हैं। वे जिस जिस अद्भुत धैर्य से श्रीकिशोरी जी का शृङ्गार कर रही हैं उससे हृदय का श्रीकिशोरी जी के प्रति प्रगाढ़ प्रेम सहज ही प्रकट हो रहा है। इस प्रकार नख से शिख तक सम्पूर्ण शृङ्गार कर चुकने के उपरान्त श्रीश्यामा सखी ने नयनों की कोरों में अञ्जन की रेखा बनाकर उनके कण्ठ में सुन्दर सौरभमयी माला पहिना दी। शृङ्गार पूर्ण हो चुकने पर जब हाथ में दर्पण लेकर श्रीस्वामिनी जी ने अपना स्वरूप स्वयं देखा तो अपने सौन्दर्य की थाह स्वयं ही न पा सकीं।

छिन छिन प्रेम के खिलौना भये रहैं दोऊ,
ऐसी कछु अंगनि सहज बानि परी है।
सहज ही मोहनी बसति बचन माधुरी में,
सहज ही सखिन की गति मति हरी है।
सहज ही प्रीतम मन लाड़ अभिलाषा उठै,
सहज ही लड़ैती सब पूरन करी है।
वृन्दावन हित रूप रस की जहां आठोयाम,
सहज ही लागी रहै दुहुँ ओर झरी है ॥८।

श्रीश्यामा-श्याम के अङ्गों को कुछ ऐसी बान पड़ गई है कि वे परस्पर एक दूसरे के प्रेम के लिये खिलौने बने रहते हैं। उनके वचनों में एक ऐसा सहज माधुर्य है जिसे देखकर सहचरियाँ अपनी गति-मति स्वभाव हो भूल जाती हैं। श्रीलालजी के मन में श्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किशोरी जी के लाड़ की चाह सहज ही उत्पन्न होती है और श्री किशोरी जी उसी सहजता से उस चाह को सम्पन्न कर देती हैं। इस प्रकार श्रीवृन्दावन में श्रीप्रिया-प्रियतम—दोनों की ओर से आठों प्रहर रूप-रस की सहज ही झड़ी लगी रहती है।

इति चाचा श्रीवृन्दावन दास जी महाराज रचित
श्रीस्वामिनी सिंगाराष्टक।

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

❁ श्रीजी ❁

गोस्वामी श्रीहरिवंश महाप्रभु कृत

श्रीयमुनाष्टकम्

(अर्थ सहित)

व्रजाधिराजनन्दनाम्बुदाभगात्रचन्दना-
नुलेपगन्धवाहिनीं भवाब्धिबीजदाहिनीम् ।
जगत्त्रये यशस्विनीं लसत्सुधापयस्विनीं,
भजे कलिंदनंदिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ।। १ ।।

जो श्री नन्दनन्दन के सजल मेघवत् अति सुन्दर घनश्याम गात्र के मलयागिर चन्दन लिप्त सुगंधि को लेकर चल रही है तथा दुस्तर संसार समुद्र के कारण को दग्धकर नष्ट कर देती है। और त्रिलोक में सुयश को प्राप्त कर अति सुन्दर अमृतोपम जल को प्रवाहित कर रही है, बड़े कष्ट से छूटने वाले मोहरूपी अज्ञानान्धकार को नष्ट करने वाली ऐसी उन कलिन्द गिरि की पुत्री श्री यमुनाजी का मैं भजन (सेवा) करता हूँ।

रसैकसीमराधिकापदाब्जभक्तिसाधिकां,
तदङ्गरागपिञ्जरप्रभातिपुञ्जमंजुलाम् ।
स्वरोचिषातिशोभितां कृतांजनाधिगञ्जनां,
भजे कलिंदनंदिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ।। २ ।।

जो रस की परमावधि श्रीराधा महाराणी के चरणकमलों की भक्ति को देती हैं और श्री श्यामसुन्दर की प्रियतमा श्रीराधा के श्री अंगराग पीत (स्वर्ण वर्ण) प्रभा के मण्डल से सुशोभित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो रही हैं और स्वयं अपनी ही प्रभा से सुशोभित हो रही हैं। तथा प्राणियों के पापों को नाश करने वाली उन श्री यमुनाजी का जो दुरन्त मोह को नष्ट करने वाली हैं मैं भजन करता हूँ।

व्रजेन्द्रसूनुराधिकाहृदिप्रपूर्यमाणयो-
र्महारसाब्धिपूरयोरिवातितीव्रवेगतः।
बहिःसमुच्छलन्नवप्रवाहरूपिणीमहं,
भजे कलिंदनंदिनीं दुरतमोहभञ्जिनीम् ॥ ३ ॥

जो बाहर उछलते हुए नवीन प्रवाह युक्त रूपवाली श्री यमुना महाराणी हैं और नन्दनन्दन तथा श्री राधाजी के हृदय में परिपूर्ण महारस अपार सागर के समूहों को ही मानों अति तीव्र वेग से बहा रही हों ऐसी दुरन्त मोह को भञ्जन करने वाली श्री यमुना जी का मैं भजन करता हूँ।

विचित्ररत्नबद्धसत्तटद्वयश्रियोज्ज्वलां,
विचित्रहंससारसाद्यनन्तपक्षिसंकुलाम्।
विचित्रमीनमेखलां कृतातिदीनपालितां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥ ४ ॥

जो चित्र विचित्र रत्नों से जटित अति सुन्दर दोनों तटों की चमक दमक से सुशोभित हो रही हैं तथा रंग-रंग के विविध हंस सारस आदि पक्षीगण जिसके तट पर क्रीड़ा कर रहे हैं और अनेक रंगों वाली मीन ही जिनकी मेखला रूप है। अनाथ अत्यन्त दीनजनों का भी आप पालन करती हैं दुर्दनीय मोह की दाहिका उन श्री यमुनाजी का मैं भजन करता हूँ।

वहन्तिकां श्रियां हरेर्मुदा कृपास्वरूपिणीं,
विशुद्धभक्तिमुज्ज्वलां परे रसात्मिकां विदुः।
सुधास्त्रुतिन्त्वलौकिकीं परेशवर्णरूपिणीं,
भजे कलिंदनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो आनन्दपूर्वक श्री हरि (श्यामसुन्दर) की कांति को धारण करने वाली हैं एवं कृपा ही जिनका स्वरूप है, कई लोग जिनको रसमयी विशुद्ध (निर्मल) भक्ति के रूप से जानते हैं और जो दिव्य अमृत की ही स्रोत (निर्झरिणी) हैं। परम-सुन्दर श्रीकृष्ण के सदृश नीलवर्ण धारण किये हुए ऐसी दुरन्त मोह को मिटाने वाली श्री यमुनाजी को मैं भजता हूँ।

सुरेन्द्रवृन्दवंदितां रसादधिष्ठिते वने,
सदोपलब्धमाधवाद्भुतैकसद्दशोन्मदाम् ।
अतीव विह्वलामिवोच्चलत्तरङ्गदोर्लतां,
भजे कलिंदनंदिनीं दुरंतमोहभञ्जिनीम् ॥ ६ ॥

जिनकी रस के अधिष्ठान रूप श्री वृन्दावन में सुरसमूह वन्दना करते हैं और जिन्हें श्री हरि (श्रीकृष्ण) के सदृश अत्यन्त विचित्र उन्माद भाव सदा ही उपलब्ध हो रहा है और उत्ताल तरंग रूप भुजलताओं से जो अत्यन्त विह्वल सी दीख रही हैं उन दुरंत मोह विमर्दिनी श्री यमुनाजी की मैं सेवा करता हूँ।

प्रफुल्लपङ्कजाननांलसन्नवोत्पलेक्षणां,
रथाङ्गनामयुग्मकस्तनीमुदारहंसिकाम् ।
नितम्बचारुरोधसां हरेः प्रियारसोज्ज्वलां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥ ७ ॥

प्रफुल्लित (खिला हुआ) कमल ही जिनका मुखारविंद है, एवं मनोहर अति सुन्दर नवीन नीलकमल ही जिनकी अंखियां हैं, चक्रवाक दम्पति ही जिनके दो उरज हैं और जो मस्त हंस पत्नि के चाल जैसी हंसगामिनी हैं दोनों मनोहर तट ही जिनके नितम्ब हैं। श्री राधाप्यारी जी के प्रेम की भक्ति रस में प्रकाश-मान ह्वै रही हैं, कष्ट से दूर होने वाले मोह का नाश करने वाली उन श्री यमुनाजी का मैं आश्रय ले रहा हूँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समस्त वेदमस्तकैरगम्यवैभवां सदा,
महामुनीन्द्रनारदादिभिः सदैव भाविताम् ।
अतुल्यपामरैरपिश्रितां पुमर्थशारदां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥ ८ ॥

यावन्मात्र उपनिषद जो वेद मस्तक हैं वे पूराबल लगाकर भी जिनकी प्रभुता का (वैभव का) पार नहीं पा सकते । श्री नारद सनकादिक महाभावराज निरंतर जिनकी हृदय में भावना करते रहते हैं और महा पापी भी जिनकी शरण लेते हैं, जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों अर्थ को देने में बड़ी उदार हैं उन दुरंत मोह अज्ञान को नष्ट करने वाली श्री यमुनाजी की मैं सेवा करता हूँ ।

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकालमादृतः पठेत्,
कलिन्दनन्दिनीं हृदा विचिन्त्य विश्ववन्दिताम् ।
इहैव राधिकापतेः पदाब्जभक्तिमुत्तमा-
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र तत्प्रियानुगः ॥ ९ ॥

विश्व पूजित और वन्दित श्री यमुनाजी का हृदय में ध्यान पूर्वक जो विचारशील मानव त्रिकाल इस अष्टक (स्तोत्र) का पाठ आदर (भाव) पूर्वक नित्य करेंगे, इसी जन्म में श्रीराधा-वल्लभ श्री कृष्ण के पद कमल की पराभक्ति प्राप्तकर निश्चय ही दूसरे जन्म में (श्रीयमुनाष्टक का नित्य पाठ करने वाला भक्त इसी जन्म में सखी रूप दूसरा जन्म प्राप्त कर) प्राणनाथ श्री श्यामसुन्दर की प्राणेश्वरी श्री राधाजी के कैङ्कर्य को प्राप्त करेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्यामा जू अब टुक कृपा करो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय, वाराणसी, वाराणसी-5

॥ श्रीजी ॥

॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥

॥ श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ॥

श्रीराधारस-सुधानिधि

[हिन्दी भाषानुवाद सहित]

यस्याः कदापि वसनाञ्चलखेलनोत्थ
धन्यातिधन्यपवनेन कृतार्थमानी।
योगीन्द्र दुर्गम गतिर्मधुसूदनोऽपि
तस्याः नमोऽस्तु वृषभानुभुवोदिशेऽपि ॥१॥

ग्रन्थारम्भ में नमस्कारात्मक मंगलाचरण करते हैं—

योगीन्द्र (शङ्कर प्रभृति) भी जिनको अत्यन्त कठिनाई से प्राप्त कर पाते हैं, ऐसे मधुसूदन भगवान् भी उसी समय अपने को कृतार्थ मानते हैं जब कभी श्रीवृषभानु लाड़िली पुत्री एवं हम सखिजनों की स्वामिनी श्रीराधाजी की नीली साड़ी के छोर के हिलने से उड़ने वाली धन्याति धन्य वायु अपने श्री अंगों का स्पर्श करती है। ऐसी हमारी स्वामिनी श्रीराधा जी जिस दिशामें (बरसाने के महल में) विराजमान हों, उस दिशा को भी मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्मेश्वरादिसुदुरूहपदारविन्द,
श्रीमत्परागपरमाद्भुतवैभवायाः ।
सर्वार्थसाररसवर्षिकृपार्द्रदृष्टे,
स्तस्या नमोस्तु वृषभानुभुवो महिम्ने ॥२॥

जो ब्रह्मा शिवादिकों से भी अतिशय दुस्तर्क्य पद कमल युगल की शोभा संपन्न पराग के परमाद्भुत ऐश्वर्य से युक्त एवं पुरुषार्थ चतुष्टय-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का सारभूत रस वर्षाने वाली-कृपा से स्निग्ध-दृष्टि उन वृषभानुकुमारी की महिमा को हमारा नमस्कार हो ॥२॥

यो ब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्म मुख्यै,
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य ।
सद्यो वशीकरणचूर्णमनन्तशक्तिं,
तं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ॥३॥

जो ब्रह्मा, रुद्र, शुक, नारद, भीष्मादिकों से भी एकाएक लक्षित नहीं हुए उन परम पुरुष लाल जी को तत्काल ही वश करने में समर्थ चूर्ण के समान अत्यन्त शक्ति सम्पन्न उस श्रीराधाजी की चरण रेणु का मैं बार-बार स्मरण करता हूँ ॥३॥

आधायमूर्द्धनि यदापुरुदारगोप्यः ।
काम्यं पदं प्रियगुणैरपि पिच्छमौलेः ॥
भावोत्सवेन भजतां रसकामधेनुं ।
तं राधिकाचरणरेणुमहं स्मरामि ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदार गोपियों ने जिसको अपने मस्तक पर चढ़ाकर मयूर-पिच्छधारी लालजी के लिये रस की कामधेनु के समान उस प्रिय गुणों के सहित वाञ्छित पद को प्राप्त किया तथा भाव चाव से भजने वालों के लिये रस की कामधेनु के समान उस श्रीराधाचरण रेणु को मैं स्मरण करता हूँ ।।४।।

दिव्यप्रमोदरससारनिजांगसंग ।
पीयूषवीचिनिचयैरभिषेचयन्ती ।।
कन्दर्पकोटिशरमूर्च्छितनन्दसूनु ।
संजीवनी जयति कापि निकुंजदेवी ।।५।।

अलौकिक आनन्द के रस का सर्वस्व सार जो निज अङ्ग सङ्ग मिलन है उसी अमृत के तरङ्ग समूह से सींचती हुई कामदेव के कोटि कोटि बाणों से व्यथित उन नन्दकुमार की सञ्जीवनी रूपा कोई अनिर्वचनीय निकुञ्जदेवी सर्वोपरि जय को प्राप्त हो रही है ।।५।।

तन्नः प्रतिक्षणचमत्कृतचारुलीला ।
लावण्यमोहनमहामधुरांगभंगि ।।
राधाननं हि मधुरांगकलानिधान ।
माविर्भविष्यति कदा रससिन्धुसारम् ।।६।।

क्षण क्षण में चमत्कार पूर्ण सुन्दर लीला के लावण्य द्वारा मोहित करने में अत्यन्त मधुर, अङ्ग भङ्गी पूर्ण मधुर श्रृंगार केलि की रूप कलाओं के निधि एवं रस सिन्धु का सार रूप वह श्रीराधा जी का मुख हमारे सम्मुख कब यथार्थ रूप से प्रगट होगा ।।६।।

यत्किंकरीषु बहुशः खलु काकुवाणी ।
नित्यं परस्य पुरुषस्य शिखण्डमौलेः ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्याः कदा रसनिधेर्वृषभानुजाया ।
स्तत्केलिकुञ्ज भवनांगणमार्जनीस्याम् ।।७।।

जिन श्रीप्रिया जी की दासियों के मयूर मुकुट धारी परम पुरुषोत्तम लालजी की नित्य निरन्तर बहुत बार निश्शंक रूप से कातर चाटुकारिता पूर्ण वचन रचना होती रहती है,उन रसनिधि श्री वृषभानुनन्दिनी की उस केलि कुञ्ज भवन के आँगन की सोहनी देने वाली कब होऊँगी ।।७।।

वृन्दानिसर्वमहतामपहायदूराद् ।
वृन्दाटवीमनुसर प्रणयेन चेतः ।।
सत्तारणी कृतसुभावसुधारसौघं ।
राधाभिधानमिह दिव्य निधानमस्ति ।।८।।

हे मेरे मन ! सभी महत्वपूर्ण महापुरुषों के समूह को दूर से ही त्याग कर प्रीतिपूर्वक वृन्दावन के मार्ग का अनुसरण कर,क्यों कि वहाँ सज्जनों के तारने को तत्पर सुन्दर भाव रूप सुधा-रस के प्रवाह से पूर्ण श्रीराधा नाम की अलौकिक निधि विराजमान हो रही है ।।८।।

केनापि नागरवरेण पदे निपत्य,
संप्रार्थितैक परिरम्भरसोत्सवायाः ।।
सभ्रू विभंगमतिरंगनिधेः कदा ते,
श्रीराधिके नहिनहीतिगिरः शृणोमि ।।९।।

हे श्रीराधे ! किसी एक अलौकिक चतुर शिरोमणि के द्वारा चरणों में पड़ कर, अर्थात् चरणों में नतमस्तक होकर एक बार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलिंगन रसमय उत्सव की सम्यक् प्रार्थना करने पर आपके निगूढ केलि-निधि रूप कुटिल भृकुटी पूर्ण 'नहीं' 'नहीं' ऐसे प्रतिकार वचनों को कब सुनूँगी ।।९।।

यत्पादपद्मनखचन्द्रमणिच्छटाया ।
विस्फूर्जितं किमपि गोपवधूष्वदर्शि ।।
पूर्णानुरागरससागरसारमूर्त्तिः ।
सा राधिकामयि कदापि कृपां करोतु ।।१०।।

जिनके चरणकमल-स्थित चन्द्राकार नखमणि की कान्ति का कुछ अनिर्वचनीय चमत्कारी प्रभाव गोपवधूटियों में लक्षित हुआ है।वह परिपूर्ण प्रेमस्वरूप शृंगार रस सागर की सारमूर्ति श्रीराधिका कभी मेरे ऊपर कृपा करें ।।१०।।

उज्जृम्भमाणरसवारिनिधेस्तरंगै-
रंगैरिव प्रणयलोलविलोचनायाः ।
तस्याः कदा नु भविता मयि पुण्यदृष्टि-
र्वृन्दाटवीनव निकुञ्जगृहाधिदेव्याः ।।११।।

निरन्तर उत्कृष्ट रूप से उच्छलित् रस सागर की तरंगों के समान अङ्गों से अलंकृत, प्रणय के कारण चंचल नेत्रों वाली उन वृन्दावन के नव निकुञ्ज रूप सदन की अधिष्ठात्री देवी की क्या कभी मुझ पर पवित्र दृष्टि होगी ? ।।११।।

वृन्दावनेश्वरि तवैवपदारविन्दं-
प्रेमामृतैकमकरन्दरसौघपूर्णम् ।
हृद्यर्पितं मधुपतेः स्मरतापमुग्रं-
निर्वापयत्परमशीतलमाश्रयामि ।।१२।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे वृन्दावनेश्वरी ! प्रेमामृत के एक मात्र मकरन्द रस के प्रभाव से पूर्ण तथा श्री लाल जी के वक्षस्थल पर अर्पित होने से तीव्र काम व्यथा को शान्त करने वाले आपके ही अत्यन्त शीतल चरण कमल का आश्रय लेता हूँ ॥१२॥

राधाकरावचितपल्लववल्लरीके-
राधापदांकविलसन्मधुरस्थलीके ।
राधायशोमुखरमत्तखगावलीके-
राधाविहारविपिने रमतां मनो मे ॥१३॥

श्रीराधाजी के कर कमलों द्वारा संस्पृष्ट पल्लव वाली लताओं से अलंकृत, श्रीराधाजी के चरण कमलों के चिह्नों से शोभायमान मनोहर स्थलियों से मण्डित एवं श्रीराधाजी के कीर्त्तिगान से चहचहाते प्रसन्न चित्त मतवाले पक्षि समूह से राजित, श्रीराधाजी के ऐसे उपर्युक्त विहार वन श्री वृन्दावन में मेरा मन निरंतर रमण करे ॥१३॥

कृष्णामृतं चल विगाढुमितीरिताहं-
तावत्सहस्व रजनी सखि यावदेति ।
इत्थं विहस्य वृषभानुसुतेह लप्स्ये-
मानं कदा रसदकेलिकदम्बजातम् ॥१४॥

हे सखि ! श्याम रूपी अमृत यमुना जल में स्नान करने को चलो, मैं इस प्रकार आज्ञा किये जाने पर उत्तर में कहूँगी, जब तक रात्री प्राप्त हो तब तक धैर्य्य धारण करो। इस प्रकार परिहास करती हुई हे श्रीभानुसुते ! रस दायिनी केलि समूह से समुत्पन्न सम्मान को मैं निश्चित रूप से कब प्राप्त करूँगी ? ॥१४॥ कृष्णामृत श्लेष है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पादांगुलीनिहितदृष्टिमपत्रपिष्णुं-
दूरादुदीक्ष्य रसिकेन्द्रमुखेन्दुबिम्बम् ।
वीक्षे चलत्पदगतिं चरिताभिरामां-
झंकारनूपुरवतीं बत कर्हि राधाम् ।।१५।।

दूर से ही रसिक शेखर श्री लाल जी के मुख चन्द्र की छटा को भली भांति पहिचान कर परम लज्जावती स्वकीय चरणकमल की अंगुलियों में नजर जमाये हुए अपने चारुचरित्रों से अति रम्य बजते हुए नूपुर वाली चरण कमलों की गति युक्त श्री राधाजी को अहाहा कब मैं देखूँगी ? ।।१५।।

उज्जागरं रसिकनागरसंगरंगैः
कुञ्जोदरे कृतवती नु मुदा रजन्याम् ।
सुस्नापिता हि मधुनैव सुभोजिता त्वं-
राधे कदा स्वपिषि मत्करलालितांघ्रिः ।।१६।।

हे श्री राधे ! आपने सारी रात रसिक शेखर श्री लाल जी के साथ प्रेम विहार में हर्ष पूर्वक कुञ्ज भवन में निश्चय ही जागरण किया हो, फिर भोर ही मेरे द्वारा स्नान कराए जाने के बाद मधुर बाल-भोग लगाकर मेरे कर युगल से चरण कमलों का लालन पाकर कब शयन करोगी ? ।।१६।।

वैदग्ध्यसिंधुरनुरागरसैकसिन्धु-
र्वात्सल्यसिन्धुरतिसांद्रकृपैकसिंधुः ।
लावण्यसिंधुरमृतच्छविरूपसिंधुः-
श्रीराधिका स्फुरतु मे हृदि केलिसिंधुः ।।१७।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चातुरी कोक गान, नृत्य, वाद्य आदि समस्त कला की सिंधु, अखिल माधुर्य की एक मात्र सिंधु, वत्सलता की सिंधु, अत्यन्त घनीभूत कृपा की एकमात्र सिन्धु, यौवन छटा की सिन्धु, अविनाशी कांति वाले रूप की सिन्धु, केलि कलाप की सिन्धु, श्री राधिका जू मेरे हृदय में स्फुरित हों ? ॥१७॥

दृष्ट् वैव चंपकलतेव चमत्कृतांगी-
वेणुध्वनिं क्व च निशम्य च विह्वलांगी ।
सा श्यामसुन्दरगुणैरनुगीयमानैः
प्रीता परिष्वजतु मां वृषभानुपुत्री ॥१८॥

जो प्यारे लाल का दर्शन करते ही चंपकलता के सदृश कम्पित कलेवर हो उठती हैं और कभी वंशी के नाद को सुनकर विकल-वपु हो जाती हैं, श्री लालजी के गुणों का मुझ से रुचि पूर्वक गान सुनकर प्रसन्न हो, वह वृषभानुनन्दिनी मुझे कब आलिङ्गन करेंगी ? ॥१८॥

श्रीराधिके सुरतरंगि नितम्बभागे-
कांचीकलापकलहंसकलानुलापैः ।
मंजीरशिंजितमधुव्रतगुञ्जितांघ्रि-
पंकेरुहैः शिशिरयस्व रसच्छटाभिः ॥१९॥

विहार रंग रञ्जित नितम्ब प्रान्त वाली हे श्रीराधिके ! करधनी के सरस शब्द रूप कलहंसों के मधुर कलरव से एवं नूपुर की ध्वनि रूप भ्रमरों के गुञ्जार से युक्त चरण कमलों के द्वारा अपनी रस की छटाओं से मुझे शीतल करो ॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधिके सुरतरंगिणि दिव्यकेलि-
कल्लोलमालिनि लसद्वदनारविंदे ।
श्यामामृतांबुनिधिसंगमतीव्रवेगि-
न्यावर्त्तनाभिरुचिरे मम सन्निधेहि ॥२०॥

अप्राकृत विहार रूप लहर मालाओं(प्रवाहों)से मण्डित सुशोभित मुख कमल वाली ! प्रियतम रूप अमृतरससागर के समागम के लिये अबाध गति शालिनी,नाभि रूप आवर्त से आकर्षक गंगाजी के समान हे श्रीराधिके ! मुझे अपना सामीप्य प्रदान कीजिये ॥२०॥

सत्प्रेमसिन्धुमकरन्दरसौघधारा
सारानजस्रमभितः स्रवदाश्रितेषु ।
श्रीराधिके ! तव कदा चरणारविन्दं
गोविन्दजीवनधनं शिरसा वहामि ॥२१॥

हे श्री राधिके ! आधीन जनों पर चारों ओर से निर्मल प्रेम सिन्धु रूपी मकरन्द रस प्रवाह के अटूट सम्पात को निरन्तर उड़ेलते हुए एवं श्री लाल जी के एक मात्र जीवन सर्वस्व आपके चरण कमल को मैं कब अपने सिर पर धारण करूँगी ? ॥२१॥

संकेतकुञ्जमनुकुञ्जरमन्दगामि-
न्यादाय दिव्यमृदुचन्दनगन्धमाल्यम् ।
त्वां कामकेलिरभसेन कदा चलन्तीं
राधेनुयामि पदवीमुपदर्शयन्ती ॥२२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे श्रीराधे ! प्रेम विहार का उत्सुकता से कुञ्ज की ओर प्रस्थान करती हुई, आपके पीछे-पीछे (आपको) अभीष्ट मार्ग दिखाती हुई, अलौकिक कोमल चन्दन (तथा) सुगन्धित मालाओं को लेकर गज जैसी मन्द गति से (मैं) कब चलूँगी ? ॥२२॥

गत्वा कलिन्दतनया विजनावतार-
मुद्वर्त्तयन्त्यमृतमंगमनंगजीवम् ।
श्रीराधिके तव कदा नवनागरेन्द्रं
पश्यामि मग्ननयनं स्थितमुच्चनीपे ॥२३॥

हे श्रीराधिके ! श्री यमुना जी के एकान्त निर्जन घाट पर जा कर कामदेव को जीवित करने वाले आपके अमृत सार अङ्गों का उबटन करती हुई, विशाल कदम्ब पर विराजमान (आपके दिव्य वपु के प्रति दृष्टि जमाये हुए आपके नागर किशोर शिरोमणि (प्रियतम) को कब देखूँगी ? ॥२३॥

सत्प्रेमराशिसरसो विकसत्सरोजं
स्वानन्दसीधुरससिंधु विवर्द्धनेन्दुम् ।
तच्छ्रीमुखं कुटिलकुन्तलभृंगजुष्टं
श्रीराधिके तव कदा नु विलोकयिष्ये ॥२४॥

हे श्री राधिके ! श्रेष्ठतम प्रेम पुञ्ज सरोवर के समान निजानन्द रूप अमृत पूर्ण रस सिन्धु को उच्छलित करने में पूर्ण चन्द्र तुल्य (एवं) घुँघराली अलकावली रूप भ्रमरों से वेष्टित आपके उस शोभा-शाली मुख का कब भली भांति दर्शन करूँगी ॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लावण्यसाररससारसुखैकसारे
कारुण्यसारमधुरच्छविरूपसारे ।
वैदग्ध्यसाररतिकेलिविलाससारे
राधाभिधे मम मनोखिलसारसारे ।।२५।।

लावण्य के सार, रस के सार, सुख के एक मात्र सार, करुणा के सार, मधुर कान्ति से युक्त रूप के सार, चातुरी के सार, सुरत क्रीड़ा पूर्ण विहार के सार एवं समस्त सारों के भी सार सर्वस्व रूप श्रीराधा नामक सार में मेरा मन रमण करे ।।२५।।

चिन्तामणिः प्रणमतां व्रजनागरीणां
चूड़ामणिः कुलमणिर्वृषभानुनाम्नः ।
सा श्यामकामवरशान्तिमणिर्निकुञ्ज
भूषामणिर्हृदय-सम्पुटसन्मणिर्नः ।।२६।।

जो प्रणाम करने वालों की चिन्तामणि, व्रज सुन्दरियां की शिरोमणि, श्री वृषभानु जी के समस्त कुल की मणि, प्रियतम के काम शान्त करने वाली शीतल मणि (एवं) निकुञ्ज भवन को भूषित करने वाली मणि है, वह (श्रीराधा) हमारे हृदय रूपी सम्पुट की श्रेष्ठतम मणि है ।।२६।।

मञ्जुस्वभावमधिकल्पलतानिकुञ्ज
व्यञ्जन्तमद्भुतकृपा रसपुञ्जमेव ।
प्रेमामृताम्बुधिमगाधमबाधमेतं
राधाभिधं द्रुतमुपाश्रय साधु चेतः ।।२७।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे मन ! कल्पलता की कुञ्ज में विराजमान, अभूतपूर्व कृपा रस के समूह को निश्चय रूप से प्रकट करते हुये, मनोज्ञ स्वभाव वाले अथाह (एवं) समस्त बाधाओं को दूर करने वाले, इस श्री राधा नामक प्रेमामृत सागर का शीघ्र दृढ़ता से अवगाहन कर ।।२७।।

श्रीराधिकां निजविटेन सहालपन्तीं
शोणाधरप्रसृमरच्छविमञ्जरीकाम् ।
सिंदूरसम्वलितमौक्तिकपंक्तिशोभां
यो भावयेद्दशनकुन्दवतीं स धन्यः ।।२८।।

रक्तवर्ण अधर से छिटकती हुई कांति मञ्जरी से युक्त, सिन्दूर से सनी हुई मोतियों की लड़ियों की माँग से सुशोभित, कुन्दकली के समान दन्त पंक्ति वाली, अपने लम्पट प्रियतम से बात-चीत करती हुई श्री राधिका जी की जो कोई भावना करता है वह कृतार्थ है ।।२८।।

पीतारुणच्छविमनन्ततडिल्लताभां
प्रौढानुरागमदविह्वलचारुमूर्त्तिम् ।
प्रेमास्पदां व्रजमहीपतितन्महिष्यो
र्गोविन्दवन्मनसि तां निदधामि राधाम् ।।२९।।

स्वर्ण वर्ण कान्ति सम्पन्न असीम विद्युत लताओं की प्रभा वाली घनीभूत प्रगाढ़ अनुराग के मद से भाव विभोर (एवं) सुन्दर विग्रह वाली ब्रजेश्वर नन्द की (तथा) उनकी रानी (यशोदा) दोनों की लालजी के समान प्रेम पात्री उन श्री राधा जी को मन में धारण करती हूँ ।।२९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्माय चारुमुकुटं नवचन्द्रकेण
गुञ्जाभिरारचितहारमुपाहरन्ती ।
वृन्दाटवीनवनिकुञ्जगृहाधिदेव्याः
श्रीराधिके तव कदा भवितास्मि दासी ।।३०।।

हे श्री राधिके ! नवीन मोरपिच्छ का मनोहर मुकुट बनाकर घुँघुचियों से भलीभाँति गूँथी हुई माला समर्पित करती हुई श्री वृन्दावन के नूतन निकुञ्ज सदन की अधिष्ठात्री देवी आपकी किङ्करी कब बनूंगी ।।३०।।

संकेतकुञ्जमनुपल्लवमास्तरीतुं
तत्तत्प्रसादमभितः खलु संवरीतुम् ।
त्वां श्यामचन्द्रमभिसारयितुं धृताशे
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपाकटाक्षम् ।।३१।।

हे श्री राधिके ! इङ्गित, संकेत कुञ्जों में पल्लवम् (शय्या) रचने के लिये सब प्रकार से उस-उस प्रसाद (कृपा) को निश्चय रूप से भलीभाँति छिपाने के लिए आपको श्याम-शशि (लाल जी) के प्रति अभिसार कराने के उद्देश्य से आशा युक्त मुझ पर कृपा दृष्टि कीजिये ।।३१।।

दूरादपास्य स्वजनान्सुखमर्थकोटिं
सर्वेषु साधनवरेषु चिरं निराशः ।
वर्षन्तमेव सहजाद्भुतसौख्यधारां
श्रीराधिकाचरणरेणुमहं स्मरामि ।।३२।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं बन्धु बान्धवों को, समस्त सुखों को, कोटि-कोटि सम्पत्तियों को, दूर से ही त्याग करके (तथा) सब प्रकार के पारमार्थिक श्रेष्ठ साधनों को दीर्घ काल तक करने के बाद निराश होकर अनायास अनुपम सुख की धारा बरसाती हुई श्री राधा जी की चरण रज का एकमात्र स्मरण करती हूँ ॥३२॥

वृन्दाटवीप्रकटमन्मथकोटिमूर्त्तेः
कस्यापि गोकुलकिशोर निशाकरस्य ।
सर्वस्वसम्पुटमिव स्तनशातकुम्भ–
कुम्भद्वयं स्मर मनो वृषभानुपुत्र्याः ॥३३॥

हे मेरे मन ! श्रीवृन्दावन में नित्य विराजमान कोटि-कोटि मदन से भी सुन्दर विग्रह वाले किसी अनिर्वचनीय गोकुल के नित्य किशोर चन्द्रमा के सर्वस्व रखने की पिटारी के समान श्रीवृषभानु बाबा की दुलारी के युगल उरोज रूप स्वर्ण कलश द्वय का स्मरण कर ॥३३॥

सान्द्रानुरागरससारसरः सरोजं
किंवा द्विधा मुकुलितं मुखचन्द्रभासा ।
तन्नूतनस्तनयुगं वृषभानुजायाः
स्वानन्दसीधुमकरन्दघनं स्मरामि ॥३४॥

क्या निविड़ अनुराग रस सार सरोवर का कमल ही मुख शशि की कान्ति से दो भाग होकर कलिका में परिणत हो गया है, (ऐसे) वृषभानु कुमारी के निजानन्द अमृत रूप मकरन्द से घनीभूत उस नवीन उरोज युगल का मैं स्मरण करती हूँ ॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रीडासरः कनकपंकजकुड्मलाय
स्वानन्दपूर्णरसकल्पतरोः फलाय ।
तस्मै नमो भुवनमोहनमोहनाय
श्रीराधिके ! तव नवस्तनमण्डलाय ।।३५।।

हे श्री राधिके ! केलि सरोवर के सुवर्ण कमल की कलिका के समान निजानन्द से भरपूर,रसमय कल्पवृक्ष के फल के समान त्रिभुवन मोहन लाल जी को भी मोहित करने में समर्थ,उस आपके नवीन स्तन मण्डल को (मेरा) नमस्कार हो ।।३५।।

पत्रावलीं रचयितुं कुचयोः कपोले
बद्धुं विचित्र कबरीं नवमल्लिकाभिः ।
अंगं च भूषयितुमाभरणैर्धृताशे
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपावलोकम् ।।३६।।

हे श्री राधिके ! आपके स्तन और कपोलों पर चित्र कारी रचने के लिए,नवीन मल्लिका के पुष्पों से अपूर्व केश-पाश सजाने के लिये और आभूषणों से श्री अङ्ग को विभूषित करने के लिए, आशा लगाने वाली मुझ पर कृपा दृष्टि कीजिए ।।३६।।

श्यामेति सुन्दरवरेति मनोहरेति
कन्दर्प-कोटि-ललितेति सुनागरेति ।
सोत्कण्ठमह्नि गृणती मुहुराकुलाक्षी
सा राधिका मयि कदा नु भवेत्प्रसन्ना ।।३७।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे श्याम ! हे सुन्दर शिरोमणे ! हे मनोहरे ! हे कोटि मन्मथ कमनीय ! हे श्रेष्ठ नट नागर ! इस प्रकार दिन में बार-बार उत्कण्ठा पूर्वक उच्चारण करती विह्वल नयनी वह श्री राधा क्या कभी मुझ पर प्रसन्न होंगी ।।३७।।

वेणुः करान्निपतितः स्खलितं शिखण्डं
भ्रष्टं च पीतवसनं व्रजराजसूनोः ।
यस्याः कटाक्षशरपातविमूर्छितस्य
तां राधिकां परिचरामि कदा रसेन ।।३८।।

जिनके कटाक्ष (चितवन) रूप बाण प्रहार से मूर्छित हुए व्रजेश्वर कुमार (श्री लाल जी) के हाथ से वंशी गिर गई, मयूर पिच्छ खिसक गया और पीताम्बर अस्त व्यस्त हो गया, उन (ऐसे चमत्कार वाली) श्रीराधिका को मैं कब अनुराग पूर्वक सेवन करूँगी ।।३८।।

तस्या अपाररस-सारविलासमूर्त्ते
रानन्दकन्दपरमाद्भुतसौम्यलक्ष्म्याः ।
ब्रह्मादिदुर्गमगतेर्वृषभानुजायाः
कैंकर्य्यमेव ममजन्मनि-जन्मनि स्यात् ।।३९।।

असीम रस सार विहार की विग्रह, आनन्द स्वरूप लाल जी की परम अनूपम मृदुल श्रेष्ठ सम्पत्ति (एवं) ब्रह्मादिकों से भी दुर्लक्ष्य गति, उन (ऐसी) वृषभानु कुमारी का किंकरी भाव ही मुझे जन्म जन्मांतर में प्राप्त हो ।।३९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्णानुरागरसमूर्त्तितडिल्लताभं
ज्योतिः परं भगवतो रतिमद्रहस्यम् ।
यत्प्रादुरस्ति कृपया वृषभानुगेहे
स्यात्किंकरीभवितुमेव ममाभिलाषः ।।४०।।

पूर्ण प्रेम रस की मूर्ति, विद्युत्वल्लरी के समान कान्ति सम्पन्न एवं भगवान् की रति-पूर्ण रहस्य वस्तु, जो कृपा-परवश वृषभानु जी के भवन में प्रकट है, उनकी दासी बनना ही मेरी लालसा हो ।।४०।।

प्रेमोल्लसद्रसविलासविकासकन्दं
गोविन्दलोचनवितृप्तचकोरपेयम् ।
सिञ्चन्तमद्भुतरसामृतचन्द्रिकौघैः
श्रीराधिकावदनचन्द्रमहं स्मरामि ।।४१।।

प्रेम से उच्छलित हुए सुरत केलि-विकास के कारण एवं श्री लालजी के नेत्र रूपी अतृप्त चकोर के पेय तथा अद्भुत अमृत रसमयी चाँदनी के प्रवाहसे सींचने वाले श्रीराधाजी के मुख चन्द्र को मैं स्मरण करती हूँ ।।४१।।

संकेतकुञ्जनिलये मृदुपल्लवेन
क्लृप्ते कदापि नवसंगभयत्रपाढ्याम् ।
अत्याग्रहेण करवारिरुहे गृहीत्वा
नेष्ये विटेन्द्रशयने वृषभानुपुत्रीम् ।।४२।।

संकेतित कुञ्ज-सदन में कोमल पल्लवों से रचित लम्पट शिरोमणि प्रियतम की शय्या पर प्रथम मिलन के कारण भय से और लज्जा से भरी हुई वृषभानु कुमारी जी को अत्यन्त हठ से हस्त कमल को ग्रहण कर क्या कभी मैं ले जाऊंगी ।।४२।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सद्गन्धमाल्यनवचन्द्रलवंगसंग
ताम्बूल सम्पुटमधीश्वरि मां वहन्तीम् ।
श्यामं तमुन्मदरसादभिसंसरन्ती
श्रीराधिके ! करुणयानुचरीं विधेहि ॥४३॥

हे स्वामिनि ! हे श्रीकिशोरीजू ! उन लालजी के प्रति प्रेमोन्माद रस से सुरत-उत्कण्ठा से अभिसार करते समय आप सुगन्धित मालाएँ, नूतन कपूर एवं लौंग मिश्रित पान की रत्नमई डिबिया को पहुँचाने के लिये मुझे करुणा करके अपनी अनुचरी बना लीजिये ॥४३॥

श्रीराधिके ! तव नवोद्गमचारुवृत्त
वक्षोजमेव मुकुलद्वयलोभनीयम् ।
श्रोणीं दधद्रसगुणैरुपचीयमानं
कैशोरकं जयति मोहनचित्त चोरम् ॥४४॥

हे श्रीराधिके ! नूतन उल्लसित उभरे हुए मनोहर गोल कुच युगल दो कलियों के समान मोहित करने वाला तथा नितम्ब प्रदेश को विशेषतया विकसित करता हुआ, रसमय गुणों से विवर्धमान लाल जी के चित को हरने वाला आपका किशोर वय निश्चय ही विजय को प्राप्त हो रहा है ॥४४॥

संलापमुच्छलदनंगतरंगमाला
संक्षोभितेन वपुषा व्रजनागरेण ।
प्रत्यक्षरं क्षरदपाररसामृताब्धि
श्रीराधिके ! तव कदा नु श्रृणोम्यदूरात् ॥४५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे श्रीराधिके ! उछलती हुई कामदेव की कल्लोल मालाओं से अत्यन्त क्षुब्ध विग्रह वाले नटनागर श्रीलालजी के साथ प्रत्येक अक्षर में अपार रसमय अमृत सागर को प्रवाहित करने वाले आपके वार्तालाप को समीप से क्या कभी मैं सुनूँगी ।।४५।।

अंकस्थितेपि दयिते किमपि प्रलापं
हा मोहनेति मधुरं विदधत्यकस्मात् ।
श्यामानुराग मदविह्वलमोहनांगी
श्यामामणिर्जयति कापि निकुंजसीम्नि ।।४६।।

प्रियतम के गोदमें विराजमान होनेपर भी अचानक हा मोहन ! हा मोहन ! इस प्रकार मधुर प्रलाप करती हुई एवं लालजी के अनुराग में मद से विह्वल मनोहर अङ्गवाली कोई अनिर्वचनीय नित्य-किशोरी निकुञ्ज भवन में सबसे ऊपर विराजमान हैं ।।४६।।

कुञ्जान्तरे किमपि जातरसोत्सवायाः
श्रुत्वा तदालपितसिञ्जितमिश्रितानि ।
श्रीराधिके ! तव रहः परिचारिकाहं
द्वारस्थिता रसह्रदे पतिता कदा स्याम् ।।४७।।

हे श्री राधे ! कुञ्ज भवन में किसी अनिर्वचनीय विहार रसोत्सव के समय वहाँ के वार्तालाप एवं आभरणों की झङ्कार की मिश्रित ध्वनि सुन करके कुञ्ज द्वार पर स्थित मैं आपकी एकान्त सेविका कब रस सरोवर में डूब जाऊँगी ।।४७।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वीणां करे मधुमतीं मधुरस्वरां ता-
माधायनागर-शिरोमणिभाव-लीलाम् ।
गायन्त्यहो दिनमपारमिवाश्रु-वर्षै-
र्दुःखान्नयन्त्यहह सा हृदि मेऽस्तु राधा ॥४८॥

आश्चर्य है ! मधुर स्वरों वाली उस मधुमती नाम की वीणा को हाथ में लेकर नागर, श्री लालजी की भावपूर्ण लीलाओं को गाती हुई, अहो ! अश्रुओं की वर्षा से पार रहित मानों दिन को बिताती हुई, वे श्री राधाजी मेरे हृदय में विराजमान हों ॥४८॥

अन्योन्यहासपरिहासविलास केली
वैचित्र्यजृम्भितमहारसवैभवेन ।
वृन्दावने विलसतापहृतं विदग्ध-
द्वन्द्वेन केनचिदहो हृदयं मदीयम् ॥४९॥

आश्चर्य है ! परस्पर के विनोद युक्त विहारमयी क्रीड़ा की विचित्रता से प्रकटित-अति उज्ज्वल रस के चमत्कार से श्री वृन्दावन में विलास करने वाले किसी अनिर्वचनीय युगलरसिक द्वारा मेरा हृदय अपहरण कर लिया गया है ॥४९॥

महाप्रेमोन्मीलन्नवरससुधासिन्धुलहरी
परीवाहैर्विश्वं स्नपयदिव नेत्रान्तनटनैः
तडिन्मालागौरं किमपि नवकैशोरमधुरं
पुरन्ध्रीणां चूडाभरणनवरत्नं विजयते ॥५०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिरछी चितवन के नर्त्तन से, उज्ज्वल प्रेम द्वारा विकसित होते हुए नूतन रसामृत सागर के तरङ्गों की बाढ़ से विश्व को मानो स्नान कराने वाला अनिर्वचनीय विद्युत् पंक्ति के समान उज्ज्वल नूतन किशोर वय से मधुर व्रजनागरियों के चूड़ा-भूषण का नवीन रत्न श्री राधा सर्वोत्कर्ष से विराजमान हैं ॥५०॥

अमन्दप्रेमांकश्लथसकलनिर्बन्धहृदयं
दयापारं दिव्यच्छविमधुरलावण्यललितम् ।
अलक्ष्यं राधाख्यं निखिलनिगमैरप्यतितरां
रसाम्भोधेःसारं किमपिसुकुमारं विजयते ॥ ५१ ॥

तीव्र प्रेम की छाप से जिसके समस्त हृदयके मान आदि बन्धन विगलित हो गये हैं तथा अलौकिक कान्ति से युक्त मधुर लावण्य से सुन्दर एवं अपार दयालु समस्त वेदों से भी अत्यन्त अलक्षित रस सागर के सार स्वरूप किसी अनिर्वचनीय राधा नामक सुकुमार तत्व की जय हो ॥५१॥

दुकूलं बिभ्राणामथ कुचतटे कंचुकपटं
प्रसादं स्वामिन्याः स्वकरतलदत्तं प्रणयतः ।
स्थितां नित्यं पार्श्वे विविधपरिचर्य्यैकचतुरां
किशोरीमात्मानं किमिह सुकुमारीं नु कलये ॥ ५२॥

अपनी श्री स्वामिनीजी के द्वारा प्रेम पूर्वक अपने ही कर-कमल से दी हुई प्रसादी ओढ़नी सिर पर तथा वक्षस्थल पर चोली को धारण करती हुई, अनेक प्रकार की सेवा में एक मात्र निपुण नित्य समीपही स्थित क्या इस जीवन में मैं अपने आपको सुकुमारी किशोरी रूप में निश्चय से अनुभव करूंगी ? ॥५२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विचिन्वन्ती केशान् क्वचन करजैः कंचुक पटं
क्व चाप्यामुञ्चन्ती कुचकनकदीव्यत्कलशयोः
सुगुल्फे न्यस्यन्ती क्वचन मणिमञ्जीरयुगलं
कदा स्यां श्रीराधे तव सुपरिचारिण्यहमहो ॥५३॥

आश्चर्य है, हे श्रीराधे ! कभी तो आपके केशों को नख-प्रान्त द्वारा सुलझाती हुई और कभो फिर स्वर्ण कलश समान देदीप्यमान वक्ष पर चोली को पहिनाती हुई, कभी फिर मणिजटित युगल नूपुरों को सुन्दर टखनों पर बाँधती हुई, मैं क्या कभी आपकी सुन्दर सेविका बन सकूंगी ॥५३॥

अतिस्नेहादुच्चैरपि च हरिनामानि गृणत-
स्तथा सौगन्धाद्यैर्बहुभिरुपचारैश्च यजतः ।
परानन्दं वृन्दावनमनुचरन्तं च दधतो
मनो मे राधायाः पदमृदुलपद्मे निवसतु ॥५४॥

अत्यन्त प्रेम से तथा ऊँचे स्वर से प्यारे लाल के नामों का सङ्कीर्तन करते हुए तथा सुगन्धि पूर्ण बहुत प्रकार की सामग्रियों से पूजन करते हुए और वृन्दावन का अनुसरण करते हुए, परमानन्द को धारण करते हुए, मेरा मन श्रीराधाजी के कोमल पद-कमलोंमें निवास करे ॥५४॥

निजप्राणेश्वर्य्या यदपि दयनीयेयमिति मां
मुहुश्चुम्बत्यालिंगति सुरतमाध्व्या मदयति ।
विचित्रां स्नेहर्द्धिं रचयति तथाप्यद्भुतगते-
स्तवैव श्रीराधे पदरसविलासे मम मनः ॥५५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे श्री राधे ! यह किङ्करी मेरी प्राणेश्वरी की दया की पात्र है ऐसा समझकर प्रियतम मेरा बार बार चुम्बन आलिङ्गन करते हैं तथा सुरत रस माधुरी से मत्त बना देते हैं। विचित्र प्रकारसे स्नेह वृद्धि भी करते हैं, फिर भी अद्भुत प्रभाव वाले आपके ही चरणकमलों के रसमय विलास में मेरा मन रहता है ॥५५॥

प्रीतिं कामपि नाममात्रजनितप्रोद्दामरोमोद्गमां
राधामाधवयोः सदैव भजतोः कौमार एवोज्ज्वलाम्।
वृन्दारण्यनवप्रसूननिचयानानीय कुंजान्तरे
गूढं शैशवखेलनैर्बत कदा कार्य्यो विवाहोत्सवः ॥५६॥

परस्पर नाम मात्र लेने से उत्पन्न हुए अबाध रोमाञ्च से युक्त किसी अनिर्वचनीय उज्ज्वल प्रीतिको निरन्तर निश्चित कुमार अवस्था में ही धारण करने वाले राधामाधव का वृन्दावन के नूतन पुष्प समूह को चयन कर आनन्दपूर्वक बाल्यावस्था के खेल द्वारा गुप्त रूप से विवाह उत्सव मेरे द्वारा कब रचा गया ? ॥५६॥

विपञ्चितसुपञ्चमं रुचिरवेणुना गायता
प्रियेण सहवीणया मधुरगानविद्यानिधिः ।
करीन्द्रवनसम्मिलन्मदकरिण्युदारक्रमा
कदा नु वृषभानुजा मिलतु भानुजारोधसि ॥५७॥

वीणा द्वारा मधुर गायन करने की विद्या में निधान, एवं गजराज से वन में मिलती हुई मतवाली हथिनीके समान मन्द गति वाली वृषभानु कुमारी वीणा में गाये हुए सुन्दर पञ्चम राग को मनोहर वेणु से गाने वाले प्रियतम के साथ क्या कभी श्री यमुना जी के तट पर मिलेंगी ॥५७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सहासवरमोहनाद्भुतविलासरासोत्सवे
विचित्रवरताण्डवश्रमजलार्द्रगण्डस्थलौ ।
कदा नु वरनागरीरसिकशेखरौ तौ मुदा
भजामि पदलालनाल्ललितजीवनं कुर्वती ।।५८।।

परिहास सहित अत्यन्त विचित्र मनोहर क्रीड़ामय रासोत्सव में असाधारण नृत्य द्वारा श्रम जल से भीजे हुए कपोल युगल वाले उन दोनों श्रेष्ठ नागरी तथा रसिक शेखर लालजी के चरण कमलों के सम्वाहन से अपने जीवन को आह्लादित बनाती हुई क्या कभी प्रेम से सेवन करूँगी ? ।।५८।।

वृन्दारण्यनिकुञ्जमञ्जुलगृहेष्वात्मेश्वरींमार्गयन्
हा राधे सविदग्धदर्शितपथं किं यासिनेत्यालपन् ।
कालिन्दीसलिले च तत्कुचतटीकस्तूरिकापंकिले
स्नायं स्नायमहो कुदेहजमलं जह्यां कदा निर्मलः ।।५९।।

आश्चर्य है श्री वृन्दावन के निकुञ्ज रूपी सुन्दर सदन में अपनी स्वामिनी को खोजती हुई मिलने पर हा राधे ! जहाँ रसिक शिरोमणि विराजमान हैं मेरे द्वारा उस निर्दिष्ट पथ पर क्यों नहीं जाती हो, इस प्रकार कहती और उनके वक्षस्थल के मृगमद से मिश्रित श्री यमुनाजी के जल में बार बार स्नान करती हुई, कब कुत्सित देह जन्य मल (कामादि) का त्याग करूंगी और निर्मल बनूंगी ।।५९।।

पादस्पर्शरसोत्सवं प्रणतिभिर्गोविन्दमिन्दीवर-
श्यामंप्रार्थयितुंसुमञ्जुलरहःकुञ्जांश्चसंमार्जितुम् ।
मालाचन्दनगन्धपूररसवत्ताम्बूलसत्पानका-
न्यादातुं च रसैकदायिनि तव प्रेष्या कदा स्यामहम् ।।६०।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे रस की एक मात्र दात्री ! आपको प्रणाम करते समय पाद स्पर्श से रसमय उत्सव सम्पन्न नील-कमल सम श्याम गोविन्द के प्रति प्रार्थना करने के लिए और अत्यन्त मनोहर एकान्त कुञ्ज सदन का मार्जन करने के हेतु और माला चन्दन सुगन्धि से युक्त रसीले ताम्बूल रुचिर पेय पदार्थ लाने के निमित्त मैं कब आपकी किङ्करी बनूंगी ।।६०।।

लावण्यामृतवार्त्तया जगदिदं संप्लावयन्ती शर–
द्राकाचन्द्रमनन्तमेव वदनज्योत्स्नाभिरातन्वती ।
श्रीवृन्दावनकुंजमंजुगृहिणी काप्यस्ति तुच्छामहो
कुर्वाणाखिलसाध्यसाधनकथां दत्वा स्वदास्योत्सवम्।।६१।।

इस जगत् को आभापूर्ण अमृतमयी वाक्चातुरी से सम्यक् मज्जन कराती हुई एवं मुख चन्द्र की चाँदनी से शरत्कालीन पूर्णिमा के चन्द्रमा को अनन्त रूप से विस्तृत करती हुई, आश्चर्य है कि स्वकीय कैङ्कर्य्यरूप उत्सव देकर समस्त साध्य साधनों की चर्चा को अत्यन्त नगण्य करती हुई, कोई अनिर्वचनीय श्रीवृन्दावन कुञ्ज सदनकी मनोज्ञा स्वामिनी विराजमान है ।।६१।।

दृष्टया यत्र क्वचन विहिताम्रेडने नन्दसूनोः
प्रत्याख्यानच्छलत उदितोदारसंकेतदेशा ।
धूर्त्तेन्द्रत्वद्भयमुपगता सा रहो नीपवाटयां
नैका गच्छेत्कितव कृतमित्यादिशेत्कर्हि राधा ।।६२।।

श्रीनन्दलालजी की दृष्टि से जब कभी अनुनय विनय करने पर टालने के बहाने सुखप्रद संकेतदेश को बताने वाली हे कपटी ! हे धूर्त्त राज ! तुम्हारे भय को प्राप्त हुई वह हमारी स्वामिनी एकान्त कदम्ब वाटिका में अकेली नहीं जाएगी, इस प्रकार की वचन रूपी रचना का श्रीराधा कब मुझे आदेश देंगी ।।६२।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा भ्रूनर्त्तनचातुरी निरुपमा सा चारुनेत्राञ्चले
लीलाखेलनचातुरी वरतनोस्तादृग्वचश्चातुरी ।
संकेतागमचातुरी नवनवक्रीडाकलाचातुरी
राधाया जयतात्सखीजनपरीहासोत्सवे चातुरी ॥६३॥

कमनीय कलेवर श्रीराधा की वह उपमा रहित भृकुटी नचाने की कुशलता, वह मनोहर नेत्र प्रान्त की लीलापूर्वक संचालन निपुणता व तैसी ही वचन रचना की बाग्मिता चातुरी, संकेत स्थानमें आगमन की तत्परता, नवीन नवीन क्रीडा विलास की कला (कोक) पूर्ण स्फूर्ति रूप चातुरी, अपनी सखी जन के मध्य में हास परिहास रञ्जन की चातुरी की जय हो ॥६३॥

उन्मीलन्मिथुनानुरागगरिमोदारस्फुरन्माधुरी
धारासारधुरीणदिव्यललितानंगोत्सवैः खेलतोः ।
राधामाधवयोः परं भवतु नश्चित्ते चिरार्त्तिस्पृशोः
कौमारे नवकेलिशिल्पलहरीशिक्षादिदीक्षारसः ॥६४॥

विकसित हुए परस्पर के प्रेम गौरव से उदार रूपेण प्रस्फुटित होती हुई माधुरीकी धाराकी बाढ़में मुख्य अलौकिक प्रेमके उत्सव वश खेलते हुए कुमारावस्था में ही चिरकाल से पीड़ित राधा माधव की नूतन विलास की तरङ्गपूर्ण रचना के शिक्षण आदि रूप समर्पण का रस ही केवल हमारे चित्त में स्थित रहे ॥६४॥

कदा वा खेलन्तौ व्रजनगरवीथीषु हृदयं
हरन्तौ श्रीराधाव्रजपतिकुमारौ सुकृतिनः ।
अकस्मात् कौमारे प्रकटनवकैशोरविभवौ
प्रपश्यन्पूर्णः स्यां रहसि परिहासादिनिरतौ ॥६५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्रजपुर की गलियों में खेलते हुए सहसा कुमारावस्था में ही किशोर अवस्था के वैभव को प्रकट करने वाले एकान्त हास परिहास में निरन्तर लगे हुए एवं किसी भाग्यशाली के मन को चुराते हुए श्री राधा तथा नंदनन्दन को भली भाँति देखता हुआ क्या कभी मैं कृतार्थ होऊंगा ॥६५॥

धम्मिल्लं ते नवपरिमलैरुल्लसत्फुल्ल मल्ली–
मालंभालस्थलमपि लसत्सान्द्रसिन्दूरबिन्दु ।
दीर्घापांगच्छविमनुपमां चारु चन्द्राशु हासं
प्रेमोल्लासं तव तु कुचयोर्द्वन्द्वमन्तः स्मरामि॥६६॥

हे श्री राधे, मैं नूतन व अतिशय सुगन्ध पूर्ण उल्लसित विकसित हुई पुष्पित मल्ली मालाओं से युक्त आपके केश पाश को तथा सघन सिंदूर बिन्दु से शोभित ललाट प्रदेश को, अनुपम कर्णायत नेत्र प्रान्त की छटा को तथा चन्द्र किरण के समान मनोहर हास्य को और प्रेम के उल्लास से भरे आपके कुच युगल को अपने मन में स्मरण करती हूँ ॥६६॥

लक्ष्मीकोटिविलक्ष्यलक्षणलसल्लीलाकिशोरीशतै
राराध्यं व्रजमण्डलेति मधुरं राधाभिधानं परम् ।
ज्योतिः किञ्चन सिञ्चदुज्वलरसप्राग्भावमाविर्भव-
द्राधे चेतसि भूरिभाग्यविभवैः कस्याप्यहो जृम्भते ॥६७॥

आश्चर्य है कोटि कोटि लक्ष्मी मण्डल में लसित होने वाले लक्षणों से विभूषित, लीलामयी शत शत किशोरी गणों से ब्रज मण्डल में आराधन-उपासना योग्य शृङ्गार रस के पूर्वभाव का सिंचन करती हुई, महा मधुर श्रीराधा नामक कोई अनिर्वचनीय दिव्य ज्योति आराधना के प्राकटय से युक्त किसी महापुरुष के चित्त में अतिशय सौभाग्य गौरव से प्रकट होती है ॥६७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तज्जीयान्नवयौवनोदयमहालावण्यलीलामयं
सान्द्रानन्दघनानुरागघटितश्रीमूर्त्तिसम्मोहनम् ।
वृन्दारण्यनिकुञ्ज-केलिललितं काश्मीरगौरच्छवि
श्रीगोविन्द इव व्रजेन्द्रगृहिणी प्रेमैकपात्रं महः ।।६८।।

नूतन कैशोर के उदयसे महा लावण्य कान्ति मयी लीलाओं के स्वरूप वाले सघन आनन्द के निविड़ अनुराग रचित श्री विग्रह लालजी को सम्यक मोहित करने में समर्थ, श्रीवृन्दावन कुञ्ज-सदन की केलि रचना से मधुर श्री गोविन्द की तरह ब्रजेन्द्र गृहिणी यशोदा जी का अद्वितीत प्रीति भाजन, केसर के समान गौर कान्तियुक्त वह तेज सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान हो ।।६८।।

प्रेमानन्दरसैकवारिधिमहाकल्लोलमालाकुला
व्यालोलारुणलोचनाञ्चलचमत्कारेण संचिन्वती ।
किञ्चित् केलिकलामहोत्सवमहो वृन्दाटवीमन्दिरे
नन्दत्यद्भुत्कामवैभवमयीराधा जगन्मोहिनी ।।६९ ।।

प्रेमानन्द प्रेमोत्थित आनन्द रस के एक मात्र सागर की उत्ताल तरङ्गावलीसे युक्तअतिशय चञ्चल रक्तवर्ण नेत्र प्रान्तकी चमत्कारितासे कुछ केलि कलाओं के महान् उत्सव का संचय करती हुई अनिर्वचनीय विचत्रि काम सम्पत्ति स्वरूपा, अखिल भुवनमोहिनी श्रीराधा वृन्दावनके निकुञ्ज मन्दिर में समृद्धि को प्राप्त हो रही हैं ।।६९।।

वृन्दारण्यनिकुंजसीमनि नवप्रेमानुभावभ्रम–
द्भ्रूभंगीलवमोहितव्रजमणिर्भक्तैकचिन्तामणिः ।
सान्द्रानन्दरसामृतस्रवमणिः प्रोद्दामविद्युल्लता
कोटिज्योतिरुदेति कापि रमणी चूडामणिर्मोहिनी ।।७०।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नूतन प्रेम की चेष्टा से चञ्चल, भ्रू विलास के लेशमात्र से व्रज-मणि लालजी को मोहित करने वाली, भक्तों की एकमात्र चिन्तामणि, सघन आनन्द रस के अमृत की निर्झर मणि, निरावरण कोटि २ विद्युत् लताओं के समान दीप्तिशालिनी, कोई अशेष को मोहित करने वाली रमणी वृन्द की शिरोमणि वृन्दावन के निकुञ्ज प्रदेश में प्रकट हो रही है ॥७०॥

लीलापांगतरंगितैरुद्भवन्नेकैकशः कोटिशः
कन्दर्पाः पुरुदर्पटंकृतमहाकोदण्डविस्फारिणः ।
तारुण्यप्रथमप्रवेशसमये यस्या महामाधुरी-
धारानन्तचमत्कृता भवतु नः श्रीराधिकास्वामिनी ॥७१॥

जिनके तरुणावस्थामें प्रारम्भिक प्रवेश करतेविलासमय कटाक्ष पात की तरङ्गावली से एक बार में अखर्व गर्व से टङ्कार करके विशाल चाप को खींचने वाले असंख्य कामदेव उत्पन्न होते रहते हैं महा माधुरी की अनन्त धाराओं से चमत्कारयुक्त वे श्री राधिका हमारी स्वामिनी हों ॥७१॥

यत्पादाम्बुरुहैकरेणुकणिकां मूर्ध्ना निधातुं न हि
प्रापुर्ब्रह्मशिवादयोप्यधिकृतिं गोप्येकभावाश्रया ।
सापिप्रेमसुधारसाम्बुधिनिधीराधापि साधारणी-
भूता कालगतिक्रमेण बलिना हे देव तुभ्यं नमः ॥७२॥

ब्रह्मा शिवादि प्रमुख देव भी जिनके चरण-कमल के एक रज कण को मस्तक पर धारण करने का अधिकार नहीं प्राप्त कर सके. एक मात्र गोपी भाव की आश्रय रूप प्रेमामृत रस सागर की खान, वही श्री राधा जी भी बलवान् काल की गति के हेर फेर से सर्व सुलभ हो गई हैं. हे काल स्वरूप देव आपको नमस्कार है ॥७२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूरे स्निग्धपरम्पराविजयतां दूरे सुहृन्मण्डली
भृत्याः सन्तु विदूरतो व्रजपतेरन्यःप्रसंगः कुतः ।
यत्र श्रीवृषभानुजा कृत रतिः कुञ्जोदरे कामिना,
द्वारस्थाप्रियकिंकरीपरमहं श्रोष्यामि काँचीध्वनिम् ।।७३।।

श्री लाल जी के स्नेही गण दूर से ही अपना गौरव प्रकट करें तथा उनकी सुहृद् स्वजन मण्डली दूर ही विराजी रहें, दास गण भी दूर ही सेवा में तत्पर रहें, औरों की तो चर्चा व्यर्थ है जिस समय श्री वृषभानु कुमारी प्रीतम के साथ निकुञ्ज भवन में रमण कर रही हों. मैं ही केवल द्वार पर नियुक्त प्यारी किङ्करी के रूप में करधनी की ध्वनि को भाग्यबली होने से सुन पाऊँगी ।।७३।।

गौरांगे म्रदिमा स्मिते मधुरिमा नेत्राञ्चले द्राघिमा
वक्षोजे गरिमा तथैव तनिमा मध्ये गतौ मन्दिमा ।
श्रोण्यांच प्रथिमा भ्रुवोः कुटिलिमा बिंबाधरे शोणिमा
श्रीराधे हृदि ते रसेन जडिमा ध्यानेस्तु मे गोचरः ।।७४।।

हे श्री राधे, आपके गौर अङ्गों की मृदुलता मन्द हास्य की माधुरी, नेत्र प्रान्तकी विशालता, उरोजों की गुरुता तथा कटि प्रदेश की कृशता, चाल की मन्दता और नितम्बों को स्थूलता, भृकुटी की वक्रता, अधरों की लालिमा तथा आपके हृदय में रस की जो स्तब्धता है वह मेरे ध्यान का विषय होवै ।।७४।।

प्रातः पीतपटं कदा व्यपनयाम्यन्यांशुकस्यार्पणात्
कुञ्जे विस्मृतकञ्चुकीमपि समानेतुं प्रधावामि वा
बध्नीयां कबरीं युनज्मि गलितां मुक्तावलीमञ्जये
नेत्रे नागरि रंगकैश्चपिदधाम्यंगव्रणं वा कदा ।।७५।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे नागरि ! श्रीराधे प्रातःकाल अन्य वस्त्र नीलाम्बर को धारण करा के पीताम्बर कब उतार दूँगी तथा कुञ्ज में भूली हुई चोली को लाने के लिये कब उतावली से दौड़ जाऊँगी, केशपाशको कब बाँधूँगी, टूटी हुई मुक्तामाला को कब पिरो दूँगी, नेत्रों में कब अञ्जन लगाऊँगी और कस्तूरी सिन्दूर आदि से अङ्गक्षत को कब आच्छादित करूँगी ।।७५।।

यद्वृन्दावनमात्रगोचरमहो यन्नश्रुतीकं शिरो–
प्यारोढुं क्षमते न यच्छिवशुकादीनां तु यद्ध्यानगम् ।
यत्प्रेमामृतमाधुरीरसमयं यन्नित्यकैशोरकं
तद्रूपं परिवेष्टुमेव नयनं लोलायमानं मम ।।७६।।

आश्चर्य है ! जो केवल श्री वृन्दावन में ही सहज प्राप्त है अन्यत्र नहीं और जिसमें उपनिषद् भी प्रवेश करने में समर्थ नहीं हैं, जो शिव शुकादि के भी निरन्तर ध्यान का विषय नहीं हैं, जो प्रेम रूप अमृत माधुरी का रसस्वरूप है तथा जो नित्य किशोरावस्था से सम्पन्न है, उस रूप को ही भली भाँति देखने के लिये मेरे नेत्र चञ्चल व्याकुल हो रहे हैं ।।७६।।

धर्माद्यर्थचतुष्टयं विजयतां किं तद्वृथा वार्तया
सैकान्तेश्वरभक्तियोगपदवी त्वारोपिता मूर्द्धनि ।
यो वृन्दावनसीम्नि कश्चन घनाश्चर्य्यः किशोरीमणि
स्तत्कैंकर्य्यरसामृतादिह परं चित्ते न मे रोचते ।।७७।।

धर्म्मादि पुरुषार्थ चतुष्टय का गौरव भले ही बना रहे उनकी निरर्थक चर्चा से क्या लाभ तथा उस ईश्वर की अव्यभिचारिणी भक्ति योग की पद्धति को भी हम सिर माथे पर चढ़ाते हैं केवल आदर दे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकते हैं-वास्तव में तो जो कोई एक अतिशय आश्चर्य्य से पूर्ण किशोरी गणों की मुख्य वृन्दावन की सीमा में विराजमान है,उसके दासी भाव रूप रसामृत के अतिरिक्त मेरे इस चित्त को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है ।।७७।।

प्रेम्णः सन्मधुरोज्ज्वलस्य हृदयं श्रृंगारलीलाकला
वैचित्री परमावधिर्भगवतः पूज्यैव कापीशता ।
ईशानी च शची महासुखतनुःशक्तिः स्वतन्त्रा परा
श्रीवृन्दावननाथपट्टमहिषी राधैव सेव्या मम ।।७८।।

इस श्लोक में अपने सेव्य श्री राधा का असाधारण लक्षण वर्णन करते हैं—शुद्ध, मधुर, और उज्ज्वल प्रेम का हृदय, शृङ्गार लीला की कलाओंकी विचित्रता, भगवान् की कोई अनिर्वचनीय परम अवाधिभूता, ईशता, ईशानी, इन्द्राणी और महासुख स्वरूपा परम स्वतन्त्र शक्ति यह कुछ मेरे लिये तो श्री वृन्दावन नाथ की पट्टमहिषी श्री राधा ही हैं, जो मेरी एकमात्र सेव्या और आराधनीया हैं ।।७८।।

राधादास्यमपास्य यः प्रयतते गोविन्दसंगाशया
सोयं पूर्णसुधारुचेः परिचयं राकां विना कांक्षति ।
किञ्च श्यामरतिप्रवाहलहरीबीजं न ये तां विदु-
स्ते प्राप्यापि महामृतांबुधिमहो बिंदुं परं प्राप्नुयुः ।।७९।।

जो व्यक्ति श्री राधा कैङ्कर्य्य को त्यागकर श्रीलाल जी के प्रेम की आशा से प्रयत्न—साधन भजन करता है वह व्यक्ति मानों पूर्णिमा की रात्रिके बिना ही पूर्ण चन्द्र का दर्शन चाहता है तथा ऐसेजो व्यक्ति श्यामसुन्दर की रति के प्रवाह रूप तरङ्ग के मूल बीज उन श्रीराधा को नहीं जानते हैं वे व्यक्ति विशाल अमृत सागर को पाकर भी खेद है कि केवल एक बूँद ही प्राप्त कर पाए ।।७९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैशोराद्भुतमाधुरीभरधुरीणांगच्छविं राधिकां
प्रेमोल्लासभराधिकां निरवधि ध्यायन्ति ये तद्धियः ।
त्यक्ताः कर्मभिरात्म नैव भगवद्धर्मेप्यहो निर्ममाः
सर्वाश्चर्य्यगतिं गता रसमयीं तेभ्यो महद्भ्यो नमः ।।८०।।

जो व्यक्ति उन श्री राधा जी में मन बुद्धि लगा कर किशोरावस्था की विचित्र आस्वाद्य मिठास की अधिकता से भरपूर अंग कांति मयी एवं प्रेमोत्कर्ष के गौरव से परिपूर्ण श्रीराधिका जी का निरन्तर ध्यान करते हैं,वे कर्मों द्वारा अपने आप छोड़ दिये जाते हैं और भी आश्चर्य है कि भागवत धर्मों से भी वे ममता हीन होकर रस से सनी सवश्रेष्ठ विस्मय अवस्था को प्राप्त हो चुके हैं। उन महापुरुषों को हमारा नमस्कार है ।।८०।।

लिखन्ति भुजमूलतो न खलु शंखचक्रादिकं
विचित्रहरिमन्दिरं न रचयन्ति भालस्थले ।
लसत्तुलसिमालिकां दधति कण्ठपीठे न वा
गुरोर्भजनविक्रमात् क इह ते महाबुद्धयः ।।८१।।

प्रगाढ़ या गुरुनिष्ठ भजन बल के आधार पर जो लोग भली भाँति भुजाओं पर शङ्खचक्रादिकों के चिह्न नहीं बनाते हैं ललाट पर सुन्दर सुन्दर तिलकादि की रचना नहीं करते हैं ग्रीवामें सुन्दर तुलसी की कण्ठी माला भी धारण नहीं करते हैं इस लोक में वे महा मति कौन हैं ? अर्थात् विरले हैं ।।८१।।

कर्माणि श्रुतिबोधितानि नितरां कुर्वन्तु कुर्वन्तु मा
गूढाश्चर्य्यरसाः स्रगादिविषयान्गृह्णन्तु मुञ्चन्तु वा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैर्वा भावरहस्यपारगमतिः श्रीराधिकाप्रेयसः
किञ्चिज्ज्ञैरनुज्यतां बहिरहो भ्राम्यद्भिरन्यैरपि॥८२॥

निबिड़ अनुपम रस में निमग्न रसिकजन श्रुति प्रतिपादित काम कलाप को करें अथवा न करें, माला चन्दनादि भोगों को ग्रहण करें अथवा त्याग दें, आश्चर्य है !! श्रीराधा कान्त के रहस्य भाव की पारङ्गत मतिवाला व्यक्ति अल्पज्ञ और बहिर्मुख अन्य किन्हीं लोगों द्वारा क्या कभी प्रश्न कुतर्क का विषय हो सकता है ? अर्थात् अंगुली उठाने योग्य नहीं है ॥८२॥

अलं विषयवार्तया नरककोटिबीभत्सया
वृथा श्रुतिकथाश्रमो बत बिभेमि कैवल्यतः ।
परेशभजनोन्मदा यदि शुकादयः किं ततः
परं तु मम राधिकापदरसे मनो मज्जतु ॥८३॥

कोटि कोटि नरकों से भी घृणास्पद भोगों की चर्चा रहने दो. वेद कथाओं में श्रम करना निरर्थक है, हाय हाय एकाकी भाव रूप मोक्ष से तो भय लगता है, यदि शुक सनकादि परमेश्वर के भजन में उन्मत्त हैं तो उससे मुझे क्या लाभ है !! मेरा मन तो केवल श्रीराधा जी के चरण कमल के रस में मज्जन करता रहे ॥८३॥

तत्सौन्दर्यं स च नववयोयौवनश्रीप्रवेशः
सा दृग्भंगी स च रसघनाश्चर्यवक्षोजकुम्भः ।
सोयं बिम्बाधरमधुरिमा तत्स्मितं सा च वाणी
सेयं लीलागतिरपि न विस्मर्यते राधिकायाः ॥८४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री राधिका का वह अद्भुत सौंदर्य्य और वह नूतनावस्था की तारुण्य शोभा का आविर्भाव, वह नेत्र प्रान्त की कुटिलता और वह आश्चर्य मय रस से पूर्ण कुच कलश, वही यह बिम्बफल समान अधर की माधुरी, वह मंदहास तथा वह वाग्विलास और वही यह मतवाली चाल, इनमें से एक भी बात नहीं भुलाई जा सकती है ।।८४।।

यल्लक्ष्मीशुकनारदादिपरमाश्चर्य्यानुरागोत्सवैः
प्राप्तं त्वत्कृपयैव हि व्रजभृतां तत्तत्किशोरीगणैः ।
तत्कैंकर्य्यमनुक्षणाद्भुतरसं प्राप्तुं धृताशे मयि
श्रीराधे नवकुञ्जनागरि कृपादृष्टिं कदा दास्यसि ।।८५।।

नवकुञ्ज ललने श्री राधे ! लक्ष्मी, शुक, नारद आदिकों के लिए परम विस्मय से पूर्ण अनुरागमय उत्सव युक्त व्रज बालाओं में से उन किन्हीं किशोरी गणों को, जो कैङ्कर्य केवल आपकी कृपा से ही प्राप्त हुआ उसी प्रतिक्षण चमत्कारी रसमय कैङ्कर्य को प्राप्त करने के लिए आशा लगाये हुए मुझ पर कब कृपा की दृष्टि करोगी ।।८५।।

लब्ध्वादास्यं तदति कृपया मोहनस्वादितेन
सौन्दर्य्यश्रीपदकमलयोर्लालनैः स्वापितायाः ।
श्रीराधाया मधुरमधुरोच्छिष्टपीयूषसारं
भोजं भोजं नवनवरसानन्दमग्नः कदा स्याम् ।।८६।।

उन श्री प्रिया जी की महती कृपा से श्री मोहन से आस्वादित उनके दास्य को पाकर, सौंदर्य शोभा अतिरेक से भूषित चरणारविन्द के दुलार-संवाहन से शयन कराई हुई श्रीराधिकाजी के मधुरातिमधुर उच्छिष्ट रूप सुधा सार का पुनः पुनः आस्वादन कर मैं कब नित्य-नवीन रसानन्द में डूब जाऊंगी ।।८६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदि स्नेहाद्राधे दिशसि रतिलांपटच्यपदवीं
गतं मे स्वप्रेष्ठं तदपि मम निष्ठां श्रृणु यथा ।
कटाक्षैरालोके स्मितसहचरैर्जातपुलकं
समाश्लिष्याम्युच्चैरथ च रसये त्वत्पदरसम् ॥८७॥

हे श्रीराधे। विहार लम्पटता की कुशलता को प्राप्त आपके अपने प्रियतम को यदि स्वयं स्नेह वश मुझे सोंप दो तो भी मेरी निष्ठा को सुनिये जैसे कि मैं मन्द मुस्कान से युक्त कटाक्ष पात से उन को देखूंगी और पुलकित होने पर अतिगाढ़ आलिङ्गन भी करूंगी इतना होने पर भी आपके ही चरणारविन्द के दास्यरस का आस्वादन करूंगी ॥८७॥

कृष्णः पक्षो नवकुवलयं कृष्णसारस्तमालो
नीलांभोदस्तव रुचिपदं नामरूपैश्च कृष्णा ।
कृष्णे कस्मात्तव विमुखता मोहनश्याममूर्त्ता-
वित्युक्त्वा त्वां प्रहसितमुखीं किन्नु पश्यामि राधे ॥८८॥

हे श्री राधे । जब कृष्ण पक्ष,नील कमल,कृष्ण सार मृग,तमाल तरु,नील नीरद तथा कृष्ण नाम तथा कृष्णवर्ण वाली यमुना,यह सब प्रियतम के नामरूप सादृश्य से आपको परमप्रिय हैं तब सम्मोहनकारी श्याम विग्रह श्रीकृष्ण के प्रति आपकी प्रतिकूलता क्यों है ? असगत है, ऐसा कह कर मैं आपका हास-विभूषित वदना क्या कभी देखूंगी ॥८८॥

लीलापांगतरंगितैरिव दिशो नीलोत्पलश्यामला
दोलायत्कनकाद्रिमंडलमिव व्योम स्तनैस्तन्वतीम् ।
उत्फुल्लस्थलपंकजामिव भुवं रासे पदन्यासतः
श्रीराधामनुधावतीं व्रजकिशोरीणां घटां भावये ॥८९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विलासपूर्ण कटाक्ष की तरङ्गों से दिशाओं को मानों नीलकमल के समान श्यामल आभासित करती हुई और कुचों द्वारा कम्पायमान सुमेरु मण्डल से पूर्ण मानो आकाश को करती हुई रास में पद विन्यास कौशल से पृथ्वी को मानो प्रफुल्लित स्थल कमलमयी तन्वतीम्— बनाती हुई श्रीराधा का अनुगमन करने वाली व्रज किशोरियों की उमड़ती हुई मेघमाला की भावना करता हूँ ।।८६।।

दृशौ त्वयि रसांबुधौ मधुरमीनवद्भ्राम्यतः
स्तनौ त्वयि सुधासरस्यहह चक्रवाकाविव ।
मुखं सुरतरंगिणि त्वयि विकासि हेमांबुजं
मिलंतु मयि राधिके तव कृपातरंगच्छटाः ।।९०।।

हे श्री राधिके ! रस समुद्र के समान आपके इस श्री विग्रह में दोनों नेत्र चञ्चल मीन की तरह कलोल कर रहे हैं, आश्चर्यमय सुधा सरोवर रूप आपके श्री विग्रह में कुच युगल चकवा-चकवी की तरह सुशोभित हैं हे सुरसरिता रूपिणि ! आपके श्रीविग्रह में मुख मानो प्रफुल्लित स्वर्ण कमलवत् शोभित है। आपकी कृपा रूप तरङ्ग-परम्परायें मुझे प्राप्त हों ।।९०।।

कांताढ्याश्चर्यकांताकुलमणिकमलाकोटिकाम्यैकपादां
भोजभ्राजन्नखेंदुच्छविलवविभवा काप्यगम्या किशोरी
उन्मर्य्यादप्रवृद्धप्रणयरसमहांभोधिगंभीरलीला
माधुर्योज्जृम्भितांगीमयिकिमपि कृपारंगमंगीकरोतु।।९१।।

जिनके अनुपम देदीप्यमान नख चन्द्र छटा का लेशमात्र वैभव भी कांति से युक्त आश्चर्य्य रूपी ललना समूह की शिरोमणि रूप कोटि कोटि कमलाओं से वाञ्छनीय है तथा असीम रूप से बढ़े हुए अनुराग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रस के महासागर की रहस्यपूर्ण लीलाओं की माधुरी से प्रफुल्लित अंगों वाली, सब से, ब्रह्मादि देव तथा वेद वेदांगों से अगम्य कोई अनिर्वचनीय किशोरी मुझ पर किसी अपूर्व कृपा रस की वर्षा करें ॥६१॥

कलिंदगिरिनंदिनीपुलिनमालतीमंदिरे
प्रविष्टवनमालिनाललितकेलिलोलीकृते ।
प्रतिक्षणचमत्कृताद्भुतरसैकलीलानिधे
विधेहि मयि राधिके निजकृपातरंगच्छटाम् ॥६२॥

यमुना तट पर मालती लता के कुञ्ज भवन में विराजित वनमाली द्वारा मनोज्ञ विहार में चञ्चल की हुई एवं प्रतिक्षण उद्दीपन को प्राप्त, एकमात्र विचित्र रस लीला की निधान हे श्री राधिके ! मुझ पर अपनी कृपा लहरी को बरसाओ ॥६२॥

यस्यास्ते बत किंकरीषु बहुशश्चाटूनि वृन्दाटवी
कंदर्पः कुरुते तवैव किमपि प्रेप्सुः प्रसादोत्सवम् ।
सांद्रानंदघनानुरागलहरीनिस्यन्दिपादांबुज
द्वन्द्वे श्रीवृषभानुनंदिनि सदा वन्दे तव श्रीपदम् ॥६३॥

घनीभूत आनन्द की निबिड़ अनुराग लहरियों के निर्झर युक्त युग चरण कमल वाली हे वृषभानु कुमारी ! एक मात्र आप के किसी अनिर्वचनीय रासोत्सव रूप प्रसाद के इच्छुक होकर श्रीवृन्दावन के दिव्य मन्मथ श्री लालजी जिन आपकी दासियों की विविध प्रकार से अनुनय-विनय करते रहते हैं ऐसे आपके महिमाशाली चरणों की निरंतर वन्दना करता हूँ ॥६३॥

यज्जापः सकृदेव गोकुलपतेराकर्षकस्तत्क्षणा-
द्यत्र प्रेमवतां समस्तपुरुषार्थेषु स्फुरेत्तुच्छता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यन्नामांकितमन्त्रजापनपरः प्रीत्या स्वयं माधवः
श्रीकृष्णोपि तदद्भुतं स्फुरतु मे राधेति वर्णद्वयम् ।।९४।।

एक बार भी जिसका जाप गोकुलेन्द्र श्रीकृष्ण को उसी क्षण आकर्षक वश करने वाला होता है, जिस में प्रेम करने वालोंको अखिल चतुर्विध पुरुषार्थों के प्रति लघुता प्रतीत होती है, कान्त श्रीलालजी भी आप प्रीति पूर्वक जिस नाम से अङ्कित मंत्र का तत्परता से जप करते हैं, "राधा" ऐसा वह अनुपम अक्षर युगल मेरे हृदय में स्फुरित हो ।।९४।।

कालिंदीतटकुंजमन्दिरगतो योगींद्रवद्यत्पद
ज्योतिर्ध्यानपरः सदा जपति यां प्रेमाश्रुपूर्णो हरिः ।
केनाप्यद्भुतमुल्लसद्रतिरसानन्देन संमोहिता
सा राधेति सदा हृदिस्फुरतु मे विद्यापराद्व्यक्षरा ।।९५।।

यमुना तटवर्ती निकुञ्ज भवन में विराज कर प्रेम के अश्रुओं से भीजे श्रीलालजी शिवादि योगीश्वरों की तरह जिनकी पद ज्योति के ध्यान में तत्पर होकर निरंतर जिनको जपते रहते हैं तथा अनुपम रूप से किसी अनिर्वचनीय उल्लास से परिपूर्ण विहार रस की छकन से सम्मोहन भाव को प्राप्त वह "राधा" यह दो अक्षर वाली वेदातीत विद्या मेरे हृदय में स्फुरित हो ।।९५।।

देवानामथ भक्तमुक्तसुहृदामत्यन्तदूरं च यत्-
प्रेमानन्दरसं महासुखकरं चोच्चारितं प्रेमतः ।
प्रेम्णाकर्णयते जपत्यथ मुदा गायत्यथालिष्वयं
जल्पत्यश्रुमुखो हरिस्तदमृतं राधेति मे जीवनम् ।।९६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो देवताओं के लिए तथा भक्तों-मुक्त पुरुषों और स्वजनों के बहुत ही दूर अप्राप्य हैं, प्रेमानंद के रस से पूर्ण है तथा प्रेम पूर्वक उच्चारण करने पर अतिशय सुखदायक है, तथा अश्रु सिक्त बदन स्वयं यह श्रीलाल जी भी विवश होकर सुनते हैं, जपते हैं और सखियों के मध्य में हर्षित होकर कीर्त्तन करते हैं,वह राधा नाम रूपी अमृत मेरा जीवन प्राण है ॥९६॥

या वाराधयति प्रियं व्रजमणिं प्रौढानुरागोत्सवैः
संसिध्यन्ति यदाश्रयेण हि परं गोविन्दसख्युत्सुकाः
यत्सिद्धिःपरमापदैकरसवत्याराधनात्ते नु सा
श्रीराधाश्रुतिमौलिशेखरलतानाम्नी मम प्रीयताम् ॥९७॥

जो भली भांति प्रगाढ अनुराग के उत्सव से निज प्रियतम ब्रज-मणि को प्रसन्न करती हैं,एक मात्र जिनके आश्रय लेने पर ही श्रीलाल जी के सखी भाव में उत्कण्ठित व्यक्ति अभीष्ट सिद्धि लाभ करते हैं तत्पर व्यक्ति में ही जो सफलता परम अनुपम मधुरोज्ज्वल रसमय रूप से प्रकट होती है ,श्रुति प्रतिपाद्य लालजी के लिये लता रूपिणी अनुपम नाम वाली वे श्रीराधा जी मुझ पर प्रसन्न हों ॥९७॥

गात्रे कोटितड़िच्छवि प्रविततानन्दच्छवि श्रीमुखे
बिंबोष्ठे नवविद्रुमच्छवि करे सत्पल्लवैकच्छविः।
हेमांभोरुहकुड्मलच्छवि कुचद्वन्द्वेऽरविंदेक्षणं
वंदेतन्नवकुञ्जकेलिमधुरं राधाभिधानं महः ॥९८॥

जिनके श्री अंगों में करोड़ों दामिनियों की कांति है, जिनके मुखारविन्द में सुविस्तृत आनन्द (परिपूर्ण चन्द्र) की सुषमा विरा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जित है, पक्व विम्ब फल के समान लाल लाल अधरों में नवीन विद्रुम मणि (मूंगों) की प्रभा है, कर कमलों में नवीन मनोहर कोमल पल्लवों की कांति जगमगा रही है।

जिनके स्तन युगल में स्वर्ण कमल की कलियों की कमनीयता है, उन ही कमल सदृश नेत्र वाले नवीन कुञ्जविहार से मनोहर व मधुर राधा नामक तेज को मैं निरंतर प्रणाम करती हूँ ॥९८॥

मुक्तापंक्तिप्रतिमदशना चारुबिंबाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा नवनवरसावर्तगंभीरनाभिः ।
पीन श्रोणिस्तरुणिमसमुन्मेषलावण्यसिंधु
वैदग्धीनां किमपि हृदयं नागरी पातु राधा ॥९९॥

जिनकी मनोहर दन्तावली शुभ्रं स्वच्छ मोतियों की लड़ी के समान है, सुन्दर विम्बफल के समान अधरोष्ठ हैं, कमर अति पतली है, नूतन नूतन मधुर रस के भंवरें जिनकी गंभीर नाभि में पड़ रही हैं, पीन व स्थूल नितम्ब देश जिनके हैं, ऐसी विकसित यौवना अर्थात् नव यौवन के विकास के कारण जो लावण्य (परम सौन्दर्य) की अपार उदधि है, समस्त चतुर नागरियों में भी वह अनिर्वचनीय सार सर्वस्व नागरी श्री राधा (मेरी) रक्षा करें ॥९९॥

स्निग्धाकुंचितनीलकेशि विदलद्बिंबोष्ठि चंद्रानने
खेलत्खंजनगंजनाक्षि रुचिमन्नासाग्रमुक्ताफले ।
पीनश्रोणि तनूदरि स्तनतटीवृत्तच्छटात्यद्भुते
राधे श्रीभुजवल्लिचारुवलये स्वं रूपमाविष्कुरु ॥१००॥

हे सचिक्कन घुंघराले नील (काले) बालों वाली, विकसित पक्व विम्बफल समान अधरोष्ठों वाली, चन्द्र वदनी, चञ्चलखंजन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पक्षि के नेत्र सौंदर्य के गर्व को लज्जित करने वाले नेत्र वाली, सुन्दर वेसर धारिणी, पीन (भारी) नितम्बिनि, कृशोदरी, स्तन मंडल की वर्तुलाकार छवि से अनुपम शोभा वाली सुशोभित, दोनों हाथों में सुन्दर-सुन्दर वलय धारण करने वाली हे श्रीराधे ! ऐसे अपने अनुपम रूप माधुर्य का दर्शन मुझको प्रदान करो ।।१००।।

लज्जान्तः पटमारचय्य रचितस्मायप्रसूनांजलौ
राधांगे नवरंगधाम्नि ललितप्रस्तावने यौवने ।
श्रोणीहेमवरासने स्मरनृपेणाध्यासिते मोहनं
लीलापाँगविचित्रताँडवकलापाँडित्यमुन्मीलति ।।१०१।।

लज्जा की जवनिका (अन्तःपर)डाल कर मन्दस्मित (मुस्कान) की पुष्पाञ्जलि की रचना द्वारा ललित और रमणीय यौवन की सुन्दर रङ्ग भूमि में (नूतन नाटचरंग भूमि के समान) श्रीराधा जी के श्रीअङ्ग में मदन महीप (राजा) के द्वारा नितम्बरूप उत्तम स्वर्ण सिंहासन पर समस्त को मोहन करने वाली लीला से परिपूर्ण कटाक्ष की अपूर्व तथा ताण्डव-कला नृत्य विद्या के पांडित्य (चातुर्य) का विकास हो रहा है ।।१०१।।

सा लावण्यचमत्कृतिर्नववयोरूपं च तन्मोहनं
तत्तत्केलिकलाविलासलहरी चातुर्यमाश्चर्यभूः ।
नो किंचित्कृतमेव यत्र न नुतिर्नागो न वा संभ्रमो
राधामाधवयोः स कोपिसहजः प्रेमोत्सवः पातु वः ।।१०२।।

श्रीराधा और माधव युगल के लावण्य का चमत्कार, वह नव यौवन, वह मोहन को भी मोहन करने वाला रूप, वह आश्चर्य जनक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विहार कलाओं के विलास तरङ्गों की कुशलता है, और जहाँ किञ्चित मात्र भी कृत्रिमता नहीं है,न स्तुति,अपराध. हीं है और न सन्मान ही है, ऐसा अद्भुत वह राधामाधव का कोई अनिर्वचनीय स्वाभाविक प्रेमोत्सव रसिकजनों की रक्षा करें ॥१०२॥

येषां प्रेक्षां वितरति नवोदारगाढानुरागा
न्मेघश्यामो मधुरमधुरानंदमूर्त्तिर्मुकुन्दः ।
वृन्दाटव्यां सुमहिमचमत्कारकारीण्यहो किं
तानि प्रेक्षेऽद्भुतरसनिधानानि राधापदानि ॥१०३॥

मधुर-मधुर आनन्दमूर्ति मेघश्याम उदार और गाढ़ अनुराग से जिनका दर्शन बाँटते हैं, वृन्दावन में अत्यन्त महिमा युक्त चमत्कार करने वाले और अद्भुत रस के निधान (खजाना) हैं, ऐसे उन श्रीराधा जी के पदचिह्नों को क्या कभी श्री वृन्दावन में मैं देखूँगी ॥१०३॥

बलान्नीत्वा तल्पे किमपि परिरभ्याधरसुधां
निपीय प्रोल्लिख्य प्रखरनखरेण स्तनभरम् ।
ततो नीवीं न्यस्ते रसिकमणिना त्वत्करधृते
कदा कुंजच्छिद्रे भवतु मम राधेनुनयनम् ॥१०४॥

हे श्रीराधे बल पूर्वक कुञ्ज शय्या पर ले जाकर, कुछ रस रीति पूर्वक (आलिगन पूर्वक) अधर का पान करके, प्रखर नख से स्तन मंडल पर क्षत करके, तब रसिक शिरोमणि श्री श्याममुन्दर ने नीवी पर हाथ रक्खा, प्रियाजी ने उनका हाथ अपने हाथ से थाम लिया, अब कौनसा दिन होगा जब (जिस दिन) कुञ्ज के छिद्र में हे राधे मेरे नेत्र होंगे, अर्थात् मैं ऐसा दर्शन प्राप्त करूँगी ॥१०४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करं ते पत्रालिं किमपि कुचयोः कर्त्तुमुचितं,
पदं ते कुंजेषु प्रियमभिसरंत्या अभिसृतौ ।
दृशो कुञ्जच्छिद्रैस्तव निभृतकेलिं कलयितुं,
यदा वीक्षे राधे तदपि भविता किं शुभदिनम् ।।१०५।।

अहो श्री राधे, मेरे लिये ऐसा श्रेयस्कर दिन कब उदय होगा जब स्तन युगल पर कुछ अतिमनोहर पत्रावलि की रचना करने के योग्य अपने हाथ और कुञ्जों में प्रियतम के लिये अभिसार करती हुई आपके उस अभिसरण में मैं अपने चरणों को, कुञ्ज के लतारन्ध्रों से आपके एकान्तिक रहस्यमयी रति क्रीड़ाओं के दर्शनार्थ अपने नयनों को (अपने दिव्य वपु से) जब देखूँगी, क्या कभी मेरा सौभाग्य होगा ।।१०५।।

रहो गोष्ठीं श्रोतुं तव निजविटेंद्रेण ललितां,
करे धृत्वा त्वां वा नवरमणतल्पे घटयितुम् ।
रतामर्दस्रस्तं कचभरमथो संयमयितुं
विदध्याः श्रीराधे मम किमधिकारोत्सवरसम् ।।१०६।।

हे श्रीराधे, अपने रसिक शिरोमणि श्यामसुन्दर के साथ आपकी एकान्तिक रहस्य पूर्ण गोष्ठी (वार्तालाप) सुनने के लिये, आपके कर कमल को पकड़ कर आपको नवरमण प्यारे (श्यामसुन्दर) को मृदु शय्या पर लेजाने के लिये, रतिकेलि (सुरतकालीन) संघर्ष (छीना झपटी) में बिखर गये केशपाश को पुनः बाँधने के लिये अधिकारोत्सव रस क्या मुझको अपनी विश्वस्त प्रिय किंकरी कब बनावोगी प्रार्थनात्मक भाव है ।।१०६।।

वृन्दाटव्यां नवनवरसानंदपुञ्जे निकुञ्जे,
गुञ्जद्भृंगीकुलमुखरिते मंजुमंजुप्रहासैः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्योन्यक्षेपणनिचयनप्राप्तसंगोपनाद्यैः
क्रीडज्जीयाद्रसिकमिथुनं क्लृप्तकेलीकदम्बम् ।।१०७।।

वृन्दावन में नवीन रस आनन्द की राशि एवं गूंजती हुई भँवरियों से मुखरित, नूतनाति नूतन रसमय प्रेमानन्द से परिपूर्ण निकुञ्ज में मधुराति मधुर परिहास के द्वारा एक दूसरे की तरफ फेंकना, आई हुई गेंद को झेलना, निचयन रखलेना, छिपाकर रखलेना (संगोपनाद्यैः) आदि क्रियाओं द्वारा रसपूर्ण खेलों को खेलते हुए हमारे युगल सरकार की जय हो । अर्थात् इस प्रकार लीला करते हुये रसिक दम्पति सदा ही हमारे हृदय मन्दिर में विराज रहे हैं यह भाव है ।।१०७।।

रूपं शारदचंद्रकोटिवदने धम्मिल्लमल्लीस्रजाः
मामोदैर्विकलीकृतालिपटले राधे कदा तेऽद्भुतम् ।
ग्रैवेयोज्ज्वलकंबुकंठिमृदुदोर्वल्लीचलत्कंकणे
वीक्षे पट्टदुकूलवासिनि रणन्मंजीरपादांबुजे ।।१०८।।

ऊपर के श्लोकमें वर्णित क्रीड़ा करती हुई हमारी लाड़िली श्री राधा में सौन्दर्य कैसा मुखरित है उस स्वरूप की छटा का वर्णन इस श्लोक में किया है—

शरद कालीन पूर्णिमा से कोटि चन्द्र सम जिनका मुखारविन्द है, जिनके सिर के केशपास में गुथित मल्ली पुष्प माला की सुगन्धि से भ्रमरोंके झुण्ड विकल हो रहे हैं, कंठ रत्नजटित हारावली से सुशोभित कंबु कंठ जिनका है, मृदुल भुज लताओं (हाथ) में झनकार शब्दायमान मणि जटित चूड़ियां (वलय) पहिने हुई, रेशमी नील साड़ी (पाटम्बर) धारण किये हुए हैं, चरणों में रुनझुन रुनझुन ध्वनि ध्वनित नूपुर विराजमान हैं, ऐसे सौन्दर्य युक्त अद्भुत सुन्दरि, हे राधे, आपके अनुपम रूप का दर्शन मैं कब करूँगी ।।१०८।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतो भयमितस्त्रपा कुलमितो यशः श्रीरितो
हिनस्त्यखिलश्रृंखलामपि सखीनिवासस्त्वया ।
सगद्गदमुदीरितं सुबहुमोहनाकाँक्षया
कथंकथमयीश्वरि प्रहसितैः कदाम्रेडचसे ।।१०९।।

लाल श्री श्यामसुन्दर अब सखियों के मध्य घिरे हुए हैं। इधर जाने में भय, उधर जाने में लज्जा (संकोच) एक ओर कुल की मर्यादा का भय, दूसरी ओर यश (बड़प्पन का ख्याल है) एवं समस्त लौकिक बाधाओं का भी त्याग कर रहे हैं अर्थात् प्रियतम इन सभी शृंखलाओं को तोड़कर इस प्रकार अतिशय मोहनकारी आकांक्षाओं से युक्त आपके गद्गद वचन सुनकर हे स्वामिनी, यह कैसे है यह कैसे है, इस प्रकार विनोद पूर्वक (परिहास पूर्वक) मैं आप से बार बार कब पूछूँगी ।।१०९।।

श्यामे चाटुरुतानि कुर्वति सहालापान्प्रणेत्री मया
गृह्णाने च दुकूलपल्लवमहो हुंकृत्य मां द्रक्ष्यसि ।
बिभ्राणे भुजवल्लिमुल्लसितया रोमस्रजालंकृतां
दृष्ट्वात्वां रसलीनमूर्त्तिमथकिं पश्यामि हास्यं ततः।।११०।।

हे प्रणयिनि, आपके प्रियतम श्यामसुन्दर तो आपकी खुशामद बड़े चाटुकारी काकु वाणी से कर रहे हों फिर भी आप मुझ से वार्तालाप कर रही हो, यह आश्चर्य है कि फिर भी प्रियतम आपकी साड़ी का पल्ला (छोर) पकड़ ही लें तब आप हुंकार करती हुई कुछ रोष भरी दृष्टि से मेरी ओर देखें, फिर भी प्रियतम आपकी बाँह (भुजलता) को अपने हाथ से पकड़ ही लें । तब आप आनन्द में उल्लसित होकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकसित रोमावलि से अलंकृत (सुशोभित) हो उठें। क्या मैं आप की ऐसी रस निमग्न मूर्ति (स्वरूप) को देखकर बाद में आपके हास्य (हंसती हुई) को देखूंगी । अर्थात् यह हास्य भीतरी प्रसन्नता व आनन्द का द्योतक है ॥११०॥

अहो रसिकशेखरः स्फुरति कोपि वृन्दावने
निकुंजनवनागरीकुचकिशोरकेलिप्रियः ।
करोतु स कृपां सखीप्रकटपूर्णनत्युत्सवो
निजप्रियतमापदे रसमये ददातु स्थितिम् ॥१११॥

प्रियाजी के श्री चरण प्राप्ति की प्रार्थना लाल से करते हैं। अहो (आश्चर्य) सुन्दर सुन्दर नवीन कुञ्ज में विराजित श्रीनव नागरी (सदा किशोरावस्था में ही विराजमान) श्री प्राण प्यारी राधाजी के नव यौवनावस्थाद्भुत नव कुच कमलोंकी किशोर केलि (विनोद सुख)ही जिन्हें प्रिय है और प्यारी जी का मान मनाने के लिये सखियों के प्रति निःसंकोच और पूर्ण विनय पूर्वक (खुशामत करते हुए) विनय करने में हर्ष मानते हैं, ऐसे रसिक शिरोमणि श्यामसुन्दर श्री वृन्दावन में सदा स्फुरित (विराजमान), वे ही मुझ पर कृपा कर अपनी प्रियतमा श्रीराधा जी के रसमय चरण कमलों में रसमय (कैंकर्य) का स्थान प्रदान करें ॥१११॥

विचित्रवरभूषणोज्ज्वलदुकूलसत्कंचुकैः
सखीभिरतिभूषिता तिलकगंधमाल्यैरपि ।
स्वयं च सकलाकलासु कुशलीकृता नः कदा
सुरासमधुरोत्सवे किमपि वेशयेत्स्वामिनी ॥११२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुरास मधुरोत्सव * में प्रवेशाधिकार प्राप्त करने की याचना सखियाँ सुरास मधुरोत्सवोचित वेश धारण कराती हैं अर्थात् सखियां इस समय (सुरास मधुरोत्सव के योग्य)प्रियाजी को विचित्र एवं सुन्दराति सुन्दर आभूषण, उज्ज्वल दुकूल, अति मनोहर कंचुकी, मणि जटित तिलक, चन्दन,अतर,पुष्प और रत्नों के हार आदि से सज्जित किया है, और श्री प्रियाजी ने ही हम सखियों को सम्पूर्ण विद्या और कला चातुरी की शिक्षा देकर निपुण बनाई है,वह हमारी स्वामिनी श्री राधा जो इस सुरास मधुरोत्सव में प्रवेश की आज्ञा प्रदान कब करेंगी ।।११२।।

कदा सुमणिकिंकिणीवलयनूपुरप्रोल्लस-
न्महामधुरमण्डलाद्भुतविलासरासोत्सवे ।
अपि प्रणयिनो बृहद्भुजगृहीतकंठ्यो वयं
परं निजरसेश्वरीचरणलक्ष्म वीक्षामहे ।।११३।।

रास में श्री श्यामसुन्दर सखियों के भी हस्त ग्रहण कर नृत्य करते हैं किन्तु सहचरिगण तो श्रीप्रिया किङ्करी (राधाकिङ्करी) अनन्या हैं,अतः श्रीप्यारे के साथ मिल कर नृत्य करने के अलभ्य सुख को अपनी स्वामिनी की चरण सेवा से कम मानती हैं।इसी भाव का दर्शन इस श्लोक में हुआ है यह भाव है।

---

* निकुञ्ज में अनन्त प्रकारके उत्सवों होते हैं उन उत्सव में रासोत्सव भी अनेक हैं उन रासोत्सवों में सुरास मधुरोत्सव अद्भुत रासोत्सव आदि विविध प्रकार के रासोत्सव श्रीराधा सुधानिधि में वर्णित हैं ।

इस विषय को राधा सुधानिधि निकुञ्जलीलायुक्त भावनाओं का चिन्तन ग्रन्थ के छठे प्रकरण में विस्तृत रूप से लिखा है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह कौन सा दिन होगा जब प्यारे श्यामसुन्दर के आजानु बाहु विशाल भुजाओंसे गृहीत कण्ठों वाली होती हुई भी हम सुन्दर मणियाँ धारण करेंगी और घुँघरियाँ, चूड़ियां, (कङ्कण) और पायल (नूपुर) से सुशोभित महा मधुर मण्डल में हो रहे अद्‌भुत विलास युक्त रास के (सुरास मधुरोत्सव) उत्सव में हम तो केवल अपनी स्वामिनी श्री राधा जी के चरण चिन्हों को ही देखा करेंगी (हमारा महोत्सव और सुख तो स्वामिनी जी की चरण सेवा ही में है)यह भाव है ॥११३॥

यद्गोविंदकथासुधारसह्रदे चेतो मया जृम्भितं
यद्वा तद्‌गुणकीर्तनार्चनविभूषाद्यैर्दिनं प्रापितम् ।
यद्यत्प्रीतिरकारि तत्प्रियजनेष्वात्यंतिकी तेन मे
गोपेंद्रात्मजजीवनप्रणयिनी श्रीराधिका तुष्यतु ॥११४॥

यदि मैंने श्रीगोविंद प्रभु की कथा सुधा रस के सागर में अपने निर्मल चित्त को डुबाया हो, अथवा उनके गुण गान,पूजन, शृङ्गार सेवा आदिमें जो अपना समय यापन किया है, अथवा उनके प्रियभक्तों में अतिशय वृद्धि को प्राप्त हुई जोकुछ भी प्रीति की है,उन सब सत्कर्म साधनोंके फल स्वरूप गोप राजकुमार श्रीनन्दलालजीकी प्राणदात्री श्री राधा जी ही मुझ पर प्रसन्न हों ॥११४॥

रहो दास्यं तस्याः किमपि वृषभानोर्ब्रजवरी-
यसः पुत्र्याः पूर्णप्रणयरसमूर्त्तेर्यदि लभे ।
तदा नः किं धर्म्मैः किमु सुरगणैः किं च विधिना
किमीशेन श्यामप्रियमिलनयत्नैरपि च किम् ॥११५॥

इस ब्रज मंडल के राजा (मुखिया) श्रीवृषभानुराय पूर्ण प्रेम-रस की प्रतिमा अति प्रिय पुत्री श्री कीर्ति कुंअरि के कोई अनिर्वच-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नीय रहस्यमय कैंकर्य की प्राप्ति हो जाय तो फिर हमें धर्म से, देवगणों से, ब्रह्माजी और भोलानाथ श्री शङ्कर जी से क्या प्रयोजन अरे ये तो है सो है किन्तु खास श्यामसुन्दर के प्रिय समागम के लिये भी नाना प्रकार की चेष्टा भी करने से क्या मतलब है अर्थात् वे तो सहज ही प्राप्त हो ही जायेंगे, क्योंकि वे तो निरन्तर प्यारी जी के साथ ही रहते हैं क्षण भर भी जुदा नहीं रहते, यह भाव है ॥११५॥

चंद्रास्ये हरिणाक्षि देवि सुनसे शोणाधरे सुस्मिते
चिल्लक्ष्मीभुजवल्लि कम्बुरुचिरग्रीवे गिरीन्द्रस्तनि ।
भज्जन्मध्यबृहन्नितंबकदलीखंडोरुपादाम्बुज-
प्रोन्मीलन्नखचंद्रमंडलि कदा राधे मया राध्यसे ॥११६॥

हे चन्द्रमुखि ! हे मृगनयनि ! देवि ! सुन्दरनासिके ! रक्ताधरे ! हंसमुखि ! दिव्य शोभा युक्त भुज लते ! शुभ्र शंख कण्ठि ! शैलेंद्र कुच मंडले ! कृशोदरि स्थूल नितम्बे! कदली खंडोपम जघने ! समुल्लसित चरण कमल नख चन्द्र दीपिते ! हे श्रीराधे ! मैं कब आपकी आराधना करूंगी ? ॥११६॥

राधापादसरोजभक्तिमचलामुद्वीक्ष्य निष्कैतवां
प्रीतः स्वं भजतोपि निर्भरमहाप्रेम्णाधिकं सर्वशः ।
आलिंगत्यथ चुम्बति स्ववदनात्ताम्बूलमास्येर्पयेत्
कण्ठे स्वां वनमालिकामपि मम न्यस्येत्कदा मोहनः॥११७॥

श्री लाल जी,श्रीराधा चरण कमल में मेरी भक्ति को निष्कपट एवं निश्चल देख कर,अपने निज भक्त से भी मुझ पर अधिक प्रसन्न हो कर,सब प्रकार से अत्यधिक प्रकट प्रेम से मेरा आलिङ्गन तथा चुम्बन करेंगे, अपने मुख से मेरे मुख में ताम्बूल अर्पण करेंगे और मेरे कण्ठ में कब अपनी वन माला भी डालेंगे ॥११७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लावण्यं परमाद्भुतं रतिकलाचातुर्यमत्यद्भुतं
कांतिः कापि महाद्भुता वरतनोर्लीलागतिश्चाद्भुता
दृग्भंगी पुनरद्भुताद्भुततमा यस्याः स्मितं चाद्भुतं
सा राधाद्भुतमूर्त्तिरद्भुतरसं दास्यं कदा दास्यति ।।११८।।

जिनके कमनीय श्रीअङ्ग में झलकता हुआ लावण्य परम अद्भुत है, रति कला की चातुरी अति अद्भुत है, कोई दीप्ति महा अद्भुत है और लीला पूर्ण गति चलन भी अद्भुत है, तथा नेत्रों की कुटिलता अद्भुतता की पराकाष्ठा है एवं मन्द हसन अद्भुतता की विग्रह वह श्री राधा जी अद्भुत रस का कैंकर्य्य मुझे कब प्रदान करेंगी ।।११८।।

भ्रमद्भ्रुकुटिसुन्दरं स्फुरितचारुबिंबाधरं
ग्रहे मधुरहुंकृतं प्रणयकेलिकोपाकुलम् ।
महारसिकमौलिना सभयकौतुकं वीक्षितं
स्मरामि तव राधिके रतिकलासुखं श्रीमुखम् ।।११९।।

हे श्रीराधिके ! लाल जी द्वारा पकड़े जाने पर नर्तनशील भृकुटी से मनोहर, कम्पायमान (फड़कते) विम्बाफल समान सुन्दर ओष्ठ वाले मधुर हुंकार पूर्ण प्रेम विलासमय कोप से व्याप्त महा रसिक शेखर द्वारा भय एवं कुतूहल पूर्वक देखे गये आपके रति कला के प्रहर्ष से पूर्ण शोभाशाली मुख को मैं स्मरण करता हूँ ।।११९।।

उन्मीलन्मुकुटच्छटापरिलसद्दिक्चक्रवालं स्फुर-
त्केयूरांगदहारकंकणघटानिर्द्धूतरत्नच्छवि ।
श्रोणीमंडलकिंकिणीकलरवं मंजीरमंजुध्वनिं
श्रीमत्पादसरोरुहं भज मनो राधाभिधानं महः ।।१२०।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे मेरे मन ! प्रकाशमान मुकुट की कांति से प्रदीप्त दिशामंडल वाले चमकते हुए केयूर अङ्गद हार तथा कङ्कण समूह से रत्न प्रभा को तिरस्कृत करने वाले नितम्ब प्रदेशमें भ्राजमान किङ्किणी की मधुर झङ्कार से युक्त नूपुरों के मनोहर नाद युक्त शोभा सम्पन्न चरण कमल विशिष्ट श्री राधा नामक तेज का भजन कर ॥१२०॥

श्यामामंडलमौलिमंडनमणिः श्यामानुरागस्फुर–
द्रोमोद्भेदविभाविताकृतिरहो काश्मीरगौरच्छविः ।
सातीवोन्मदकामकेलितरला मां पातु मंदस्मिता
मंदारद्रुमकुंजमन्दिरगता गोविंदपट्टेश्वरी ॥१२१॥

अहह तरुणीगण की शिरोभूषण मणि, लालजी के अनुराग के कारण प्रकट हुए रोमाञ्च द्वारा विशिष्ट भाव युक्त मूर्ति स्वरूपा, केशर समान गौर कान्ति सम्पन्न, उत्कृष्ट मदमत्त अनंग क्रीड़ा से चञ्चल कल्पतरु के निकुञ्ज मन्दिरमें विराजमान मन्द मुस्कान वाली, वे गोविंद लालजी की सिंहासनासीन स्वामिनी मेरी रक्षा करें ॥१२१॥

उपास्यचरणांबुजे व्रजभृतां किशोरीगणै–
र्महद्भिरपि पूरुषैरपरिभाव्यभावोत्सवे ।
अगाधरसधामनि स्वपदपद्म सेवाविधौ
विधेहि मधुरोज्ज्वलामिव कृतिं ममाधीश्वरि ॥१२२॥

व्रजवासियों की किशोरियों से सेवनीय चरण कमले ! महान् भागवत पुरुषों द्वारा अगम्यभाव मय उत्सव स्वरूपे ! हे स्वामिनी ! अगाध रस के सदन अपने चरण कमल की आराधना के विधान प्रबंन्ध में मेरे लिये उज्ज्वल रस पूर्ण आज्ञा रूप कृति का विधान करो अर्थात् अधिकार दो ॥१२२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आनम्राननचंद्रमीरितदृगापांगच्छटामंथरं
किंचिद्दर्शिशिरोवगुण्ठनपटं लीलाविलासावधिम् ।
उन्नीयालकमंजरीः कररुहैरालक्ष्य सन्नागर
स्यांगेंगं तव राधिके सचकितालोकं कदा लोकये ।।१२३।।

हे श्रीराधिके ! नागर शिरोमणि के अङ्ग में आपके अंगों को सटा हुआ देखकर, जब कि मुख कछुक नत हो, नेत्र प्रान्त की छटा कुछ शिथिल हो, तथा शिर का घूंघट नाम मात्र ही हो, जो लीला पूर्ण विलास की अवधि हो, अपने नखों से अलकावलि को उठाकर आपकी प्रियतम के प्रति चकित भावपूर्ण चितवन कब देखूंगी ।।१२३।।

राकाचंद्रो वराको यदनुपमरसानंदकंदाननेंदो
स्तत्तादृक्चंद्रिकायाअपिकिमपिकलामात्रकस्याणुतोपि
यस्याः शोणाधरश्रीविधृतनवसुधामाधुरीसारसिंधुः
सा राधाकामबाधाविधुरमधुपतिप्राणदाप्रीयतां नः।।१२४।।

जिनके अनुपम रसस्निग्ध आनन्द कन्द मुख चन्द्र की प्रसिद्ध, उस प्रकार की चन्द्रिका की किंचित् अनिर्वचनीय कला लेश के एक अणु से भी पूर्णिमा का चन्द्र अत्यन्त तुच्छ है तथा जिनके रक्ताधर की शोभा में नूतन सुधा माधुरी का सार सिन्धु स्थित है मनसिज बाधा से व्याकुल श्रीलाल जी को प्राण जीवन देने वाली वे श्रीराधाजी हम पर प्रसन्न हों ।।१२४।।

राकानेकविचित्रचंद्र उदितः प्रेमामृतज्योतिषां
वीचीभिः परिपूरयेदगणितब्रह्मांडकोटिं यदि ।
वृन्दारण्यनिकुञ्जसीमनि तदाभासः परं लक्ष्यते
भावेनैव यदा तदैव तुलये राधे तव श्रीमुखम् ।।१२५।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे श्री राधे ! यदि पूर्णिमा का अनेक विचित्र रूप वाला चन्द्र उदित होकर, प्रेम सुधा के प्रकाश की किरणों द्वारा ब्रह्माण्ड की श्रेणी को परिपूर्ण कर दे तथा जिस समय मैं आपके श्रीमुख की अन्तर भावना से उपर्युक्त चन्द्र से तुलना करने लगूं तब श्री वृन्दावन के निकुञ्ज प्रदेश में केवल वह पूर्वोक्त चन्द्र का तो आभास ही मुझे लक्षित होता है ॥१२५॥

कालिंदीकूलकल्पद्रुमतलनिलयप्रोल्लसत्केलिकन्दा
वृन्दाटव्यां सदैव प्रकटतररहोवल्लवीभावभव्या ।
भक्तानां हृत्सरोजे मधुररससुधास्यंदिपादारविन्दा
सांद्रानंदाकृतिर्नः स्फुरतु नवनवप्रेमलक्ष्मीरमंदा ॥१२६॥

श्री यमुना जी के तट पर कल्पतरु के नीचे आवास में, उल्लास मय क्रीड़ा सुख को देने वाली तथा सर्वकाल वृन्दावन में अतिशय प्रसिद्ध रहस्य पूर्ण गोपी भाव से गौरवान्वित, भक्तों के हृदय कमल में मधुर रसामृत स्रावी चरण कमल वाली, सघन आनन्द की मूर्त्ति, सर्वोत्कृष्ट नूतनातिनूतन प्रेम की संपत्ति हमारे चित्त में प्रकट हो ॥१२६॥

शुद्धप्रेमैकलीलानिधिरहह महातंकमंकस्थिते च
प्रेष्ठे बिभ्रत्यदभ्रस्फुरदतुलकृपास्नेहमाधुर्य मूर्त्तिः ।
प्राणालीकोटिनीराजितपदसुषमामाधुरी माधवेन
श्रीराधामामगाधामृतरसभरिते कर्हिदास्येभिषिंचेत् ॥१२७॥

आश्चर्य है ! विशुद्ध प्रेम की एक मात्र लीला की निधान तथा प्रियतम के अङ्क में विराजित होने पर भी महाभय को धारण करती हुई या प्राप्त अत्यधिक प्रकाशमान अनुपम कृपा स्नेह माधुरी की मूर्त्ति श्री लाल जी द्वारा कोटि कोटि प्राण मालाओं से न्यौछावर की हुई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चरण की अतिशय शोभा माधुरीसे पूर्ण श्रीराधा अगाध सुधारस परिपूर्ण अपने कैंकर्य्य में मुझे कब अभिषिक्त करेंगी ।।१२७।।

वृन्दारण्यनिकुञ्जसीमसु सदा स्वानंगरंगोत्सवै-
र्माद्यत्यद्भुतमाधवाधरसुधामाध्वीकसंस्वादनैः ।
गोविंदप्रियवर्गदुर्गमसखीवृन्दैरनालक्षिता
दास्यं दास्यति मे कदा नु कृपया वृन्दावनाधीश्वरी।।१२८।।

नित्य श्री वृन्दावन के निकुञ्ज प्रदेश में अपने प्रेम विलास के उत्सव पूर्ण विचित्र एवं श्री लाल जी के अधरामृत सुधा के सम्यक् आस्वादन से जो उन्मादित हो रही हैं, गोविन्द श्रीलालजी के परिकर समूह से दुर्ज्ञेय सखी गणों से अलक्षित, श्री वृन्दावन की एक मात्र स्वामिनी वे क्या कभी कृपा करके मुझे अपना कैङ्कर्य प्रदान करेंगी ।।१२८।।

मल्लीदामनिबद्धचारुकबरं सिंदूररेखोल्लसत्
सीमन्तं नवरत्नचित्रतिलकं गंडोल्लसत्कुण्डलम् ।
निष्कग्रीवमुदारहारमरुणं बिभ्रद्दुकूलं नवं
विद्युत्कोटिनिभं स्मरोत्सवमयं राधाख्यमीक्षे महः।।१२९।।

मालती मालाओं से गुम्फित सुन्दर केश,सिन्दूर माँग से शोभायमान सीमन्त (ललाट),विशिष्ट नवीन रत्न खचित विचित्र तिलक सम्पन्न कपोलों पर चमचमाते कुण्डल एवं ग्रीवा में स्वर्ण जटित पदिक, लम्बायमान हार धारण किये हुए, अरुण नूतन परिधान युक्त, कोटि कोटि विद्युत् आभा के समान, प्रेमोत्सव, रूप श्रीराधा नामक ज्योति को मैं अवलोकन करती हूँ ।।१२९।।

प्रेमोल्लासैकसीमा परमरसचमत्कारवैचित्र्यसीमा
सौंदर्यस्यैकसीमा किमपि नववयोरूपलावण्यसीमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लीलामाधुर्यसीमा निजजनपरमौदार्यवात्सल्यसीमा
साराधासौख्यसीमाजयतिरतिकलाकेलिमाधुर्यसीमा ।।१३०।।

प्रेम के विलासोत्कर्ष की एकमात्र अवधि, चमत्कार पूर्ण परम रस शृङ्गार की अनुपमेय(अवधि)पराकाष्ठा,अखिल सुन्दरता की परावधि,अनिर्वचनोय नवीनवय सम्पन्न रूप लावण्य की अवधि, मधुरातिमधुर लीला के स्रोत की अवधि,अपने आश्रितों पर परम उदारता पूर्ण वात्सल्य भाव की सीमा, सुख की परम अवधि , सुरत क्रीड़ा जनित माधुरी की सीमा, ऐसी वह श्री राधा जी सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान हैं ।।१३०।।

यस्यास्तत्सुकुमारसुन्दरपदोन्मीलन्नखेंदुच्छटा—
लावण्यैकलवोपजीविसकलश्यामामणीमंडलम् ।
शुद्धप्रेमविलासमूर्तिरधिकोन्मीलन्महामाधुरी
धारासारधुरीणकेलिविभवा साराधिका मे गतिः ।।१३१।।

जिनके उस सुकुमार मनोहर चरण की प्रकाशमान नख चन्द्र कान्ति लावण्य के एक लेश मात्र से जीवन प्राप्त करने वाला समस्त व्रज रमणी मणि गण हैं, निर्मल प्रेम केलि की विग्रह एवं अतिशय रूप से विकसित महा माधुरी धारा सम्पातकी मुख्य क्रीडा सम्पत्ति से युक्त वे श्रीराधिका जी मेरी गति आश्रय हैं ।।१३१।।

कलिंदगिरिनंदिनीसलिलबिंदुसंदोहभृन्-
मृदुद्गतिरतिश्रमं मिथुनमद्भुतक्रीडया ।
अमन्दरसतुन्दिल भ्रमरवृन्दवृन्दाटवी
निकुञ्जवरमन्दिरे किमपि सुन्दरं नंदति ।।१३२।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधिक रस पान से पुष्ट भ्रमर समूह से भूषित वृन्दावन सुन्दर निकुञ्ज भवन में किञ्चित् उत्पन्न रति श्रम को प्राप्त एवं वायु द्वारा समानीत श्री यमुना जी के जल सीकर समूह को धारण करने वाला कोई अनिर्वचनीय मनोहर युगल स्वरूप विचित्र केलि विहार से आनन्दित हो रहा है ।।१३२।।

व्याकोशेंदीवरविकसितामंदहेमारविंद
श्रीमन्निस्यंदनरतिरसांदोलि कंदर्पकेलि ।
वृन्दारण्ये नवरससुधास्यंदिपादारविंदं
ज्योतिर्द्वंद्वं किमपि परमानन्दकंदं चकास्ति ।।१३३।।

प्रफुल्लित नील कमल एवं विकसित श्रेष्ठ स्वर्ण कमल की शोभा से युक्त प्रस्रवण रूप रति रस को झकोरने वाला, प्रेम विलास तत्पर नूतन रसामृत स्रावी, चरण कमल वाला, परमानन्द का एक मात्र कारण कोई अनिर्वचनीय प्रकाश युगल श्री वृन्दावन में प्रकाशमान हो रहा है ।।१३३।।

तांबूलं क्वचिदर्पयामि चरणौ संवाहयामि क्वचिन्-
मालाद्यैः परिमंडये क्वचिदहोसंवीजयामि क्वचित् ।
कर्पूरादिसुवासितं क्व च पुनः सुस्वादु चांभोमृतं
पायाम्येव गृहे कदा खलु भजे श्रीराधिकामाधवौ ।।१३४।।

अहा ! कभी पान की बीड़ीं अर्पण करूंगी,कभी चरणों को सहलाऊंगी (चापूँगी),कभी माला आदि से भूषित करूँगी (शृङ्गार दूंगी), कभी व्यजन ले वायु करूंगी, और कभी कर्पूर आदि से सुगन्धित और स्वादिष्ट अमृत तुल्य जल पान कराऊँगी,इस प्रकार कब मैं भली भाँति निकुञ्ज सदन में ही श्रीराधा माधव दंपति की सेवा करूँगी ।।१३४।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्यंगोच्छलदुज्ज्वलामृतरसप्रेमैकपूर्णाम्बुधि
र्लावण्यैकसुधानिधिः पुरुकृपावात्सल्यसारांबुधिः ।
तारुण्यप्रथमप्रवेशविलसन्माधुर्यसाम्राज्यभू-
र्गुप्तःकोपि महानिधिर्विजयते राधारसैकावधिः ।।१३५।।

प्रत्येक अङ्ग में से निर्झरित उज्ज्वल अमृत तुल्य रसीले प्रेम का एक मात्र परिपूर्ण सागर, लावण्य का एक मात्र निरुपम सुधा सागर, पूर्ण कृपायुक्त वत्सलता के सार का सागर, यौवन की प्रारम्भिक अवस्था की विलास माधुरी के साम्राज्य की भूमि, रस की एक मात्र पराकाष्ठा, कोई अनिर्वचनीय श्री राधा नामक रहस्य युक्त महा निधि सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान है ।।१३५।।

यस्याः स्फूर्जत्पदनखमणिज्योतिरेकच्छटायाः
साँद्रप्रेमामृतरसमहासिंधुकोटिर्विलासः ।
सा चेद्राधा रचयति कृपादृष्टिपातं कदाचिन्-
मुक्तिस्तुच्छीभवति बहुशः प्राकृताप्राकृतश्रीः ।।१३६।।

सघन प्रेमामृत रस के कोटि कोटि महासागर जिनकी चमकती हुई चरण नख रूप मणि प्रभा की केवल एक चमक का विलास या खेल है यदि वह श्रीराधा एक बार कभी अपनी कृपा दृष्टि का निक्षेप मुझ पर करें तब मुक्ति तथा बहुत प्रकार की लौकिक अथवा अलौकिक श्री मेरे लिये फीकी हो जायेंगी ।।१३६।।

कदा वृन्दारण्ये मधुरमधुरानंदरसदे
प्रियेश्वर्य्याः केलीभवननवकुञ्जानि मृगये ।
कदा श्री राधायाः पदकमलमाध्वीकलहरी-
परीवाहैश्चेतो मधुकरमधीरं मदयिता ।।१३७।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महा मधुर तम आनन्द रस दायक श्री वृन्दावन में स्वामिनी प्रियाजी के विहार भवन की नूतन कुञ्जों को मैं कब अन्वेषण करूँगी तथा श्री राधाजी की अपने पद पंकज सुरा की तरङ्ग अपने प्रवाह द्वारा गेरे चञ्चल चित्त भ्रमर को कब उन्मत्त करेंगी ।।१३७।।

राधाकेलिनिकुञ्ज वीथिषु चरन्राधाभिधामुच्च-
रन्राधाया अनुरूपमेव परमं धर्म्मं रसेनाचरन् ।
राधायाश्चरणांबुजं परिचरन्नानोपचारैर्मुदा
कर्हिस्या श्रुतिशेखरोपरि चरन्नाश्चर्यचर्यां चरन् ।।१३८।।

श्रीराधाजी की विहार कुञ्जों की वीथियों में विचरता हुआ, श्री राधा नाम को उच्चारण करता हुआ, श्रीराधा जी के सर्वथा अनुकूल परम धर्म्म का प्रेम से आचरण करता हुआ,आनन्द पूर्वक नाना सामग्री द्वारा श्री राधाजी के चरण कमल की सेवा करता हुआ, इस प्रकार आश्चर्य पूर्ण चर्या को आचरण करता हुआ मैं वेदातीत पथ का पथिक कब बनूंगा ।।१३८।।

यातायातशतेन संगमितयोरन्योन्यवक्त्रोल्लसत्-
चंद्रालोकनसंप्रभूतबहुलानंगांबुधिक्षोभयोः ।
अंतः कुञ्जकुटीरतल्पगतयोर्दिव्याद्भुतक्रीडयोः
राधामाधवयोः कदानु श्रृणुयां मंजीरकांचीध्वनिम् ।।१३९।।

सखी द्वारा अनेकानेक विधि से यातायात करके सङ्गम को प्राप्त होने वाले परस्पर के मुख रूपी पूर्ण चन्द्र के अवलोकन से उत्पन्न काम समुद्र के प्रबल क्षोभ में पड़े कुञ्ज कुटीर के मध्य में शय्या पर बिराजित विचित्र दिव्य केलि परायण श्रीराधा माधव के नूपुर काञ्ची मिश्रित ध्वनि को मैं कब सुनूँगी ? ।।१३९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहो भुवनमोहनं मधुरमाधवीमंडपे
मधूत्सवसमुत्सुकं किमपि नीलपीतच्छवि ।
विदग्धमिथुनं मिथोदृढतरानुरागोल्लसन्
मदंमदयते कदा चिरतरं मदीयं मनः ।।१४०।।

अहह सुन्दर मालती लता मंदिर में वसंतोत्सव के लिये अत्यंत उत्कण्ठित, परस्पर के प्रकट अनुराग से उल्लसित, मद युक्त त्रिभुवन को मोहित करने वाला नील एवं पीत कान्ति युक्त कोई अनिर्वचनीय विदग्ध युगल मेरे इस मन को कब निरंतर चिरकाल उन्मत्त करेंगे ।।१४०।।

राधानामसुधारसंरसयितुं जिह्वास्तु मे विह्वला
पादौ तत्पदकांकितासु चरतां वृन्दाटवीवीथिषु ।
तत्कर्मैव करः करोतु हृदयं तस्याः पदं ध्यायता-
त्तद्भावोत्सवतः परं भवतु मे तत्प्राणनाथेरतिः ।।१४१।।

अमृत समान रस भरे श्री राधा नाम के रसास्वाद के निमित्त मेरी रसना व्याकुल बनी रहे, मेरे चरण उन्हीं श्री राधा जी के चरण चिह्नित श्री वृन्दावन की गलियों में विचरण करें, मेरे हाथ उन्हीं के निमित्त कर्म करें, मेरा हृदय उनके चरणों का ध्यान करे और केवल तदीय भाव चाव के साथ-साथ उनके जीवन लाल जी में मेरी प्रीति हो ।।१४१।।

मंदीकृत्य मुकुन्दसुन्दरपदद्वन्द्वारविंदामल-
प्रेमानन्दममंदमिंदुतिलकाद्युन्मादकंदं परम् ।
राधाकेलिकथारसांबुधिचलद्वीचीभिरांदोलितं
वृन्दारण्यनिकुंजमंदिरवरालिंदे मनो नंदतु ।।१४२।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधिक रूप से श्रीशंकर आदि के उन्माद का कारण, श्री लाल जी के मनोहर युगल चरण कमलों के निर्मल तीव्र प्रेमानन्द को भी, तिरस्कृत करके श्रीराधा विहार कथा रस सागर की तरल तरङ्गों से (झकझोरा हुआ) मेरा चञ्चल मन श्री वृन्दावन के निकुञ्ज मंदिरों के सुन्दर आङ्गन में आनन्द को प्राप्त हो ॥१४२॥

राधानामैव कार्य्यं ह्यनुदिनमिलितं साधनाधीशकोटि
स्त्याज्योनीराज्यराधापदकमलसुधासत्पुमर्थाग्रकोटिः
राधापादाब्जलीलाभुवि जयति सदा मंदमंदारकोटिः
श्रीराधाकिंकरीणांलुठतिचरणयोरद्भुतासिद्धिकोटिः॥१४३॥

निश्चय रूप से (सौभाग्य वश) प्राप्त होने पर प्रति दिन केवल राधा नाम का ही (श्रवण कीर्तनादि) करना चाहिये (और) कोटि २ श्रेष्ठतम साधन भी त्याज्य हैं, कोटि कोटि श्रेष्ठ पुरुषार्थ भी राधा-पद कमल सुधा पर न्योछावर के योग्य हैं, कोटि कल्प तरुओं को तुच्छ करने वाली श्री राधा चरण कमल की लीला भूमण्डल पर सदा सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान है श्रीराधा जी की किङ्करियों के चरणों में विचित्र कोटि कोटि सिद्धियां लोटती रहती हैं ॥१४३॥

मिथोभंगीकोटिप्रवहदनुरागामृतरसो-
त्तरंगभ्रू भंगक्षुभितबहिरभ्यंतरमहो ।
मदाघूर्णन्नेत्रं रचयति विचित्रं रतिकला
विलासं तत्कुञ्जे जयति नवकैशोरमिथुनम्॥१४४॥

अहह परस्पर की अनेकानेक विलास पद्धति से अधिक, रूप से प्रवाहित अनुराग रूपी अमृत रस से पूर्ण भृकुटी विलास से (जिनका) वाह्य एवं अंतर क्षोभ को प्राप्त है (तथा)जिनके नेत्र मद में घूम रहे हैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐसी वह नूतन किशोर जोड़ी कुञ्ज में अद्भुत रतिकला पूर्ण विलास की रचना कर रही है और सर्वोत्कर्ष को प्राप्त हो रही है ।।१४४।।

काचिद्वृंदावननवलतामंदिरे नंदसूनोः
दृप्यद्दोष्कंदलदृढ़परीरंभनिस्पंदगात्री ।
दिव्यानंताद्भुतरसकलाः कल्पयंत्याविरास्ते
सांद्रानंदामृतरसघनप्रेममूर्तिः किशोरी ।।१४५।।

सघन आनन्दामृत रस की घनीभूत प्रेम मूर्ति कोई अनिर्वचनीय किशोरी श्रीनन्दनन्दन के दर्प युक्त भुज लताओं के प्रगाढ़ अलिङ्गन से निश्चेष्ट अङ्गों वाली वृन्दावन के नूतन निकुञ्ज में अलौकिक अनन्य अनुपम रस भरी कलाओं को निर्माण करती हुई प्रकट है ।।१४५।।

न जानीते लोकं न च निगमजातं कुलपरं
परां वा नो जानात्यहह न सतां चापि चरितम् ।
रसं राधायामाभजति किल भावं व्रजमणौ
रहस्ये तद्यस्य स्थितिरपि न साधारणगतिः ।।१४६।

आश्चर्य है कि (जो) निश्चय पूर्वक श्री राधा में (वर्तमान) रसको (तथा) व्रजमणि (लाल जी) मैं (वर्तमान) भाव को पूर्णतया सेवन करता है (वह) न तो इस लोक को और न ही श्रुति समूह को जानता है, तथा कुलागत पद्धति और सदाचार को भी नहीं जानता है, इसलिये जिस पुरुष की इस रहस्य में स्थिति है उसकी भी साधारण गति नहीं है ।।१४६।।

ब्रह्मानंदैकवादाः कतिचन भगवद्वंदनानंदमत्ताः
केचिद्गोविंदसख्याद्यनुपमपरमानंदमन्ये स्वदंते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधाकिंकरीणां त्वखिलसुखचमत्कारसारैकसीमा
तत्पादांभोजराजन्नखमणिविलसज्ज्योतिरेकच्छटापि ।।१४७।।

कुछ लोग तो ब्रह्मानन्द को ही मुख्य रूप से वर्णन करने वाले हैं, कोई श्री भगवान् के प्रणाम के प्रमोद (दास्यरति में) उन्मत्त रहते हैं, और कोई अनुपमेय परमानन्द स्वरूप श्री गोविन्द के सख्य वात्सल्य आदि रस का ही आस्वादन करते हैं, परन्तु श्रीराधा दासियों का तो उन श्रीराधा के चरण कमल में प्रकाशमान नख मणि की उल्लसित ज्योतिकी एक झलक भी समस्त सुखों के सार चमत्कार की चरम अवधि है ।।१४७।।

न देवैर्ब्रह्माद्यैर्न खलु हरिभक्तैर्न सुहृदा
दिभिर्यद्वै राधामधुपतिरहस्यं सुविदितम् ।
तयोर्दासीभूत्वा तदुपचितकेलीरसमये
दुरंताः प्रत्याशा हरहर दृशोर्गोचरयितुम् ।।१४८।।

जो श्रीराधा माधव का रहस्य न ब्रह्मादि देवों ने, न सम्यक् प्रकार से हरि भक्तों ने तथा लालजी के सुहृदों ने ी अच्छी प्रकार से नहीं जाना-उन्हीं की दासी होकर उनकी प्रवृद्ध क्रीडा को असमय में ही नेत्र गोचर करते करते देखने की हाय हाय मेरी दुर्लभ आशायें लगी हुई हैं ।।१४८।।

त्वयि श्यामे नित्ये प्रणयिनि विदग्धे रसनिधौ
प्रिये भूयोभूयः सुदृढमतिरागो भवतु मे ।
इति प्रेष्ठेनोक्ता रमण मम चित्ते तव वचो,
वदंतीति स्मेरा मम मनसि राधा विलसतु ।।१४९।।

हे श्रीश्यामे ! हे नित्य प्रणायनि ! हे विदग्धे ! रस की निधि स्वरूप आप में प्रतिक्षण वर्धमान बार-बार प्रगाढ़तर मेरा अत्यन्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुराग हो, इस प्रकार प्रियतम के कहने पर प्यारी ने उत्तर दिया हे रमण ! चित्त में भी आपके ही वचन हैं अर्थात् मेरे वचन आपने चुरा लिये । इस प्रकार मंद हास्य युक्त कहती हुई ऐसी श्री राधा मेरे मन में विलास करे ॥१४९॥

सदानंदं वृन्दावननवलतामंदिरवरे
ष्वमंदैः कंदर्पोन्मदरतिकलाकौतुकरसम् ।
किशोरं तज्ज्योतिर्युगलमतिघोरं मम भवं
ज्वलज्ज्वालं शीतैः स्वपदमकरंदैः शमयतु ॥१५०॥

श्रीबृन्दावन के नूतन सुन्दर निकुञ्ज में सदैव परिपूर्ण आनन्द से विराजमान काम मद से उन्मत्त, रतिकला पूर्ण कुतूहल रस रूप वह किशोर दिव्य प्रकाश युगल अत्यन्त शीतल अपने चरण कमल के घनी भूत रस से अत्यन्त भयानक प्रचण्ड ज्वाला पूर्ण संसार चक्र को शमन करे ॥१५०॥

उन्मीलन्नवमल्लिदामविलसद्धम्मिल्लभारे बृह
च्छ्रोणीमंडलमेखलाकलरवे शिंजत्सुमंजीरिणि ।
केयूरांगदकंकणावलिलसद्दोर्वल्लिदीप्तिच्छटे
हेमांभोरुहकुड्मलस्तनि कदा राधे दृशा पीयसे ॥१५१॥

नवीन प्रफुल्लित मल्ली के पुष्पों की माला भूषित केशपाश के भार वाली ! पृथु नितम्ब मण्डल पर काञ्ची की मधुर ध्वनि वाली ! शब्दायमान सुन्दर नूपुर वाली ! केयूर बाजू बन्द तथा कङ्कण माला से भूषित भुजलताओं की छवि परम्परा वाली ! स्वर्ण कमल कलिका तुल्य कुच मण्डल वाली ! हे श्री राधे ! ऐसे रूप को कब नेत्रों से पान करूँगी ॥१५१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमर्यादोन्मीलत्सुरतरसपीयूषजलधेः
सुधांगैरुत्तुंगैरिव किमपि दोलायिततनुः ।
स्फुरंती प्रेयोंके स्फुटकनकपंकेरुहमुखी
सखीनां नो राधे नयनसुखमाधास्यसि कदा ॥१५२॥

असीम उल्लास को प्राप्त सुरत रस सुधा सागर के मानो सुधा सने अङ्ग समुन्नत हों ऐसे निज अङ्गों में विराजमान विकसित स्वर्ण कमल मुखी ऐसी आप हे श्री राधे ! हम सखियों के हृदय में नेत्र दर्शन सुख कब स्थापित करोगी ॥१५२॥

क्षरंतीव प्रत्यक्षरमनुपमप्रेमजलधिं
सुधाधारावृष्टींरिव विदधती श्रोत्रपुटयोः ।
रसार्द्रा सन्मृद्वी परमसुखदा शीतलतरा
भवित्री किं राधे तव सहमया कापि सुकथा ॥१५३॥

प्रत्येक अक्षर द्वारा मानो अनुपम प्रेम सागर को उड़ेल रही हों और युगल श्रवण पुट में अमृत प्रवाह की मानो वर्षा ही कर रही हों ऐसी रस पूर्ण मधुर मृदुल, परम सुखदायिनी, अत्यन्त शीतल, आपकी कोई अनिर्वचनीय कमनीय चर्चा हे श्री राधे ! मेरे साथ क्या कभी होगी ? ॥१५३॥

अनुल्लिख्यानंतानपि सदपराधान्मधुपति
र्महाप्रेमाविष्टस्तव परमदेयं विमृशति ।
तवैकं श्रीराधे गृणत इह नामामृतरसं
महिम्नः कः सीमां स्पृशति तव दास्यैकमनसाम् ॥१५४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे श्री राधे ! इस लोक में केवल एक आपके नामामृत रस को उच्चारण करने वाले व्यक्ति के प्रति आपके उज्ज्वल प्रेमावेश में भरे श्री लालजी उस व्यक्ति के अनन्त वैष्णव अपराधों का भी विचार न करके उसे देने योग्य श्रेष्ठ वस्तु का विमर्श मन ही मन करते हैं तो फिर आपके दास्य में एक मात्र आसक्त चित्त पुरुषों की महिमा की अवधि को कौन स्पर्श कर सकता है अर्थात् कोई नहीं ।।१५४।।

लुलितनवलवंगोदारकर्पूरपूरं
प्रियतममुखचंद्रोद्गीर्णतांबूलखंडम् ।
घनपुलककपोला स्वादयंती मदास्ये
र्पयतु किमपि दासीवत्सला कर्हि राधा ।।१५५।।

चूर्णित नूतन लौंग एवं सुखद कर्पूर से पूर्ण प्यारे के मुख चन्द्र द्वारा चर्वित उगार किये हुए ताम्बूल खण्ड को आस्वादन करती हुई निबिड रोमाञ्चित कपोल युक्त, दासी पर कृपालु श्री राधा कभी मेरे मुख में क्या अर्पित करेंगी ।।१५५।।

सौंदर्य्यामृतराशिरद्भुतमहालावण्यलीलाकला
कालिंदीवरवीचिडंबरपरिस्फूर्जत्कटाक्षच्छविः ।
सा कापि स्मरकेलिकोमलकलावैचित्र्यकोटिस्फुर-
त्प्रेमानंदघनाकृतिर्दिशतु मे दास्यं किशोरीमणिः ।।१५६।।

जो सौन्दर्य्य सुधा की राशि हैं,महाविचित्र लावण्यमयी कलाओं में पूर्ण हैं, श्री यमुना जी की मनोहर तरङ्ग विशाल शोभा के समान जिनकी कटाक्ष कान्ति है,अनङ्ग रङ्ग की कोमल कला की कोटि कोटि विचित्रताओं से उल्लसित, प्रेमानन्द की सान्द्रमूर्ति, वह ऐसी कोई अनिर्वचनीया किशोरी शिरोमणि मुझे अपना दास्य प्रदान करें ।।१५६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुकूलमतिकोमलं कलयदेव कौसुंभकं
निबद्धमधुमल्लिकाललितमाल्यधम्मिल्लकम् ।
बृहत्कटितटस्फुरन्मुखरमेखलालंकृतं
कदा नु कलयामि तत्कनकचम्पकाभं महः॥१५७॥

अत्यन्त मृदुल कुसुम्भ रंग से रञ्जित दुकूल को भली भाँति धारण किये हुये वासन्ती लता की मालाओं से विरचित केशपाश वाले विशाल कटि प्रदेश पर देदीप्यमान, एवं कलरव करने वाली, काञ्ची से अलङ्कृत, उस स्वर्ण चम्पक के समान तेज को क्या कभी मैं देखूँगी ॥१५७॥

कदा रासे प्रेमोन्मदरसविलासेऽद्भुतमये
दिशोर्मध्ये भ्राजन्मधुपतिसखीवृन्दवलये ।
मुदांतः कांतेन स्वरचितमहालास्यकलया
निषेवे नृत्यन्तीं व्यजननवतांबूलशकलैः ॥१५८॥

दोनों दिशाओं के मध्य में अर्थात् सखियों के दायें बायें विराजमान, श्री लाल जी से युक्त, सखी समूह से मण्डलाकार मण्डित, प्रेम के उत्कृष्ट मद से युक्त, रसमय विलास सम्पन्न विचित्रता वाले, रास में मण्डल के भीतर अपने कान्त के साथ निज रचित प्रशस्त लास्य की कला से प्रेम पूर्वक नृत्य परायण श्री प्रिया जी को बीजना एवं नूतन ताम्बूल खंड से मैं कब सेवन करूँगी ॥१५८॥

प्रसृमरपटवासे प्रेमसीमा विकासे
मधुरमधुरहासे दिव्यभूषाविलासे ।
पुलकितदयितांसे संवलद्बाहुपाशे
तदतिललितरासे कर्हि राधामुपासे ॥१५९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहाँ पटवास कुंकुमादि चूर्ण फैला हुआ है मधुरातिमधुर हास परिहास से युक्त, अलौकिक अलङ्कारों के विलास से सम्पन्न, प्रिय के रोमाञ्चित स्कंध वाले भुजपाश से विभूषित, उस ऐसे अतिशय रमणीय रास में मैं कब श्रीराधाजी की उपासना करूँगी ।।१५६।।

यदि कनकसरोजं कोटिचंद्रांशुपूर्णं
नवनवमकरंदस्यंदि सौंदर्यधाम ।
भवति लसितचंचत्खंजनद्वंद्वमास्यं
तदपि मधुरहास्यं दत्तदास्यं न तस्याः ।।१६०।।

यदि कोटि कोटि चन्द्र किरणों से पूर्ण नूतनातिनूतन मकरन्द को बहाने वाला, सुन्दरता का एकमात्र सदन, शोभायमान चञ्चल खञ्जन युगल से अलंकृत कोई स्वर्ण कमल हो तो भी मधुर हास्य से भूषित उन प्रियाजी का मुख कमल उसे दास्यता देना भी स्वीकार नहीं करता अर्थात् दास नहीं बनाता फिर समता देने की तो बात ही कैसे की जाए ।।१६०।।

सुधाकर मुधाकरं प्रतिपदस्फुरन्माधुरी
धुरीणनवचंद्रिकाजलधितुन्दिलं राधिके ।
अतृप्तहरिलोचनद्वयचकोरपेयं कदा
रसांबुधिसमुन्नतं वदनचंद्रमीक्षेतव ।।१६१।।

हे श्री राधिके चन्द्रमा को निरर्थक करने वाले, प्रतिक्षण विकासमान माधुरी में मुख्य, नूतन चन्द्रिका रूपी सागर के सम्वर्धन शील तृप्ति हीन चकोर समान लाल जी के नेत्र युगल से पान करने योग्य रस सागर से उदित होने वाले आपके मुख चन्द्र को मैं कब देखूंगी ।।१६१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंगप्रत्यंगरिंगन्मधुरतरमहाकीर्तिपीयूषसिंधो
रिंदोःकोटीर्विनिंदद्वदनमतिमदालोलनेत्रं दधत्याः ।
राधायाःसौकुमार्याद्भुतललिततनोःकेलिकल्लोलिनीना
मानंदस्यंदिनीनां प्रणयरसमयान्किंविगाहे प्रवाहान् ॥१६२॥

जिनके प्रत्येक अङ्ग से मधुरातिमधुर प्रशस्त कीर्ति रूप सुधा सागर बहते रहते है,मद भरे चञ्चल नेत्र युक्त, कोटि कोटि चन्द्रों को लज्जित करने वाले, वदन वाली विचित्र सुकुमार कमनीय कलेवर वाली, श्री राधा जी के आनन्द स्राविणी केलि सरिताओं के प्रणय रस रूप प्रवाह का क्या मैं अवगाहन करूंगी ॥१६२॥

मत्कंठे किं नखरशिखया दैत्यराजोस्मि नाहं
मैवं पीडां कुरु कुचतटे पूतना नाहमस्मि ।
इत्थं कीरैरनुकृतवचः प्रेयसा संगतायाः
प्रातः श्रोष्ये तव सखिकदा केलिकुञ्जे मृजंती ॥१६३॥

मेरे कण्ठ में नखाग्र घात क्यों करते हो मैं दैत्यराज तृणावर्त तो नहीं हूँ, मेरे कुच मण्डल पर ऐसी पीडा मत करो मैं पूतना बकी नहीं हूँ,हे सखि ! इस प्रकार प्रियतम से समागम को प्राप्त होते समय आपके शुकानुकृत वचन को प्रातःकाल केलि कुञ्ज में मार्जन करती कब सुनूंगी ॥१६३॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु स्फुरतु मे राधापदाब्जच्छटा
बैकुण्ठेनरकेथवा मम गतिर्नान्यास्तु राधां विना ।
राधाकेलिकथासुधांबुधिमहावीचीभिरांदोलितं
कालिंदीतटकुञ्जमंदिरवरालिंदे मनो विंदतु ॥१६४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं में श्री राधा पद कमल की छटा मेरे हृदय में स्फुरित हो, वैकुण्ठ लोक में अथवा नरक में श्री राधाजी के बिना मेरी कोई दूसरी गति (शरण) न हो, राधा केलि कथामृत सागर की उत्ताल तरङ्गों से संचालित मेरा मन यमुना तट के निकुञ्ज मन्दिर के श्रेष्ठ आङ्गन में मोद को प्राप्त करे ।।१६४।।

अलिंदे कालिंदीतटनवलतामंदिरगते
रतामर्दोद्भूत श्रमजलभरापूर्णवपुषोः ।
सुखस्पर्शेनामीलितनयनयोः शीतमतुलं
कदा कुर्य्यां संवीजनमहह राधामुरभिदोः ।।१६५।।

अहो आश्चर्य ! श्रीयमुना तट पर नवीन लता भवन के आङ्गन में रति व्यायाम (विहार) से समुत्पन्न श्रम स्वेदकन समूह सिक्त शरीर वाले, सुखद स्पर्श से मुद्रित नयन वाले राधामाधव के लिये अनुपम शीतल व्यजन को मैं कब करूंगी ।।१६५।।

क्षणं मधुरगानतः क्षणममंदहिंदोलतः
क्षणं कुसुमवायुतः सुरतकेलिशिल्पैः क्षणम् ।
अहो मधुरसद्रसप्रणयकेलिवृन्दावने
विदग्धवरनागरी रसिकशेखरौ खेलतः ।।१६६।।

अहह ! मधुर प्रशस्त रस की प्रेम विलास से पूर्ण श्रीवृन्दावन में विदग्ध शिरोमणि प्रियाजी तथा रसिक शेखर श्री लाल जी कभी मधुर सङ्गीत द्वारा कभी वेग शाली हिण्डोले से, कभी पुष्प विहित वायु से तथा कभी सुरत विहार रचनाओं से खेलते कौतुक करते रहते हैं ।।१६६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अद्य श्यामकिशोरमौलिरहह प्राप्तो रजन्या मुखे
नीत्वातां करयोः प्रगृह्यसहसानीपाटवीं प्राविशत् ।
श्रोष्ये तल्पमिलन्महारतिभरे प्राप्तेपि शीत्कारितं
तद्वीचीसुखतर्जनं किमु हरेः स्वश्रोत्ररंध्राश्रितम् ॥१६७॥

अहह ! (आश्चर्य) आज किशोर शिरोमणि श्री लाल जी सायं काल पधारे तथा उन श्रीप्रियाजी को कर ग्रहण पूर्वक ले जाकर एका-एक कदम्ब कानन में प्रविष्ट हो गये, और वहाँ शय्या पर परस्पर सङ्गम में प्रशस्त रति प्रवाह की वृद्धि होने पर उन श्री लाल जी के तरङ्गवत् स्वल्प कैवल्य सुख को तिरस्कृत करने वाले उस रात भर के शीत्कार शब्द को, अपने कर्ण कुहरों में प्राप्त होने पर क्या मैं सुनूंगी ॥१६७॥

श्रीमद्राधे त्वमथ मधुरं श्रीयशोदाकुमारे
प्राप्ते कैशोरकमतिरसाद्वलगसे साधुयोगम् ।
इत्थं बाले महसि कथया नित्यलीलावयःश्री
जातावेशा प्रकटसहजा किन्नुदृश्या किशोरी ॥१६८॥

हे श्रीमति राधे ! श्री यशोदानंदन लाल जी के अति रसावेश से किशोरावस्था को प्राप्त होने पर आप भी इसी किशोर वय रूपी मधुर संयोग को प्राप्त हो रही हो, बालोचित प्रकाश के प्राकट्य काल में अर्थात् बाल्यावस्था में इस प्रकार की उक्ति से नित्य लीलोचित वय शोभा में आवेश को प्राप्त सहज गुणों सहित आप किशोरी जी को क्या मैं देखूंगी ? ॥१६८॥

एकं कांचनचंपकच्छवि परं नीलांबुदश्यामलं
कंदर्पोत्तरलं तथैकमपरं नैवानुकूलं बहिः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किंचैकं बहुमानभंगि रसवच्चाटूनि कुर्वत्परं
वीक्षे क्रीडतिकुञ्जसीम्नि तदहो द्वंद्वं महामोहनम् ।।१६९।।

अहह ! एक तो स्वर्ण चम्पक के समान कान्ति वाला, दूसरा नील नीरद के समान श्याम वर्ण, तथा एक काम से अत्यन्त चञ्चल दूसरा केवल बाहिर से अनूकूल नहीं प्रतिकूल, और फिर एक बहुत प्रकार की मान परिपाटी से पूर्ण तथा दूसरा प्रेम से अनुनय विनय करने वाला इस प्रकार महा मोहित करने वाला वह युगल रसिक निकुञ्ज प्रान्त में क्रीडा कर रहा है क्या मैं उसे कभी देखूंगा ?।।१६९।।

विचित्ररतिविक्रमं दधदनुक्रमादाकुलं
महामदनवेगतो निभृतमञ्जुकुञ्जोदरे ।
अहो विनिमयन्नवं किमपि नीलपीतं पटं
मिथोमिलितमद्भुतं जयति पीतनीलं महः ।।१७०।।

अहह ! अतिशय अनङ्ग वेग से पूर्ण एकान्त मनोहर कुञ्ज में अनुकूल क्रम से विचित्र रति पराक्रम को अनुशीलन करता हुआ, किसी अनिर्वचनीय नूतन नील तथा पीत पट परस्पर परिवर्तन करता हुआ, परस्पर नितान्त संयुक्त अद्भुत अनुपम पीत एवं नील तेज सर्वोत्कर्षता से विराजमान है ।।१७०।।

करे कमलमद्भुतं भ्रमयतोर्मिथोंसार्पित
स्फुरत्पुलकदोर्लतायुगलयोः स्मरोन्मत्तयोः ।
सहासरसपेशलं मदकरींद्रभंगीशतै
र्गतिं रसिकयोर्द्वयोः स्मरत चारुवृन्दावने ।।१७१।।

जो हाथ में विचित्र कमल लिये घुमा रहे हैं, तथा जिनकी दोनों भुज लताएँ परस्पर अंसों पर समर्पित देदीप्यमान एवं रोमां-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चित हैं, अनङ्ग से उन्मत्त उन दोनों रसिकों की मंजुल वृन्दावन में परिहास रस से मृदुल मदोन्मत्त गजराज की अनेक प्रकार की परिपाटी के समान गति को स्मरण करो ॥१७१॥

खेलन्मुग्धाक्षिमीनस्फुरदधरमणीविद्रुमश्रोणिभार
द्वीपायामोत्तरंगस्मरकलभकटाटोपवक्षोरुहायाः ।
गंभीरावर्त्तनाभेर्बहलहरिमहाप्रेमपीयूषसिंधोः
श्रीराधायाः पदांभोरुहपरिचरणे योग्यतामेव मृग्ये ॥१७२॥

क्रीड़ा परायण मनोहर मीन ही नेत्र हैं, दीप्तिशाली विद्रुम मणि ही अधरोष्ठ है, विस्तृत द्वीप के समान नितम्ब मण्डल व काम की जिसमें तरंगें हैं, गज शावक के गण्डस्थल की विशालता तुल्य कुच कलश हैं, गम्भीर आवर्त्त ही जिनकी नाभि है, श्यामसुन्दर के महाप्रेम रूप सुधा की जो नदी है, ऐसी श्री राधाजी के चरण कमल की सेवा के विषय में योग्यता को ही खोजता हूँ ॥१७२॥

विच्छेदाभासमानादहह निमिषतो गात्रविस्रंसनादौ
चंचत्कल्पाग्निकोटिज्वलितमिव भवेद्बाह्यमभ्यंतरंच
गाढस्नेहानुबन्धग्रथितमिव तयोरद्भुतप्रेममूर्त्योः
श्रीराधामाधवाख्यं परमिह मधुरं तद्द्वयं धाम जाने ॥१७३॥

अहो ! अङ्गों की शिथिलता में निमेष मात्र के वियोगाभास (वियोग की आशङ्का) से भासित होने पर तन और मन दोनों सुदीप्त कोटि-कोटि प्रलय अग्नि के समान प्रज्वलित हो जाते हैं। इस लोक में उन अद्भुत प्रेम मूर्ति का नाम है श्री राधामाधव, जो परम मधुर हैं और मानो गाढ़ स्नेह रज्जु में गुथे हुए उस प्रकाश रूप युगल को मैं जानता हूँ ॥१७३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कदा रत्युन्मुक्तं कचभरमहं संयमयिता
कदा वा संधास्ये त्रुटितनवमुक्तावलिमपि ।
कदा वा कस्तूर्य्यास्तिलकमपि भूयो रचयिता
निकुंजांतर्वृत्ते नवरतिरणे यौवनमणेः ।।१७४।।

नव निकुञ्ज के भीतर यौवन मणि श्री प्रियाजी के नव रति रण (प्रथम समागम) के होने पर मैं रति विलास से शिथिल केशपाश को कब बाँधूगी तथा टूटी हुई नवीन मुक्ता माला को कब पिरोऊँगी और फिर कस्तूरी के तिलक को कब भली प्रकार से सजाऊँगी ।।१७४।।

किं ब्रूमोन्यत्र कुण्ठीकृतकजनपदे धाम्न्यपि श्रीविकुण्ठे
राधामाधुर्यवेत्ता मधुपतिरथ तन्माधुरीं वेत्ति राधा ।
वृन्दारण्यस्थलीयं परमरससुधामाधुरीणां धुरीणा
तद्द्वंद्वं स्वादनीयं सकलमपि ददौ राधिकाकिंकरीभ्यः ।।१७५।।

जब कि श्रीवैकुण्ठ धाम भी कुण्ठित प्रदेश हो गया है तब अन्यत्र का तो कहना ही क्या ? एकमात्र मधुपति श्रीलालजी श्रीराधा माधुरी को जानते हैं तथा श्रीराधा ही उनकी माधुरी को जानती हैं, परम रसमय सुधा माधुरी के मूल उद्गम स्थान इस श्रीवृन्दावन-स्थली ने आस्वादन के योग्य उसी रसिक युगल को भी सम्पूर्ण रूप से श्री राधिका किङ्करी गण के लिए प्रदान कर दिया है ।।१७५।।

लसद्वदनपंकजा नवगभीरनाभिभ्रमा
नितंबपुलिनोल्लसन्मुखरकांचिकादम्बिनी।
विशुद्धरसवाहिनी रसिकसिंधुसंगोन्मदा
सदा सुरतरंगिणी जयति कापि वृन्दावने ।।१७६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिनका सुन्दर मुख ही कमल है, नवीन गहन नाभि ही भँवर है, नितम्ब रूपी पट पर सुशोभित कलरव करने वाली काञ्ची ही मेघ माला है तथा जो मधुर श्रृङ्गार रस को बहानेवाली रसिक शेखर श्री लालजी रूप सागर के सङ्गम के लिये उन्मत्त रहती है, कोई एक अनिर्वचनीय देवनदी अथवा सुरत रङ्गमयी श्रीप्रियाजी रूप देवनदी श्रीवृन्दावन में सदैव सर्वोत्कर्ष से विराजमान है ॥१७६॥

अनंगनवरंगिणीरसतरंगिणीसंगतां
दधत्सुखसुधामये स्वतनुनीरधौ राधिकां ।
अहोमधुपकाकलीमधुरमाधवीमंडपे
स्मरक्षुभितमेधते सुरतसीधुमत्तं महः ॥१७७॥

अहह अनङ्ग के नवीन आह्लाद से सम्पन्न सङ्गम को प्राप्त रस मयी नदी की तरह वृन्दावनेश्वरी श्री राधा जीं को सुख सुधा रूप स्वकीय शरीर रूप समुद्र में लीन करते हुए, भ्रमरों के गुञ्जार से युक्त, सुन्दर माधवी लता के मण्डप में काम से क्षुब्ध,सुरत आसव से उन्मत्त तेज समृद्धि को प्राप्त हो रहा है ॥१७७॥

रोमालीमिहिरात्मजा सुललिते बंधूकबंधुप्रभा
सर्वांगे स्फुटचंपकच्छविरहो नाभीसरःशोभना ।
बक्षोजस्तवकालसद्भुजलता शिंजापतच्छुंकृतिः
श्रीराधा हरते मनो मधुपतेरन्येव वृन्दाटवी ॥१७८॥

अहह, जिनकी रोमावली ही यमुना है, अधरोष्ठ ही बन्धूक (दुपहरिया) पुष्पवत् प्रभाशील है,मनोहर सुकुमार सर्वाङ्ग में प्रफुल्लित चम्पा की कान्ति है, नाभि रूप सरोवर से शोभायमान हैं, कुच युगल ही पुष्प-गुच्छे हैं, सुन्दर भुजा ही लता हैं, भूषणों का रव ही भ्रमरीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की गुञ्जार है ऐसी श्रीराधा दूसरी वृन्दाटवी की तरह श्रीलालजी के मन को हरण कर रही हैं ।।१७८।।

राधामाधवयोर्विचित्रसुरतारंभेंनिकुञ्जोदरे
स्रस्तप्रस्तरसंगतैर्वपुरलं कुर्वेंगरागैःकदा ।
तत्रैव त्रुटिताःस्रजो निपतिताः संधायभूयः कदा
कंठे धारयितास्मि मार्जनकृते प्रातः प्रविष्टास्म्यहम् ।।१७९।।

मैं भोर ही कुञ्ज में मार्जन के लिये प्रविष्ट होकर श्रीराधामाधव के अभूत पूर्व सुरत केलि के समय की निकुञ्ज के भीतर मर्दित शय्या पर लगे हुए अङ्गराग से मैं अपने शरीर को कब अलंकृत करूँगी तथा वहीं पर टूट कर गिरी मालाओं को फिर पिरो कर कब अपने कण्ठ में धारण करूँगी ।।१७९।।

श्लोकान्प्रेष्ठयशोंकितान्गृहशुकानध्यापयेंत्कर्हिचिद्
गुञ्जामंजुलहारवर्हमुकुटं निर्माति काले क्वचित् ।
आलिख्य प्रियमूर्तिमाकुलकुचौ संघट्टयेद्वा कदा
प्येवंव्यापृतिभिर्दिनम् नयति मे राधा प्रिय स्वामिनी ।।१८०।।

कभी तो प्रियतम के यश से परिपूर्ण श्लोकों को गृह शुक-सारिकाओं को पढ़ाती हैं, और किसी समय गुञ्जा के सुन्दर हार तथा मयूर मुकुट का निर्माण करती हैं, और कभी फिर प्रियतम के चित्र को चित्रित करके आकुल अपने कुच युगल स्पर्श कराती हैं, इस प्रकार के व्यापार कलाप से मेरी प्राण जीवन प्यारी स्वामिनी श्रीराधाजी दिन को व्यतीत करती हैं ।।१८०।।

प्रेयः संगसुधासदानुभविनी भूयोभवद्भाविनी
लीलापञ्चम रागिणी रतिकलाभंगीशतोद्भाविनी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारुण्यद्रवभाविनी कटितटे कांचीकलाराविणी
श्रीराधैव गतिर्ममास्तु पदयोः प्रेमामृतस्राविणी ।।१८१।।

प्रियतम की सङ्गम प्रेमसुधा का नित्य अनुभव करने वाली, प्रतिक्षण वर्धमान भाव रूपिणी लीला पूर्वक पंचम राग गाने वाली, शत शत रतिकलाओं की परिपाटी का प्राकट्य करने वाली, करुणा से द्रवित हृदय वाली, कटि प्रदेश में काञ्ची के कलरव से सम्पन्न, चरणों से प्रेमामृत की प्रवाहित करने वाली श्री राधा ही मेरी गति (शरण) हों ।।१८१।।

कोटीन्दुच्छविहासिनी नवसुधासम्भारसम्भाषिणी
वक्षोजद्वितयेन हेमकलशश्रीगर्वनिर्वासिनी ।
चित्रग्रामनिवासिनी नवनवप्रेमोत्सवोल्लासिनी
वृन्दारण्यविलासिनी किमु रहो भूयाद्धृदुल्लासिनी ।।१८२।।

कोटि कोटि चन्द्र छटा के समान हास्य वाली, नूतन सुधा धारा वत् आलाप करने वाली,कुच युग के द्वारा स्वर्ण कलश की शोभा के गर्व को निर्मूल करने वाली;चित्रग्राम बरसाने में निवास करने वाली, नूतनातिनूतन प्रेमोत्सव सुरत रङ्ग को उल्लसित करने वाली, श्रीप्रिया जी क्या मेरे हृदय में उल्लसित होंगी ।।१८२।।

कदा गोविन्दाराधनललितताम्बूलशकलं,
मुदा स्वादं स्वादं पुलकिततनुर्मे प्रियसखी ।
दुकूलेनोन्मीलन्नवकमलकिञ्जल्करुचिना
निवीतांगी संगीतकनिजकलाः शिक्षयति माम् ।।१८३।।

श्री लाल जी के आराधन से प्राप्त रुचिर तांबूल खण्ड को मोद पूर्वक बार बार आस्वादन करती हुई, रोमाञ्चित विग्रह वाली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरी प्यारी सखी ललिता प्रफुल्लित नूतन कमल केसर की शोभा वाले दुकूल से सुसज्जितांगी संगीत की असाधारण कलाओं को मुझे कब सिखायेंगी ।।१८३।।

लसद्दशनमौक्तिकप्रवरकांतिपूरस्फुरन्
मनोज्ञनवपल्लवाधरमणिच्छटासुन्दरम् ।
चरन्मकरकुण्डलं चकितचारुनेत्राञ्चलम्
स्मरामि तव राधिके वदनमण्डलं निर्मलम् ।।१८४।।

हे श्री राधे ! शोभायमन सुन्दर मुक्ता सम दन्तकांति के पुञ्ज से उल्लसित,सुन्दर नूतन पल्लव सम अधर की मनोज्ञ छवि से कमनीय. चञ्चल मकराकृति कुण्डल मंडित, चकित उज्वल नेत्र कटाक्ष युक्त आपके स्वच्छ (शुभ्र) वदन मंडल को मैं स्मरण करती हूँ ।।१८४।।

चलत्कुटिलकुन्तलं तिलकशोभि भालस्थलं
तिलप्रसवनासिकापुटविराजिमुक्ताफलम् ।
कलंकरहितामृतच्छविसमुज्ज्वलं राधिके
तवातिरतिपेशलं वदनमण्डलं भावये ।।१८५।।

हे श्री राधिके ! चञ्चल घुंघराली अलकों वाले, तिलक से चित्रित भाल वाले, तिल पुष्प समनासिका पुट में शोभमान बेसर की मुक्ता वाले, निष्कलंक चंद्रमा से भी अत्यन्त उज्वल स्वच्छ अतिशय प्रेम से सुन्दर आपके मुख मंडल की मैं भावना करती हूँ ।।१८५।।

पूर्णप्रेमामृतरससमुल्लाससौभाग्यसारं
कुञ्जे कुञ्जे नवरतिकलाकौतुकेनात्तकेलि ।
उत्फुल्लेन्दीवरकनकयोः कांतिचोरं किशोरं
ज्योतिर्द्वन्द्वं किमपि परमानन्दकंदं चकास्ति ।।१८६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्ण प्रेमामृत रस समुत्कर्ष के सौभाग्य का सार रूप प्रत्येक कुञ्ज में नूतन रतिकला के चमत्कार से केलि परायण प्रफुल्लित नील एवं स्वर्ण कमल की कान्ति को चुराने वाला परमानन्द का मूल कोई अनिर्वचनीय किशोर प्रकाश युगल गौरश्याम तेज शोभित हो रहा है ।।१८६।।

ययोन्मीलत्केलीविलसितकटाक्षैककलया
कृतो बन्दी वृन्दाविपिनकलभेंद्रो मदकलः ।
जडीभूतः क्रीडामृग इव यदाज्ञालवकृते
कृती नः सा राधा शिथिलयतु साधारण गतिम् ।।१८७।।

जिन श्री राधा जी की विकसित केलि विलास में कटाक्ष की केवल एक कला ने मदोन्मत्त वृन्दावन के गज शावक शिरोमणि श्री लालजी को बन्दी बना लिया तथा कुशल होने पर भी जिन की आज्ञा के संकेत मात्र के लिये पालनार्थ क्रीडामृग की तरह जड़ वत् बनें रहते हैं वह श्रीराधा जी हमारी भव बाधा को दूर करें ।।१८७।।

श्रीगोपेन्द्रकुमारमोहनमहाविद्येस्फुरन्माधुरी
सारस्फाररसाम्बुराशिसहजप्रस्यंदिनेत्राञ्चले ।
कारुण्यार्द्रकटाक्षभंगिमधुरस्मेराननाम्भोरुहे
हाहा स्वामिनि राधिके मयि कृपादृष्टिंमनांनिक्षिप।।१८८।।

हे श्री नन्द नन्दन के मोहनार्थं महा विद्या स्वरूपे ! हे देदीप्यमान माधुरी सार समृद्धि के रससागर के स्वाभाविक प्रस्रावि नेत्र प्रांत भागे ! हे करुणा पूर्ण स्निग्ध कटाक्ष पातिनि ! हे सुन्दर मन्द हास भूषित मुख कमले ! हा हा स्वामिनि श्री राधिके ! मुझ पर तनिक कृपा दृष्टि पात कीजिये ।।१८८।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ओष्ठप्रांतोच्छलितदयितोद्गीर्णतांबूलरागा
रागानुच्चैर्निजरचितया चित्रभंग्योन्नयंती।
तिर्यग्ग्रीवा रुचिररुचिरोदञ्चदाकुञ्चितभ्रूः
प्रेयः पार्श्वे विपुलपुलकैर्मण्डिताभाति राधा ॥१८९॥

प्रियतम के उगले हुए पान की लाली से जिनके ओष्ठ रङ्गीन हो रहे हैं, ग्रीवा को तिरछी करके अत्यन्त सुन्दरता से कुछ उठी हुई भृकुटि को बंक किये हुये अपने ही रचित विचित्र कौशल से रागों को ऊँचे स्वर से गान करती हुई, प्रचुर रोमाञ्च भूषित श्री राधा प्रियतम के पास में (वाम भाग में) विराजमान हैं ॥१८९॥

किं रे धूर्त्तप्रवर निकटं यासि नः प्राणसख्या
नूनं बालाकुचतटकर स्पर्शमात्राद्विमुह्येत्।
इत्थं राधे पथिपथिरसान्नागरं तेनुलग्नं
क्षिप्त्वा भंग्या हृदयमुभयोः कर्हि संमोहयिष्ये ॥१९०॥

अरे वंचक शरोमणे! हमारी प्यारी सखी के निकट क्यों जाते हो, निश्चय ही उन बाला के कुच तटी के कर स्पर्श मात्र से तुम मूर्छित हो जाओगे। हे श्री राधे! इस प्रकार पग पग पर प्रेम विवश आपका अनुगमन करने वाले नागर शिरोमणि श्रीलाल जी को वचन चातुरी से डाँट कर आप दोनों के चित्त को मैं कब भलीभाँति मोहित प्रमुदित करूँगी ॥१९०॥

कदा वा राधायाः पदकमलमायोज्य हृदये
दयेशं निःशेषं नियतमिह जह्यामुपविधिम्।
कदा वा गोविंदः सकल सुखदः प्रेम करणा
दनन्ये धन्ये वै स्वयमुपनयेत स्मरकलाम् ॥१९१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री राधा जी के कृपा पूर्ण पद कमल को हृदय में धारण करके इस जीवन में सर्वाङ्ग रूप से नियमित विधि विधान को मैं कब त्यागूंगी तथा सकल सुखप्रद श्री लाल जी मुझ अनन्य धन्य को प्रियाजी की कृपा भाजन जान स्वयं ही विहार परिपाटी की कब शिक्षा देंगे ।।१६१।।

कदा वा प्रोद्दामस्मरसमरसंरंभरभस
प्ररूढस्वेदांभःप्लुतलुलितचित्राखिलतनू ।
गतौ कुञ्जद्वारे सुखमरुति संवीज्य परया
मुदाहं श्रीराधारसिकतिलकौ स्यां सुकृतिनी ।।१६२।।

निर्बाध काम संग्राम की उत्कण्ठा के वेग से उत्पन्न स्वेद सलिल द्वारा जिनके शरीर सर्वांग सिक्त शिथिल एवं विचित्र हो गये हैं तथा जहां सुख से वायु प्राप्त हो सके ऐसे कुञ्ज द्वार पर विराजमान उन श्री राधा एवं रसिक शेखर लाल जी की परम प्रीति से सम्वीजन बयार करके मैं कब भाग्यशालिनी होऊँगी ।।१६२।।

मिथः प्रेमावेशाद्घनपुलकदोर्वल्लिरचित
प्रगाढाश्लेषेणोत्सवरसभरोन्मीलितदृशौ
निकुंजक्लृप्ते वै नवकुसुमतल्पेभिशयितौ
कदा पत्संवाहादिभिरहमधीशौ नु सुखये ।।१६३।।

परस्पर प्रेम के आवेश से सान्द्र रोमांच युक्त भुज लताबद्ध प्रगाढालिंगन से उत्सव रस के आधिक्य द्वारा अर्ध निमीलित नेत्र वाले तथा निकुञ्ज में सुसज्जित नूतन कुसुम शय्या पर विराजमान अपने अधीश्वर प्रिया प्रियतम को मैं कब पाद सम्वाहनादि चरण सेवा आदि से सुखित करूँगी ।।१६३।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मदारुणविलोचनं कनकदर्पकामोचनं
महाप्रणयमाधुरीरसविलासनित्योत्सुकम् ।
लसन्नववयःश्रिया ललितभंगिलीलामयं
हृदा तदहमुद्वहे किमपि हेमगौरं महः ।।१९४।।

मद मत्त रक्त नेत्र वाले, स्वर्ण के सौन्दर्य्य गर्व को खर्व करने वाले महा प्रणय माधुरी के रसमय विहार के लिए सतत उत्कण्ठित, नूतन कैशोर वय श्री से शोभित, ललित परिपाटी से युक्त लीला स्वरूप उस किसी अनिर्वचनीय स्वर्णवत् गौर तेज को मैं हृदय में धारण करता हूँ ।।१९४।।

मदाघूर्णन्नेत्रं नवरतिरसावेशविवशो-
ल्लसद्गात्रं प्राणप्रणय परिपाट्यां परतरम् ।
मिथो गाढाश्लेषाद्वलयमिव जातं मरकत
द्रुतस्वर्णच्छायं स्फुरतु मिथुनं तन्मम हृदि ।।१९५।।

मद से घूर्णित नेत्र जिनके हैं, नवीन रति (अत्यंत प्रेमासक्ति) रसावेश विवशता से उल्लसित वपु, और प्राणों के साथ प्रणय परिपाटी (प्रेम की रीति) में परस्पर एक दूसरे से बढ़कर परस्पर परस्पर परम श्रेष्ठ परस्पर आलिंगन से वलयाकार (कङ्कण की तरह गोल) हो रहे नीलमणि श्यामसुन्दर और द्रवीभूत (पिघला हुआ) स्वर्णच्छवि वाली गौर श्री राधा श्यामल-गौर युगल मेरे हृदय में स्फुरित हों । संगम-सुख की भावना युक्त युगल का स्वरूप है ।।१९५।।

परस्परं प्रेमरसे निमग्नमशेषसंमोहनरूपकेलि ।
वृन्दावनांतर्नवकुंजगेहे तन्नीलपीतं मिथुनं चकास्ति ।।१९६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परस्पर के प्रेम रस में डूबा हुआ, जिसका रूप एवं केलि विश्व विमोहन वाली है, वृन्दावन के मध्य नूतन कुञ्ज सदन में नील पीत वर्ण वाला वह युगल तेज देदीप्यमान हो रहा है ॥१९६॥

आशास्य दास्यं वृषभानुजाया
स्तीरे समध्यास्य च भानुजायाः ।
कदा नु वृन्दावनकुञ्जवीथी
ष्वहं नु राधे ह्यतिथिर्भवेयम् ॥१९७॥

श्री वृषभानु नंदिनी आपके कैङ्कर्य की कामना मन में रखकर और यमुना जी के तीर पर निवास करके हे श्रीराधे ! श्री वृन्दावन की कुञ्ज गलियों में क्या कभी में अभ्यागत होकर निवास करूंगा ॥१९७॥

कालिंदीतटकुञ्जे पुँजीभूतं रसामृतं किमपि ।
अद्भुतकेलिनिधानं निरवधिराधाभिधानमुल्लसति ॥१९८॥

श्रीयमुना तटवर्त्ति निकुञ्ज में विचित्र केलि परम्परा का निधान कोई अनिर्वचनीय श्री राधा नामक घनीभूत रसामृत तत्त्व असीम रूप से उल्लसित प्रकाशित हो रहा है ॥१९८॥

प्रीतिरिव मूर्तिमती रससिंधोः सारसंपदिव विमला ।
वैदग्धीनां हृदयं काचनवृन्दावनाधिकारिणीजयति ॥१९९॥

मूर्त्ति धारिणी प्रीति के समान रस समुद्र की निर्मलतम सार भूत सम्पत्ति ही समस्त चातुरी की एक मात्र हृदय सार रूपा कोई अनिर्वचनीय श्री वृन्दावन की स्वामिनी सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान है ॥१९९॥

रसघनमोहनमूर्तिं विचित्रकेलिमहोत्सवोल्लसितम् ।
राधाचरणविलोडितरुचिरशिखंडं हरिं वंदे ॥२००॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घनीभूत रस की मोहन मूर्त्ति विचित्र रति विहार के महोत्सव से उल्लास युक्त श्री राधा के युगल चरणों से मथित अतएव चरण प्रभा से मोर मुकुट वाले श्री हरि की मैं वंदना करता हूँ ।।२००।।

कदा गायंगायं मधुरमधुरीत्या मधुभिद
श्चरित्राणि स्फारामृतरसविचित्राणि बहुशः ।
मृजंती तत्केलीभवनमभिरामं मलयज-
च्छटाभिः सिंचंती रसह्रदनिमग्नास्मि भविता ।।२०१।।

मधुसूदन श्री लाल जी के अमृत रस से भरे विचित्र लीला चरित्रों का अत्यन्त मधुर रीति से बारबार गान करती हुई उनके सुन्दर केलि सदन को मार्जन करती, एवं चन्दन जल धाराओं से सींचती हुई मैं कब रस सरोबर में निमग्न हो जाऊँगी ॥२०१॥

उदंचद्रोमांचप्रचयखचितां वेपथुमतीं
दधानां श्रीराधामतिमधुरलीलामयतनुम् ।
कदा वा कस्तूर्या किमपि रचयंत्येव कुचयो-
र्विचित्रां पत्रालीमहमहह वीक्षे सुकृतिनी ।।२०२।।

अहह ! अपनी स्वामिनी श्री राधा जी के स्तन युगल पर अति रमणीय अनिर्वचनीय अभूत पूर्व विचित्र पत्रावली की रचना कस्तूरी से भली भांति कर मैं पुण्यशालिनी होकर पुलकित रोमावली से सुशोभित, कम्पायमान अति मधुर लीलामय वपु धारिणी श्री राधा जी का दर्शन कब करूँगी ।।२०२।।

क्षणं शीत्कुर्वाणा क्षणमथ महावेपथुमती
क्षणं श्यामश्यामेत्यमुमभिलपंती पुलकिता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाप्रेमा कापि प्रमदमदनोद्दामरसदा
सदानंदा मूर्तिर्जयति वृषभानोः कुलमणिः ।।२०३।।

अत्यंत प्रेम वैचित्री के कारण जो किसी क्षण सीत्कार करने लगती है तो दूसरे ही क्षण अत्यन्त कम्पायमान होती है, फिर किसी समय हे श्याम ! श्याम ! ऐसा प्रलाप करने लगती है और पुलकायमान भी होती है,ऐसी कोई अनिर्वचनीया जो वृषभानु पिता कुल की मणि रूप किशोरी ही सर्वोत्तमता को प्राप्त है,जो सदा आनन्द की मूर्ति है महा प्रेम-स्वरूप एवं प्रमद मदन के लिये भी श्रेष्ठतम रस की दाता है। वही हमारी स्वामिनी श्री राधा है ।।२०३।।

यस्याः प्रेमघनाकृतेः पदनखज्योत्स्नाभरस्नापित
स्वांतानां समुदेति कापि सरसा भक्तिश्चमत्कारिणी ।
सा मे गोकुलभूपनंदनमनश्चोरी किशोरी कदा
दास्यं दास्यति सर्ववेदशिरसां यत्तद्रहस्यं परम् ।।२०४।।

घनी-भूत सांद्रप्रेम की मूर्ति श्री राधा जी पादनखचन्द्रिका के प्रवाह द्वारा अर्थात् नखचन्द्रकी ज्योत्स्ना प्रवाह में भींजे चित्त वाले भक्तों के हृदय में कोई अनिर्वचनीय सरस चमत्कारिणी भक्ति अच्छी तरह उदय हो जाती है। वे गोकुल के राजा के नन्दन गोकुल चन्द्र लाल जी के भी मन का हरण करने वाली कृष्ण चित्त चोरिणी किशोरी मुझको अपना सर्ववेद--शिरोमणि उपनिषद का भी परम रहस्य रूप कैंकर्य कब प्रदान करेंगी ।।२०४।।

कामं तूलिकया करेण हरिणा यालक्तकैरंकिता
नानाकेलिविदग्धगोपरमणीवृन्दे तथा वंदिता ।
या संगुप्ततया तथोपनिषदां हृद्येव विद्योतते
सा राधाचरणद्वयी मम गतिर्लास्यैकलीलामयी ।।२०५।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरि श्री श्यामसुन्दर के कर कमलों से जिसमें महावर द्वारा भली भांति स्वर्णशलाका से यथेच्छ चित्रित किया है। जो अनेक-अनेक केलिचतुर गोपवधू वृन्दों से वन्दित है और जो वेदशिराभूषणमय उपनिषदों,ब्रह्म विद्याओं के हृदय में संगुप्त भाव से विद्यमान हैं(प्रकाशित हैं)मुख्य रूप से नृत्य लीलामय श्री राधा चरण द्वयी मेरी गति है ।।२०५।।

सांद्रप्रेमरसौघवर्षिणि नवोन्मीलन्महामाधुरी
साम्राज्यैकधुरीण केलिविभवत्कारुणण्यकल्लोलिनि ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रचित्तहरिणी बंधुस्फुरद्वागुरे
श्रीराधे नवकुञ्जनागरि तवक्रीतास्मि दास्योत्सवैः।।२०६।।

हे घनीभूत (सांद्र) प्रेम रस-प्रवाह को बरसाने वाली ! हे नवीन प्रफुल्लित महा माधुरी साम्राज्य की सर्वश्रेष्ठ केलि-विभव युक्त करुणा मयी गंगे ! हे श्री वृन्दावनचन्द्र श्री श्यामसुन्दर के चित्त रूपी मृगीबन्धु मृग के लिये प्रकाशमान दृढ़ बन्धन स्वरूप,हे नव कुंजनागरी मैं तो आपके दास्योत्सव में बिक गई हूँ ।।२०६।।

स्वेदापूरः कुसुमचयनैर्दूरतः कंटकांको
वक्षोजेऽस्यास्तिलकविलयो हंत घर्माम्भसैव ।
ओष्ठः सख्या हिमपवनतः सव्रणो राधिके ते
क्रूरास्वेवं स्वघटितमहो गोपये प्रेष्ठसंगम् ।।२०७।।

अहो श्री स्वामिनि राधिके ! आपने स्वयं ही प्रियतम अपने प्राणनाथ लालजी के साथ सङ्गम रति विहार किया है,मैं उसको हास परायण आपकी सहेलियों से यह कह कर छिपाऊँगी बहुत दूर दूर की बाटिका में जाकर पुष्पों का चयन कर लाने के कारण हमारी सखी श्री राधाजी के अंग में पसीना बह रहा है। तथा इनके स्तन मण्डल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर कंटकों ही के क्षत हैं। पसीने ही से छुपकर बह जाने के कारण इनका तिलक विलय (मार्जित) हो गया है प्रेष्ठ संगसे नहीं। हमारी इस राधा प्यारी का अधरोष्ठ ठंडी बयार से व्रण हो गया अर्थात् दंत नहीं हैं। हे श्री राधे इस प्रकार की वचन चातुरी से मैं आपके निज-रचित प्रिय संगम को छिपादूंगी ॥२०७॥

पातंपातं पदकमलयोः कृष्णभृंगेण तस्याः
स्मेरास्येंदोर्मुकुलितकुचद्वंद्वहेमारविंदम्।
पीत्वा वक्त्रांबुजमतिरसान्नूनमंतः प्रवेष्टु-
मत्यावेशान्नखरशिखया पाटचमानं किमीक्षे ॥२०८॥

हाय मैं क्या कभी ऐसा भी दर्शन कर सकूँगी कि श्री प्रिया मुख-कमल का मधुपान करके अत्यन्त प्रेमावेश से भरे हुए श्री श्याम-सुन्दर मधुकर निकुञ्ज के भीतर फिर प्रवेश प्राप्त करने के लिये बार बार श्री राधा चरण कमलों में गिरकर प्रार्थना कर रहे होंगे और जब श्याम निकुञ्ज में पहुंच जायँगे तब उन मधुर हास्य युक्त श्रीराधा के मुकुलित दोनों कुचरूप स्वर्ण कमलों को अपनी नखाग्र पंक्ति से विदीर्ण करते होंगे ॥२०८॥

अहो तेमी कुंजास्तदनुपमरासस्थलमिदं
गिरिद्रोणी सैव स्फुरति रतिरंगे प्रणयिनी।
न वीक्षे श्रीराधां हरहर कुतोपीति शतधा
विदीर्येत प्राणेश्वरि मम कदा हंत हृदयम् ॥२०९॥

अहो (हाय हाय) बहुत विषाद की बात है ! यह सब वही कुञ्जें ! वही अनुपम रास स्थली तथा रति काल में आह्लाद (सुख) कारिणी गिरि गुहायें भी तो वे ही हैं परन्तु हाय हाय कहीं भी तो श्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारी लाड़ लड़ेती श्री राधा के दर्शन नहीं होते हैं। यह विचार होते ही हे प्राणेश्वरी शोक खेद से मेरा हृदय कब सौ सौ विदीर्ण(टूक टूक) हो जावेगा ॥२०६॥

इहैवाभूत्कुंजे नवरतिकलामोहनतनो
रहो अत्रानृत्यद्दयितसहिता सा रसनिधिः ।
इति स्मारंस्मारं तव चरितपीयूषलहरीं
कदा स्यां श्री राधे चकित इह वृन्दावनभुवि ॥२१०॥

अहो ! मोहनाङ्गी श्री प्रिया जी इसी कुञ्ज में नवीन रति केलि (प्रथम मिलन) हुई थी, अहह प्रियतम के संग उन रसनिधि श्रीराधा ने यहीं पर नृत्य भी किया था। हे श्री राधे इस प्रकार आपकी चरितामृत लहरी(भावों)को बार बार याद करता हुआ इस श्री वृन्दावन की भूमि में कब चकित होकर रहूँगी ॥२१०॥

श्रीमद्बिंबाधरे ते स्फुरति नवसुधामाधुरीसिंधुकोटि
र्नेत्रांतस्तेविकीर्णाद्भुतकुसुमधनुश्चण्डसत्कांडकोटिः ।
श्रीवक्षोजे तवातिप्रमदरसकलासारसर्वस्वकोटिः
श्रीराधे त्वत्पदाब्जात्स्रवति निरवधिप्रेमपीयूषकोटिः॥२११॥

हे श्री राधे, आपके शोभाशाली अधरोष्ठ में करोड़ों नवीन सुधा माधुरी के सिंधु प्रकट हो रहे हैं। आपकी तिरछी चितवन अद्भुत कामदेव के करोड़ों प्रचंड सुन्दर बाणों को बिखेरती रहती है। आपके श्री सम्पन्न उरोजों में से (स्तनों से) कोटि कोटि अत्यन्त प्रकृष्ट प्रसस्त रति रस कला के सार सर्वस्व स्फुरित होते रहते हैं, आपके चरणारविन्दों से कोटि कोटि असीम प्रेमामृत के स्रोत झरते रहते हैं ॥२११॥

सांद्रानंदोन्मदरसघनप्रेमपीयूषमूर्त्तेः
श्रीराधाया अथ मधुपतेः सुप्तयोः कुञ्जतल्पे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुर्वाणाहं मृदुमृदुपदांभोजसंवाहनानि
शय्यांते किं किमपि पतिता प्राप्ततंद्रा भवेयम् ।। २१२।।

प्रगाढ़ानन्द एवं उन्मदरस सम्पन्न प्रेमामृत की घनीभूत मूर्ति, कुञ्ज शय्या पर शयन करने वाले श्री राधा तथा लाल जी के अनिर्वचनीय रूप से अत्यन्त कोमलता पूर्वक चरण कमलों का सम्वाहन करती हुई शय्या के प्रान्त में लुढ़क कर क्या मैं तन्द्रा वश हो जाऊँगी ।।२१२।।

राधापादारविंदोच्छलितनवरसप्रेमपीयूषपुंजे
कालिंदीकूलकुंजे हृदि कलितमहोदारमाधुर्यभावः ।
श्रीवृन्दारण्यवीथीललितरतिकलानागरीं तां गरीयो-
गंभीरैकानुरागां मनसि परिचरन्विस्मृतान्यः कदास्याम्।।२१३।।

श्री राधा चरण कमल से उच्छलित नूतन रसमय प्रेमामृत पुञ्ज से सम्पन्न श्री यमुना तटवर्ती कुञ्ज में स्थित होकर, अपने हृदय में महा उदार मधुर किंकरी भाव से धारण करके श्री लाल जी के प्रति गम्भीर तथा अनुराग शालिनी, श्रीवृन्दावन की वीथी में वि ाज मान ललित रति कला सम्पन्न उन श्री राधा नागरी की मानसिक अन्तश्चिन्तित वपु से परिचर्य्या करता हुआ मैं कब अन्य समस्त प्रपंच को भुला दूंगा ।।२१३।।

अदृष्ट्वा राधांके निमिषमपि तं नागरमणिम्
तया वा खेलंतं ललितललितानंगकलया ।
कदाहं दुःखाब्धौ सपदि पतिता मूर्छितवती
न तामाश्वास्यार्त्ता सुचिरमनुशोचे निजदशाम् ।। २१४।।

अत्यन्त ललित काम कला पूर्ण उन श्री राधा जी के साथ क्रीडा करते हुए श्री राधा जी के अङ्क में निमेष मात्र भी उन नागर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिरोमणि लाल जी को न देखकर उनके विरह से आर्त्त प्रिया जी को बिना आश्वासन दिये, तत्काल ही दुःख सागर में पड़कर मूर्च्छित हुई, मैं कब अपनी उस दशा पर चिरकाल तक पश्चात्ताप करूंगी अर्थात् मैंने स्वयं सँभल कर प्रिया जी की उस दुःख में सेवा संभार न की ॥२१४॥

भूयोभूयःकमलनयने किं मुधावार्यतेसौ
वाङ्मात्रेपि त्वदनुगमनं न त्यजत्येव धूर्त्तः ।
किंचिद्राधे कुरु कुचतटीप्रांतमस्य त्वदीय-
श्चक्षुर्द्वारा तमनुपतितं चूर्णतामेतु चेतः ॥ २१५॥

हे कमलाक्षि ! उन लालजी को आप बारबार व्यर्थ ही क्यों रोक रही हो, यह धूर्त्त वाणी मात्र से कभी आपका अनुसरण कदापि नहीं छोड़ता है, हे श्री राधे ! आप कुच तट (कोर) की तनिक झाँकी करा दीजिये जिससे इनका मृदुल चित्त नेत्र मार्ग से उस कुच तट पर गिरकर चूर चूर हो जावेगा ॥२१५॥

किं वा नस्तैः सुशास्त्रैः किमथ तदुदितैर्वर्त्मभिः सद्गृहीतै
र्यत्रास्ति प्रेममूर्त्तेर्नहि महिमसुधा नापि भावस्तदीयः ।
किं वा वैकुण्ठलक्ष्म्याप्यहह परमया यत्र मेनास्तिराधा
किंत्वाशाप्यस्तु वृन्दावनभुविमधुरा कोटिजन्मांतरेपि॥ २१६॥

हमारा उन बृहत् शास्त्रों से क्या प्रयोजन है अथवा उनसे प्रतिपादित सज्जनों से स्वीकृत पद्धतियों से भी क्या लेना है जिनमें प्रेम विग्रह श्री राधा जी का महिमामृत नहीं है या उनका भाव भी सर्वथा नहीं है, अहह (आश्चर्य) सर्वोत्कृष्ट वैकुण्ठ शोभा से भी हमें क्या लाभ है, जहाँ हमारी श्री राधा नहीं हैं। किन्तु कोटि २ जन्मों में भी वृन्दावन की भूमिमें ही हमारी ऐसी मधुर आशा लगी रहे ॥२१६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपनिदि, वाराणसी
अंक–नि–अध्यात्म

श्यामश्यामेत्यनुपमरसापूर्णवर्णैर्जपंती
स्थित्वास्थित्वा मधुरमधुरोत्तारमुच्चारयंती ।
मुक्तास्थूलान्नयनगलितानश्रुबिंदून्वहंती
हृष्यद्रोमा प्रतिपदिचमत्कुर्वती पातु राधा ॥२१७॥

हे श्याम ! हे श्याम ! इस प्रकार अनुपम रस से पूर्ण वर्ण नाम का जप करती हुई तथा रुक रुक कर मधुरातिमधुर उसी नाम का उच्च स्वर से उच्चारण करती हुई, एवं नेत्रों से झरते मोतियों के समान स्थूल अश्रु बिन्दुओं को धारण करती हुई, रोमाञ्च भूषिता क्षण क्षण में चमत्कार-उद्दीपन को प्राप्त श्रीराधाजी हमारी रक्षा करें ॥२१७॥

तादृङ्मूर्त्तिर्व्रजपतिसुतः पादयोर्मे पतित्वा
दंताग्रेणाथ धृततृणकम् काकुवादान्ब्रवीति ।
नित्यं चानुव्रजति कुरुते संगमायोद्यमं चे
त्युद्वेगं मे प्रणयिनि किमावेदयेयं नु राधे ॥२१८॥

हे प्रणयिनि श्री राधे ! मोहन मूर्ति व्रजेशनन्दन मेरे चरणों में गिर कर तथा दाँतों में तृण दबा कर अनुनय विनय पूर्ण वचनावली कहते रहते हैं, और नित्य ही मेरा अनुगमन करते हैं, और आपके सङ्गम के लिए ऐसे सब यत्न करते रहते हैं, इस प्रकार के अपने मानसिक उद्वेग को मैं आपके सम्मुख कहाँ तक निवेदन करूँ ॥२१८॥

चलल्लीलागत्या क्वचिदनुचलद्धंसमिथुनम्
क्वचित्केकिन्यग्रे कृतनटनचन्द्रक्यनुकृति ।
लताश्लिष्टं शाखिप्रवरमनुकुर्वत् क्वचिदहो
विदग्धद्वंद्वं तद्रमत इह वृन्दावन भुवि ॥२१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कभी तो चलते चलते लीला पूर्ण गति द्वारा हंस हंसिनी की चाल का अनुसरण करते हैं, और कभी मयूरी के आगे नाचने वाले मयूर का अनुकरण करते हैं, फिर कभी लता से आलिंगित तरुवर का अनुकरण करते हैं,अहह ! इस प्रकार इस वृन्दावन की भूमि में वह विदग्ध युगल रमण कर रहे हैं ।।२१६।।

व्याकोशेंदीवराष्टापदकमलरुचा हारि कांत्या स्वया
यत्कालिन्दीयं सुरभिमनिलं शीतलं सेवमानम् ।
सान्द्रानन्दं नवनवरसं प्रोल्लसत् केलिवृन्दं
ज्योतिर्द्वन्द्वं मधुरमधुरं प्रेमकन्दं चकास्ति ।।२२०।।

जो अपनी कान्ति से विकसित नील एवं स्वर्ण कमल की शोभा को हरण करने वाला है, शीतल सुगन्धित श्री यमुनाजी के पवन को सेवन करता हुआ घनानन्द पूर्ण नव नव रस मय केलि कलाओं को उल्लसित करने वाला, मधुरातिमधुर प्रेम का मूल कारण ऐसा वह प्रकाशमान युगल प्रकाशित हो रहा है ।।२२०।।

कदा मधुर सारिकाः स्वरसपद्यमध्यापयत्
प्रदाय करतालिकाः क्वचन नर्तयत् केकिनम् ।
क्वचित् कनकवल्लरी वृततमाललीलाधनं
विदग्धमिथुनं तदद्भुतमुदेति वृन्दावने ।।२२१।।

कभी मधुर स्वर वाली सारिकाओं को स्वकीय रस पूर्ण श्लोक को पढ़ाते हुए,कभी अपने हाथ से ताली बजा कर मयूर को नचाते हुए तथा किसी समय स्वर्णलता से आलिंगित तमाल की लीला अनुरूपता को धन के समान आदर देते हुए वह विदग्ध युगल श्री वृन्दावन में प्रकाशित हो रहा है ।।२२१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पत्रालीं ललितां कपोलफलके नेत्राम्बुजे कज्जलं
रंगं बिंबफलाधरे च कुचयोः काश्मीरजालेपनम् ।
श्रीराधे नवसंगमाय तरले पादांगुलीपंक्तिषु
न्यस्यन्ती प्रणयादलक्तकरसं पूर्णा कदा स्यामहम् ।।२२२।।

कपोलों पर सुन्दर पत्र रचना को, तथा नेत्र कमल में काजल को, और बिम्बाफल समान अधरोष्ठ पर, रङ्ग को, कुच मण्डल पर केसर लेप को एवं चरणों की अंगुलियों में प्रेम से यावक रस को लगाती हुई, हे नव संगम चञ्चले श्री राधे ! मैं कब कृतार्थ होऊँगी ।।२२२।।

श्रीगोवर्धन एक एव भवतापाणौ प्रयत्नाद्धृतो
राधावर्ष्मणि हेमशैलयुगले दृष्टेपि ते स्याद्भयम् ।
तद्गोपेंद्रकुमार मा कुरु वृथा गर्व परीहासतः
कर्ह्येवं वृषभानुनंदिनि तव प्रेयांसमाभाषये ।।२२३।।

आपने तो एक श्री गोवर्धन को ही प्रयत्न पूर्वक हाथ पर उठाया था, श्री राधा के शरीर में तो स्वर्ण के शैल युगल देखते ही तुम्हें भय हो जायेगा । अतः हे गोपेन्द्र कुमार तुम वृथा गर्व मत करो, हे श्री वृषभानु नन्दिनि ! आपके प्रियतम से इस प्रकार परिहास पूर्वक मैं कब कहूँगी ।।२२३।।

अनंगजयमंगलध्वनितकिंकिणीडिंडिम
स्तनादिवरताडनैर्नखरदंतघातैर्युतः ।
अहो चतुरनागरीनवकिशोरयोर्मञ्जुले
निकुंजनिलयाजिरे रतिरणोत्सवो जृम्भते ।।२२४।।

काम विजय रूप मङ्गल की सूचना ध्वनित किंकिणी ही जहाँ नगारा है, स्तनादि के भली भांति मर्दन से एवं नख व दन्त क्षत से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युक्त अहह (आश्चर्य) सुन्दर निकुञ्ज भवन के प्राङ्गण में चतुर नागरी एवं नव किशोर का काम संग्राम महोत्सव प्रकाशित हो रहा है ।।२२४।।

यूनोर्वीक्ष्य दरत्रपानटकलामादीक्षयंतीदृशोः
र्वृण्वाना चकितेन संचितमहारत्नस्तनं चाप्युरः ।
सा काचिद्वृषभानुवेश्मनि सखीमालासु बालावली
मौलिः खेलति विश्वमोहनमहासारूप्यमाचिन्वती ।।२२५।।

युवक एवं युवतियों की अल्प लज्जायुक्त नट तुल्य कलाओं को देखकर अपने दोनों नेत्रों को दीक्षित करती हुई, तथा चकित भाव से संचित महारत्न रूपी स्तन मण्डल वाले वक्षस्थल को ढकती हुई, विश्व मोहनार्थं महा सारूप्य का संचय करती हुई, श्री वृषभानु भवन में सखियों के मध्य में वह कोई बालाओं की शिरोमणि क्रीड़ा कर रही है ।।२२५।।

ज्योतिः पुंजद्वयमिदमहो मंडलाकारमस्या
वक्षस्युन्मादयति हृदयं किंफलत्यन्यदग्रे ।
भ्रूकोदंडं नकृतघटनं सत्कटाक्षौघबाणैः
प्राणान्हन्यात्किमु परमतो भावि भूयो न जाने ।।२२६।।

अहह आश्चर्य है, इन के वक्षस्थल पर यह मण्डलाकार दो प्रकाश पुञ्ज (देखते ही) हृदय को उन्मत्त बना रहे है, आगे और क्या फल लाता है अर्थात् क्या प्रभाव करेगा तथा कुटिल कटाक्ष रूप बाण समूह से युक्त हुए, बिना ही भ्रू चाप प्राणों का हनन कर रहा है इससे अधिक बढ़कर और क्या होने वाला है, यह मैं नहीं जानता ।।२२६।।

भोः श्रीदामन्सुबल वृषभस्तोककृष्णार्जुनाद्याः
किं वो दृष्टं मम नु चकिता दृग्गता नैवकुंजे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काचिद्देवीसकलभुवनाप्लाविलावण्यपूरा
दूराद्देवाखिलमहरतप्रेयसो वस्तु सख्युः ॥२२७॥

हे हे श्री दामा ! सुबल ! वृषभ ! स्तोक कृष्ण ! अर्जुन आदि सखाओ तुम सबने क्या देखा है,मेरी चकित अर्थात् भयभीत दृष्टि तो कुञ्ज के भीतर जा ही नहीं पाई।अपने लावण्य प्रवाह से सकल भुवन को आप्लावित करने वाली किसी अनिर्वचनीय देवी ने दूर से ही तुम्हारे प्रिय सखा मेरी समस्त जीवन वस्तु को अपहरण कर लिया है ॥२२७॥

गता दूरे गावो दिनमपि तुरीयांशमभज
द्वयं दातुं क्षांतास्तव च जननी वर्त्मनयना ।
अकस्मात्तूष्णीके सजलनयने दीनवदने
लुठत्यस्यां भूमौ त्वयि नहि वयं प्राणिणिषवः ॥२२८॥

गौएँ बहुत दूर चली गईं, और दिन भी चतुर्थांश शेष रह गया है,हम आपको छोड़कर नहीं जा सकते हैं, और तुम्हारी माता भी बाट देख रही हैं, इस प्रकार अचानक ही मौन सजल नेत्र तथा म्लान मुख होकर तुम्हारे इस भूमि में लोटने पर हम प्राण धारण नहीं कर सकते हैं ॥२२८॥

नासाग्रे नवमौक्तिकं सुरुचिरं स्वर्णोज्ज्वलंबिभ्रती
नानाभंगिरनंगरंगविलसल्लीलातरंगावलिः ।
राधे त्वं प्रविलोभयव्रजमणिं रत्नच्छटामञ्जरी
चित्रोदञ्चितकञ्चुकस्थगितयोर्वक्षोजयोः शोभया ॥२२९॥

हे श्रीराधे ! आप नासाग्र भाग में स्वर्ण से भी उज्ज्वल सुन्दरतम नूतन मुक्ता को धारण कर रही हो, नाना विलास परिपाटी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्पन्न हो, कामोल्लास से विलसित लीला रूपी लहरी समूह से शोभित हो, रत्न कान्ति समूह तथा चित्र से चमत्कृत कञ्चुकी से आच्छादित अपने उरोज युगल की शोभा से व्रजमणि श्री लाल जी को लुब्ध करें ।।२२९।।

अप्रेक्षे कृतनिश्चयापि सुचिरं वीक्षेत दृक्कोणतो
मौने दार्ढ्यमुपाश्रितापि निगदेत्तामेव याहीत्यहो ।
अस्पर्शे सुधृताशयापि करयोर्धृत्वा बहिर्यापयेद्
द्राधाया इति मानदुस्थितिमहं प्रेक्षे हसन्ती कदा ।।२३०।

अहृह,(आश्चर्य) अदर्शन का निश्चय करने पर भी चिरकाल तक तिरछी चितवन से देख लेती हैं, सुदृढ़ असंभाषण का आश्रय लेकर भी "उसी दूसरी सखी के पास जाइये" इस प्रकार कह उठती हैं, स्पर्श न करने का सुदृढ़ विचार करके भी लालजी के दोनों हाथ पकड़ कर कुञ्ज से बाहिर निकाल देती हैं, इस प्रकार की श्री राधाजी की मान की चञ्चल स्थिति को हँसती हुई मैं कब देखूंगी ।।२३०।।

रसागाधे राधाहृदि सरसि हंसः करतले
लसद्वंशःस्रोतस्यमृतगुणसंगः प्रतिपदम् ।
चलत्पिच्छोत्तंसः सुरचितवतंसः प्रमदया
स्फुरद्गुञ्जागुच्छः स हि रसिकमौलिर्मिलतु माम् ।।२३१।।

अगाध रसपूर्ण श्री राधा हृदय सरोवर में हंस के समान हाथ में सुन्दर वंशी धारण करने वाले,पद पद पर प्रत्येक इन्द्रिय तथा रोम-रोमको अमृत सम प्रतीत होने वाले,प्रिया जी के गुणों में आसक्त,चञ्चल मयूर मुकुट धारी, प्रिया जी द्वारा सुसज्जित, करणाभरण कुण्डलादि से अलंकृत, देदीप्यमान गुञ्जाओं के गुच्छ से शोभित वही रसिक शेखर लालजी मुझे मिलें, अपनायें ।।२३१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अकस्मात्कस्याश्चिन्नववसनमाकर्षति परां
सुरल्या धम्मिले स्पृशति कुरुतेन्याकरधृतिम् ।
पतन्नित्यं राधापदकमलमूले व्रजपुरे
तदित्थं वीथीषु भ्रमति स महालंपटमणिः ॥२३२॥

अचानक किसी एक के नवीन वस्त्र को खेंचते हैं, दूसरी किसी गोपी के केश पाश को मुरली से स्पर्श करते हैं, किसी अन्य के हाथ को ही ग्रहण करते हैं, और नित्य ही श्री प्रिया राधा जी के पद कमल मूल में लोटते रहते हैं,सो इस प्रकार, व्रजपुरी की वीथियो में वह महा लम्पट शिरोमणि घूमते रहते हैं ॥२३२॥

एकस्या रतिचौर एव चकितं चान्यास्तनान्ते करं
कृत्वा कर्षति वेणुनान्यसुदृशो धम्मिल्लमल्लीस्त्रजम् ।
धत्तेन्या भुजवल्लिमुत्पुलकितां संकेतयत्यन्यया
राधायाः पदयोर्लुठत्यलममुं जाने महालंपटम् ॥२३३॥

किसी एक के रति चोर हैं अर्थात् संकेत करके नहीं आते हैं तथा अन्य किसी के वक्षस्थल पर चकित भाव से हाथ रखकर वेणु के द्वारा अन्य सुनयनी गोपी के केश पाश की मल्ली माल खेंचते हैं, अन्य किसी की रोमाञ्चित भुजलता को पकड़ लेते हैं, तथा किसी अन्य से संकेत करते हैं और श्री प्रिया जी के चरणों में लोटते रहते हैं। ऐसे इस महा लम्पट को मैं भली प्रकार जानती हूँ ॥२३३॥

प्रियांसे निक्षिप्तोत्पुलकभुजदण्डः क्वचिदपि
भ्रमन्वृंदारण्ये मदकलकरींद्राद्भुतगतिः ।
निजां व्यञ्जन्नत्यद्भुतसुरतशिक्षां क्वचिदहो
रहः कुञ्जे गुंजाध्वनितमधुपे क्रीडति हरिः ॥२३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहह ! कभी तो वृन्दावन में प्रिया जी के स्कन्ध पर रोमाञ्चित भुज लता को डाले मदोन्मत्त गजराज के समान विचित्र गति से घूमते फिरते हैं, और कभी अपनी अति विचित्र सुरत शिक्षा को प्रकट करते हुए भ्रमरों के गुञ्जार से युक्त निभृत निकुञ्ज में श्री हरि लाल जी खेलते रहते हैं ।।२३४।।

दूरेसृष्टचादिवार्ता न कलयति मनाङ्नारदादीन्स्वभक्तां-
छ्रीदामाद्यैः सुहृद्भिर्न मिलति हरति स्नेहवृद्धिं स्वपित्रोः
किंतु प्रेमैकसीमां मधुररससुधासिंधुसारैरगाधां
श्रीराधामेव जानन्मधुपतिरनिशं कुञ्जवीथीमुपास्ते ।।२३५।।

सृष्टि आदि की बात तो दूर रही, अपने नारदादि भक्तों का भी तनिक ध्यान नहीं करते, श्री दामा आदि सहृदों से भी नहीं मिलते, अपने पितृ वर्ग नन्द यशोदा आदि की स्नेह वृद्धिको भी संकुचित कर देते हैं, परन्तु अगाध मधुर रससुधा सिंधु के सार स्वरूप प्रेम की चरमावधि श्री प्रिया को एक मात्र जानते हुए मधुपति श्री लाल जी निरन्तर कुञ्ज वीथी की उपासना करते रहते हैं ।।२३५।।

सुस्वादु सुरसतुन्दिलमिंदीवरवृन्दसुन्दरं किमपि ।
अधिवृन्दाटवि नंदति राधावक्षोजभूषणं ज्योतिः ।।२३६।।

अतिशय आस्वादनीय मधुर रस परिपुष्ट नील कमल समूह सम सुन्दर श्री राधा वक्षस्थल की आभूषण कोई अनिर्वचनीय ज्योति श्री वृन्दावन में आनन्दित हो रही है ।।२३६।।

कांतिः कापि परोज्ज्वला नवमिलच्छ्रीचंद्रिकोद्भासिनी
रामाद्यद्भुतवर्णकांचितरुचिर्नित्याधिकांगच्छविः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लज्जानम्रतनुः स्मयेन मधुरा प्रीणाति केलिच्छटा
सन्मुक्ताफलचारुहारसुरुचिः स्वात्मार्पणेनाच्युतम् ।।२३७।।

नूतनता को प्राप्त शोभा सम्पन्न चाँदनी से भी ललनाओंमे मुख्य ललितादिक द्वारा विचित्र हिंगुल चन्दन आदि की कान्ति से सम्पन्न, क्षण-क्षण नूतन छवि से भूषित, लज्जा से विनत शरीर वाली, स्मित से मधुर मुख वाली, केलि विलास छटा युक्त, शुभ्र मुक्ता फल रचित मनोहर हार की सुन्दर कान्तिमयी, कोई अनिर्वचनीय परमोज्ज्वल शोभा अर्थात् प्रियाजी अपना सर्वस्व निवेदन करके अपने प्राण नाथ लालजी को प्रसन्न कर रही हैं ।।२३७।।

यन्नारदाजेशशुकैरगम्यं बृन्दावने मञ्जुलमंजु कुञ्जे ।
तत्कृष्णचेतोहरणैकविज्ञमत्रास्तिकिंचित्परमंरहस्यम् ।।२३८।।

जो नारद, ब्रह्मा, शङ्कर, शुक आदि से अगम्य है, वह अशोक के सुन्दर कुञ्ज मण्डित इस श्रीवृन्दावन में श्रीकृष्ण के चित्त चुराने में एक मात्र चतुर कोई अनिर्वचीय परम रहस्य विराजमान है ।।२३८।।

लक्ष्म्या यश्च न गोचरी भवति यन्नापुः सखायःप्रभोः
संभाव्योपिविरंचिनारदशिवस्वायंभुवाद्यैर्नयः ।
यो वृन्दावननागरीपशुपतिस्त्रीभावलभ्यः कथं
राधामाधवयोर्ममास्तु स रहोदास्याधिकारोत्सवः ।।२३९।।

जो लक्ष्मी जी को भी ज्ञान गम्य नहीं है, तथा जिसे लाल जी के सखा भी नहीं प्राप्त कर सके, एवं जो ब्रह्मा नारद शङ्कर सनकादिकों से सम्भावनीय भी नहीं है, जो श्री वृन्दावन की नागरी गोपिकाओं के भाव द्वारा प्राप्य है, वह श्री राधामाधव का एकान्त कैङ्कर्य्य रूप पूर्ण मधुर अधिकार मुझे कैसे प्राप्त हो ।।२३९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उच्छिष्टामृतभुक्तवैव चरितं शृण्वंस्तवैव स्मर-
न्पादांभोजरजस्तवैव विचरन्कुञ्जांस्तवैवालयान् ।
गायन्दिव्यगुणांस्तवैव रसदे पश्यंस्तवैवाकृतिं
श्रीराधे तनुवाङ्मनोभिरमलैः सोहं तवैवाश्रितः ॥२४०॥

हे कैंकर्य रसदे ! श्री राधे ! आपके ही उच्छिष्ट अमृत तुल्य प्रसादी का भोगी होकर, आपके ही चरण कमल की रज का स्मरण करता हुआ, आपके ही विहार स्थल कुञ्जों में विचरता हुआ, आपके ही दिव्य गुणों का गान करता हुआ, आपके ही मनोहर आकृति रूप का दर्शन करता हुआ, निर्मल तन, वचन एवं मन से, ऐसा मैं आपके ही आश्रित हूँ ॥२४०॥

क्रीडन्मीनद्वयाक्ष्याः स्फुरदधरमणीविद्रुमश्रोणिभार
द्वीपायामांतरालस्मरकलभकटाटोपवक्षोरुहायाः ।
गम्भीरावर्त्तनाभेर्बहुलहरिमहा प्रेमपीयूष सिन्धोः
श्रीराधायाःपदांभोरुहपरिचरणे योग्यतामेव चिन्वे ॥२४१॥

खेलते हुए मीन युगल ही जिनके नेत्र हैं, देदीप्यमान अधरोष्ठ ही श्रेष्ठ विद्रुममणि हैं, नितम्ब ही द्वीप का विस्तार है, हृदय में वर्तमान काम हो तरङ्ग है तथा गज शावक के गण्डस्थल का आटोप ही कुच मण्डल है, गम्भीर भँवर ही नाभि है तथा जो श्री लाल जी के प्रति महा प्रेम रूप अमृत की सिन्धु स्वरूप हैं, ऐसी श्री राधा जी के पद कमलों की परिचर्य्या में मैं योग्यता अधिकार का ही चयन करना चाहता हूँ ॥२४१॥

मालाग्रन्थनशिक्षया मृदुमृदुश्रीखण्डनिर्घर्षणा
देशेनाद्भुतमोदकादिविधिभिः कुञ्जांतसंमार्जनैः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दारण्यरहःस्थलीषु विवशा प्रेमार्तिभारोद्गमा-
त्प्राणेशंपरिचारिकैः खलु कदा दास्यामयाधीश्वरी ।।२४२।।

प्रेम जन्य आर्ति भार के प्रकट होने से,भाव विवश श्रीस्वामिनी माला गूँथने की शिक्षा से, धीरे-धीरे चन्दन घिसने की आज्ञा से, स्वादिष्ट अद्भुत मोदक निर्माण कला से, कुञ्जों के भीतर सम्मार्जन द्वारा, श्री वृन्दावन की एकान्त स्थली में इन उपर्युक्त विविध सेवाओं से मुझ दासी द्वारा अपने प्रियतम को कब भली भाँति प्रसन्न करेंगी ।।२४२।।

प्रेमांभोधिरसोल्लसत्तरुणिमारंभेण गम्भीरदृ
ग्भेदा भंगि मृदुस्मितामृतनवज्योत्स्नांचितश्रीमुखी ।
श्रीराधासुख धाम्नि प्रविलसद्वृन्दाटवीसीमनि
प्रेयोंके रतिकौतुकानि कुरुते कंदर्पलीलानिधिः ।।२४३।।

प्रेम सागर के रस से उल्लसित तथा तारुण्य के आरम्भ से गम्भीर कटाक्ष पात से सम्पन्न, विलास पद्धति मन्द स्मितामृत की नूतन चन्द्रिका से प्रशस्त मुख वाली काम कलाओं की निधि श्री राधा सुख निकेतन शोभा शाली वृन्दावन सीमा में प्रियतम के अङ्क में स्थित रति कौतुकों (विहार) का विस्तार कर रही हैं ।।२४३।।

शुद्धप्रेमविलासवैभवनिधिः कैशोरशोभानिधि
र्वैदग्धीमधुरांगभंगिमनिधिर्लावण्यसम्पन्निधिः ।
श्रीराधा जयतान्महारसनिधिः कन्दर्पलीलानिधिः
सौंदर्यैकसुधानिधिर्मधुपतेः सर्वस्वभूतो निधिः ।।२४४।।

उज्ज्वल प्रेम विलास के वैभव की निधि, किशोर वय शोभा की निधि, चातुरी पूर्ण मधुरांग जनित चेष्टाओं की निधि रूप लावण्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संपत्ति की निधि सर्व श्रेष्ठ शृङ्गार रस की निधि, काम कलाओं की निधि, सौन्दर्य की एक मात्र निधि एवं श्री लाल जी की सर्वस्व स्वरूप निधि, ऐसी श्रीराधा सर्वातिशायी रूप से विराजमान हों ।।२४४।।

नीलेंदीवरवृन्दकांतिलहरीचौरं किशोरद्वयं
त्वय्येतत्कुचयोश्चकास्ति किमिदं रूपेण सम्मोहनम् ।
तन्मामात्मसखीं कुरु द्वितरुणीयं नौ दृढं श्लिष्यति
स्वच्छायामभिवीक्ष्य मुह्यतिहरौराधास्मितंपातु नः ।।२४५।।

आपके इन कुच युगल में नील कमल समूह की कांति तरङ्ग को चुराने वाला तथा अपने रूप से सम्मोहित करने वाला यह किशोर युगल क्या चमक रहा है। इसलिए मुझे भी अपनी सखी बना लो जिससे यह तरुण युगल हम दोनों को गाढ़ालिङ्गन करें, इस प्रकार अपनी छाया को कुचों में देखकर हरि के मोहित होने पर, श्री राधा जी की मन्द मुस्कान हमारी रक्षा करे ।।२४५।।

संगत्यापि महोत्सवेन मधुराकारां हृदि प्रेयसः
स्वच्छायामभिवीक्ष्य कौस्तुभमणौ संभूत शोकाक्रुधा ।
उत्क्षिप्य प्रियपाणिमेव विनयेत्युक्त्वा गताया बहिः
सख्यै सास्त्रनिवेदितानि किमहं श्रोष्यामि ते राधिके।।२४६।।

हे श्री राधिके ! महोत्सव सुरत समागम को प्राप्त करके भी प्रियतम के हृदयस्थ कौस्तुभमणि में मधुराकृति वाली अपनी ही छाया को देखकर क्रोधावेश से शोक को प्राप्त होकर, प्रियतम के कर कमल को झटक कर अरे नीतिर्वाजत ! ऐसा कह कर बाहर चले जाने पर आपके द्वारा सखी के प्रति अश्रु पूर्ण निवेदन को क्या मैं सुनूँगी ।।२४६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महामणिवरस्त्रजं कुसुमसंचयैरंचितं
महामरकतप्रभा ग्रथितमोहितश्यामलम् ।
महारसमहीपतेरिव विचित्रसिद्धासनं
कदा नु तव राधिके कबरभारमालोकये ॥२४७॥

हे श्री राधिके ! प्रशस्त सुन्दर मणि मालाओं से युक्त कुसुम समूह से व्याप्त, मरकत मणि सदृश प्रभा वाले प्रियतम से गुम्फित तथा उन्हीं को मोहित करने वाले, रस राज रूपी महीपति का मानो विचित्र सिद्धासन ही हो ऐसे आपके केशपाश को क्या मैं कभी देखूँगी ॥२४७॥

मध्येमध्ये कुसुमखचितं रत्नदाम्ना निबद्धं
मल्लीमाल्यैर्घनपरिमलैर्भूषितं लंबमानैः ।
पश्चाद्राजन्मणिवरकृतोदारमाणिक्यगुच्छं
धम्मिल्लं ते हरिकरधृतं कर्हि पश्यामि राधे ॥२४८॥

हे श्री राधे ! बीच बीच में पुष्पों से भूषित, रत्न की माला से सम्यक्तया बँधा हुआ, अत्यन्त सुगन्धित लटकती हुई मल्ली मालाओं से शोभित, पीछे की ओर शोभायमान सुन्दर मणि रचित सुख प्रद माणिक्य गुच्छ से युक्त, श्री लाल जी के कर कमल से रचित, आपके केश पाश को मैं कब देखूँगी ॥२४८॥

विचित्राभिर्भंगीविततिभिरहो चेतसि परं
चमत्कारं यच्छँल्ललितमणिमुक्तादिललितः ।
रसावेशाद्वित्तः स्मरमधुरवृत्ताखिलमहो-
द्भुतस्ते सीमन्ते नवकनकपट्टो विजयते ॥२४९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहह ! विचित्र विचित्र विविध विन्यास पद्धति से चित्त में चमत्कार को प्रदान करता हुआ, सुन्दर मणि मुक्तादिकों से मनोहर रस के आवेश से काम सम्बन्धी मधुर चरित्र के सम्पूर्ण तेज को प्राप्त, विचित्र नूतन कनक पट्ट आपके सीमन्त में सुशोभित है ।।२४९।।

अहो द्वैधीकर्त्तुं कृतिभिरनुरागामृतरस
प्रवाहैः सुस्निग्धैः कुटिलरुचिरश्याम उचितः ।
इतीयं सीमंते नवरुचिरसिंदूररचिता
सुरेखा नः प्रख्यापयितुमिव राधे विजयते ।।२५०।।

हे श्री राधे ! आश्चर्य है चतुर पुरुषों को अति स्निग्ध अनुरागामृत रस के प्रवाह से कुटिल एवं रुचिर श्याम को द्विधा विभक्त करना ही उचित है, मानो इसी बात को हमें समझाने के लिए माँग में नूतन रुचिर सिंदूर से रची हुई, यह सुन्दर रेखा सर्वोपरि शोभित हो रही है ।।२५०।।

चकोरस्ते वक्त्रामृतकिरणबिम्बे मधुकर
स्तव श्रीपादाब्जे जघनपुलिने खञ्जनवरः ।
स्फुरन्मीनो जातस्त्वयिरससरस्यां मधुपतेः
सुखाटव्यां राधे त्वयि च हरिणस्तस्य नयनम् ।।२५१।।

हे श्री राधे ! उन मधुपति श्री लाल जी का नेत्र आपके मुख रूप चन्द्र मण्डल का चकोर, आपके चरण कमल का भ्रमर तथा जघन पुलिन का सुन्दर खञ्जन हो रहा है, आप रस की सरसी हो तो उनका नयन चञ्चल मीन है आप सुखाटवी हो तो वह उसमें हरिण के समान है ।।२५१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्पृष्ट्वास्पृष्ट्वा मृदुकरतलेनांगमंगं सुशीतं
सांद्रानन्दामृतरसह्रदे मज्जतो माधवस्य ।
अंके पंकेरुहसुनयना प्रेममूर्तिः स्फुरंती
गाढाश्लेषोन्नमितचिबुकाचुंबिता पातु राधा ॥२५२॥

कोमल कर कमल से अत्यन्त शीतल प्रत्येक अङ्ग का बार-बार स्पर्श करके,सघन आनन्दामृत रस के सरोवर में निमग्न होते हुए,लाल जी के अङ्क में कमल सी सुन्दर नयना देदीप्यमान प्रेममूर्ति, गाढ़ालिङ्गन से उठे हुये चिबुक वाली प्रियतम से चुंबित वे श्री राधा जी हमारी रक्षा करें ॥२५२॥

सदा गायंगायं मधुरतरराधाप्रिययशः
सदा सांद्रानन्दा नवरसदराधापतिकथाः ।
सदा स्थायंस्थायं न्वनिभृतराधारतिवने
सदा ध्यायंध्यायं विवशहृदि राधापदसुधाः ॥२५३॥

सदैव मधुराति मधुर श्री राधा जी के प्रियतम के यश का एवं घनीभूत आनन्द स्वरूप नूतन रस दायिनी श्री राधा प्राणेश्वर की कथाओं का बार बार गान करता हुआ, नूतन रहस्यमय श्री राधा विहार वन में नित्य निवास करके सदैव प्रेमावेश में श्री राधा पद सुधा का बार बार चिन्तन करता हुआ, मैं कब कृतार्थ होऊँगा ॥२५३

श्यामश्यामेत्यमृतरससंस्राविवर्णाञ्जपन्ती
प्रेमोत्कंठ्यात्क्षणमपि सरोमांचमुच्चैर्लपन्ती ।
सर्वत्रोच्चाटनमिव गता दुःखदुःखेन पारं
कांक्षत्यह्नो दिनकरमलं क्रुध्यती पातु राधा ॥२५४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे श्याम ! हे श्याम ! इस प्रकार अमृत रस प्रवाही नाम का जप करती हुई, क्षण में प्रेमोत्कण्ठा से पुलकित होकर उच्च स्वर से उसी नाम का उच्चारण करती हुई, अत्यन्त दुःख से सर्वत्र उच्चाटन को प्राप्त हुई, दिवसावसान को चाहती हुई, सूर्य्य के प्रति अत्यन्त क्रोध वती श्री राधा हमारी रक्षा करें ।।२५४।।

कदाचिद्गायन्ती प्रियरतिकलावैभवगतिं
कदाचिद्धयायन्ती प्रियसहभविष्यद्विलसितम् ।
अलं मुंचामुञ्चेत्यतिमधुरमुग्धप्रलपितै
र्नयन्ती श्रीराधा दिनमिह कदा नन्दयतु नः ।।२५५।।

कभी प्रियतम के रतिकला पूर्ण वैभव की दशा का गान करती हुई तथा किसी समय प्रियतम के साथ प्राप्त होने वाले भावी विलास का ध्यान करती हुई, छोड़ो जी छोड़ो, बस रहने दो इस प्रकार के अत्यन्त मनोहारी प्रलाप के द्वारा अपने दिन को व्यतीत करती हुई श्री राधा इस जीवन में कब हमें आनन्दित करेंगी ।।२५५।।

श्रीगोविंद व्रजवरवधूवृन्दचूडामणिस्ते
कोटिप्राणाभ्यधिकपरमप्रेष्ठपादाब्जलक्ष्मीः ।
कैंकर्येणाद्भुतनवरसेनैव मां स्वीकरोतु
भूयोभूयः प्रतिमुहुरधिस्वामि संप्रार्थयेहम् ।।२५६ ।।

हे श्री गोविन्द ! जिनके चरण कमल की शोभा आपको कोटि-कोटि प्राणों से अधिक परम प्रिय है, वे व्रज रमणी मणि समूह की शिरोमणि श्री प्रिया जी अद्भुत तथा नवीन रसमय अपने कैंकर्य्य प्रदान से ही मुझे स्वीकार करें, बस यही मैं आपके प्रति बार बार अधिकाधिक सविनय प्रार्थना करता हूँ ।।२५६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनेन प्रीता मे दिशतु निजकैंकर्यपदवीं
दवीयोदृष्टीनां पदमहह राधासुखमयी ।
निधायैवं चित्तेकुवलयरुचिं बर्हमुकुटं
किशोरं ध्यायामि द्रुतकनकपीतच्छविपटम् ।।२५७।।

आश्चर्य है सामान्य जनों की दृष्टि से जिनका स्वरूप सुदूर है। अर्थात् सविशेष अन्तर्दृष्टि से समीप है वह सुखमयी श्रीराधा इस कृत्य से प्रसन्न होकर मुझे अपनी कैंङ्कर्य पदवी प्रदान करें, इस प्रकार चित्त में रख कर द्रवीभूत स्वर्ण के समान पीताम्बर धारी, मयूर मुकुटी एवं नील कमल सम कांति वाले किशोर श्री लाल जी का मैं ध्यान करता हूँ ।।२५७।।

ध्यायंस्तं शिखिपिच्छमौलिमनिशं तन्नाम संकीर्तयन्
नित्यं तच्चरणांबुजं परिचरंस्तन्मंत्रवर्यं जपन् ।
श्रीराधापददास्यमेव परमाभीष्टं हृदा धारयन्
कर्हि स्यां तदनुग्रहेण परमोद्भूतानुरागोत्सवः ।।२५८।।

निरन्तर उन मयूर मुकुट धारी का ध्यान करता हुआ, नित्य उनका नाम संकीर्त्तन करता हुआ, उनके चरण कमल की सेवा करता हुआ, तथा उनके श्रेष्ठ मंत्र का जप करता हुआ, परम अभीष्ट श्रीराधा पद कैंकर्य को ही हृदय में धारण करता हुआ,उनके अनुग्रह से प्रकटित परम अनुराग के उत्सव से सम्पन्न मैं कब बनूँगा ।।२५८।।

श्रीराधारसिकेन्द्ररूपगुणवद्गीतानि संश्रावयन्
गुञ्जामंजुलहारबर्हमुकुटाद्यावेदयंश्चाग्रतः ।
श्यामप्रेषितपूगमाल्यनवगंधाद्यैश्च संप्रीणयं
स्त्वत्पादाब्जनखच्छटारसहृदे मग्नःकदास्यामहम्।।२५९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री राधा एवं रसिक शेखर के रूप तथा गुण से पूर्ण गीतों का भली भाँति गान करता हुआ और उनके सम्मुख गुञ्जा के सुन्दर हार एवं मयूर पिच्छ रचित मुकुटादिकों को निवेदन करता हुआ, तथा श्याम सुन्दर द्वारा प्रेषित सुपारी माला नूतन गन्धादि से सम्यक् आपको प्रसन्न करता हुआ आपके चरण कमल नखकांति रूप रस सरोवर में मैं कब निमग्न रहूँगा ।।२५९।।

क्वासौ राधा निगमपदवीदूरगा कुत्र चासौ
कृष्णस्तस्याः कुचकमलयोरंतरैकांतवासः ।
क्वाहं तुच्छः परममधमः प्राण्यहो गर्ह्य कर्मा
यत्तन्नाम स्फुरति महिमा एष वृन्दावनस्य ।।२६०।।

वेद पद्धति से दूर अप्राप्य कहाँ तो वह श्रीराधा जी तथा उनके कुच कमल के भीतर एकान्त निवास करने वाले कहाँ वे श्री कृष्ण ? तथा कहाँ मैं परम अधम, निन्दित कर्म वाला तुच्छ जीव, आश्चर्य है कि फिर भी उनका नाम मेरे हृदय में प्रकाशित हो रहा है यह श्री वृन्दावन की महिमा है ।।२६०।।

वृन्दारण्ये नवरसकलाकोमलप्रेममूर्तेः
श्रीराधायाश्चरणकमलामोदमाधुर्यसीमा ।
राधां ध्यायन्रसिकतिलकेनात्तकेलीविलासां
तामेवाहं कथमिह तनुं न्यस्य दासी भवेयम् ।।२६१।।

वृन्दावन में रसिक शिरोमणि के साथ विलास करने वाली, उन्ही श्री राधा का ध्यान करता हुआ मैं अपने इस शरीर को धरोहर के रूप में यहाँ रख कर, नव रस कलाओं से मृदुल प्रेम विग्रहवती श्री राधा जी के चरण कमल सम्बन्धी आमोद एवं माधुरी की अवधि स्वरूप दासी मैं कैसे हो सकूँगी ।।२६१।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हा कालिंदि त्वयि मम निधिः प्रेयसा क्षालितोभू
द्धोभोदिव्याद्भुततरुलतास्तत्करस्पर्शभाजः ।
हे राधाया रतिगृहशुका हे मृगा हे मयूरा
भूयोभूयः प्रणतिभिरहं प्रार्थये वोनुकंपाम् ।।२६२।।

हे यमुने ! तुम्हारे जल में मेरी निधि स्वरूप स्वामिनी को प्रियतम ने स्नान कराया है उन्हीं के कर स्पर्श को प्राप्त करने वाले हे हे दिव्याद्भुत तरुलताओ ! श्रीराधा रति गृह के हे शुको ! हे मृगो ! हे मयूरो ! मैं बार बार अनेक प्रणामों द्वारा आप सबकी अनुकम्पा चाहता हूँ ।।२६२।।

वहंती राधायाः कुचकलशकाश्मीरजमहो
जलक्रीडावेशाद्गलितमतुलप्रेमरसदम् ।
इयं सा कालिंदी विकसितनवेंदीवररुचि
स्सदा मंदीभूतंहृदयमिह संदीपयतु मे ।।२६३।।

अहह ! जल केलि के आवेश से धुल कर छूटी हुई अनुपम प्रेम रस देने वाली श्री प्रिया जी के कुच कलश में लगी हुई केशर को बहाती हुई, प्रफुल्लित नूतन नील कमल के समान कांति वाली यह प्रसिद्ध श्री यमुना इस जीवन में मायिक अन्धकार से मन्दी भूत मेरे हृदय को सदा प्रकाशित करें ।।२६३।।

सद्योगीन्द्रसुदृश्यसांद्र रसदानंदैकसन्मूर्त्तयः
सर्वेप्यद्भुतसन्महिम्नि मधुरे वृन्दावनेसंगताः ।
येक्रूराअपि पापिनो न च सतां संभाष्यदृश्याश्चये
सर्वान्वस्तुतया निरीक्ष्य परमस्वाराध्यबुद्धिर्मम ।।२६४।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो व्यक्ति क्रूर एवं पापी हैं और सज्जनों के साथ भाषण एवं दर्शन के योग्य भी नहीं हैं, वे सभी अद्भुत महिमा शाली श्रीवृन्दावन के समागम का लाभ करके, श्रेष्ठ योगीन्द्रों के भी दर्शनीय मधुर रसदाता एवं आनन्द की एकमात्र श्रेष्ठ मूर्ति हो जाते हैं, उन सबको वास्तविक रूप से देख कर मेरी उनमें अपने परम आराध्य की बुद्धि हो ।।२६४।।

यद्राधापदकिंकरी कृतहृदां सम्यग्भवेद्‌गोचरं
ध्येयं नैव कदापि यद्हृदि विना तस्याःकृपास्पर्शतः ।
यत्प्रेमामृतसिंधुसाररसदंपापैकभाजामपि
तद्वृन्दावनदुष्प्रवेशमहिमाश्चर्यं हृदि स्फूर्जतु ।।२६५।।

जो श्री प्रिया जी के पद कमल में अपने हृदय को कैंकर्य भाव से समर्पणकरने वाले व्यक्तियों को ही सम्यक् रूप से गोचर होता है, तथा जो उन श्रीजी की कृपा प्राप्ति के बिना कभी भी हृदय में ध्यान का विषय भी नही होता है एवं जो एक मात्र पापियों को भी प्रेमामृत सिंधु के सार रूप रस को दान करने वाला है, वह आश्चर्य रूप श्री वृन्दावन की दुर्गम महिमा मेरे हृदय में प्रकाशित हो ।।२६५।।

राधाकेलिकलासु साक्षिणि कदा वृन्दावने पावने
वत्स्यामि स्फुटमुज्ज्वलाद्भुतरसे प्रेमैकमत्ताकृतिः ।
तेजोरूपनिकुञ्ज एव कलयन्नेत्रादिपिंडस्थितं
तादृक्स्वोचितदिव्यकोमलवपुः स्वीयं समालोकये ।।२६६।।

मैं एक मात्र प्रेम में ही मतवाला होकर अद्भुत मधुर केलि कलाओं के साक्षी रूप पावन श्री वृन्दावन में कब भली भाँति निवास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करूँगा, तथा शरीरस्थ नेत्रादि इंद्रियों को तेज पूर्ण निकुञ्ज में लगाता हुआ अपने तद्वत् तेजामय भाव के अनुरूप दिव्य कोमल किंकरी वपु को कब देखूँगा !।२६६।।

यत्रयत्र मम जन्म कर्मभिर्नारकेथ परमे पदेऽथवा।
राधिकारतिनिकुंजमण्डलीतत्रतत्रहृदिमेविराजताम्।।२६७।।

नरक में अथवा परम पद में कर्मवश जहाँ जहाँ भी मेरा जन्म हो वहाँ वहाँ श्री राधिका रति विहार निकुञ्ज मण्डली मेरे हृदय में विराजमान हो ।।२६७।।

क्वाहं मूढमतिः क्व नाम परमानंदैकसारं रसः
श्रीराधाचरणानुभावकथया निस्यंदमाना गिरः।
लग्नाः कोमलकुञ्जपुञ्जविलसद्वृन्दाटवीमण्डले
क्रीडच्छ्रीवृषभानुजापदनखज्योतिश्छटाः प्रायशः ।।२६८।।

मैं मन्द मति कहाँ तथा परमानन्द का एक मात्र सार रस रूप नाम कहाँ,श्रीराधा चरण प्रवाह की कथा के द्वारा प्रवाहित होने राधा वाली मेरी वाणियाँ कोमल कुञ्ज समूह से शोभायमान वृन्दाटवी मंडल में संलग्न हैं प्राय: वे विहार परायण वृषभानु कुमारी की पद नख ज्योति की छटा से समन्वित हैं ।।२६८।।

श्रीराधे श्रुतिभिर्बुधैर्भगवताप्यामृग्यसद्वैभवे
स्वस्तोत्रं स्वकृपात एव सहजो योग्योप्यहं कारितः।
पद्येनैव सदापराधिनि महन्मार्गं विरुध्य त्वदे
काशेस्नेहजलाकुलाक्षि किमपि प्रीतिं प्रसादीकुरु ।।२६९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

.वेद, बुध जन, तथा भगवान् के द्वारा भी अन्वेषणीय श्रेष्ठ वैभवशालिनि हे श्री राधे ! मुझे भी पद्य रूप से अपने स्तोत्र के निर्माण में अपनी ही कृपा से आपने सहज योग्य बना दिया। स्नेहार्द्र-नयने ! सदा अपराध युक्त एवं महत् मार्ग का विरोध करके एक मात्र आपकी आशा लगाने वाले मुझे अपनी अनिर्वचनीय प्रीति का प्रसाद प्रदान कीजिये ।।२६९।।

अद्भुतानंदलोभश्चेन्नाम्ना रससुधानिधिः ।
स्तवोयं कर्णकलशैर्गृहीत्वा पीयतां बुधाः ।।२७०।।

हे बुधजनो यदि आपके चित्त में विचित्र अनुपम लोभ है तो राधारससुधानिधि नामक इस स्तोत्र को कर्ण कलशों द्वारा ग्रहण श्रवण करके पान कीजिये ।।२७०।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधा सुधानिधि श्लोक सूची

अ

अकस्मात् कस्याश्चिन् २३२
अकस्मात् कौमारे ६५
अकस्मात्तूष्णीके २२८
अगाधरसधामनि १२२
अङ्कस्थितेऽपि दयिते ४६
अङ्कें पङ्कें रुह २५२
अंङ्ग च भूषयितुम् ३६
अङ्ग प्रत्यङ्गरिगन् १६२
अतिस्नेहादुच्चैरपि ५४
अतृप्तहरिलोचन १६१
अत्याग्रहेण कर ४२
अदृष्टवा राधाङ्के २१४
अद्भुतकेलिनिधानं १६८
अद्भुतानन्दलोभ २७०
अद्य श्यामकिशोर १६७
अधिवृन्दाटवि नन्दति २३६
अनङ्गजयमङ्गल २२४
अनङ्गनवरङ्गिणी १७७
अनुल्लिख्यानन्तानपि १५४
अनेन प्रीता मे २५७
अन्तःकुञ्जकुटीर १३६
अन्योन्य क्षेपण १०७
अन्योन्य हास परिहास ४६
अपि प्रणयिनी वृहद् ११३
अप्रेक्षे कृतनिश्चयापि २३०
अमन्दप्रेमाङ्क ५१
अमन्दरसतुन्दिल १३२
अमर्यादोन्मीलत् १५२
अलं मुञ्चामुञ्चेत्यति २५५
अलं विषयवार्तया ८३
अलक्ष्यं राधाख्यं ५१
अलिन्दे कालिन्दी तट १६५
अस्पर्शे सुधृताशयापि २३०
अहो चतुरनागरी २२४
अहो तेमी कुञ्जा २०६
अहो द्वैधीकर्तुम् २५०
अहो भुवनमोहनं १४०
अहो मधुपकाकली १७७
अहो मधुरस १६६
अहो रसिक शेखरः १११
अहो विनिमयन्नवः १७०

आ

आधाय मूर्द्धनि ४
आनआननचन्द्रमीरित १२३
आलिख्य प्रियमुर्त्ति १८०
आलिगंत्यथ चुम्बति ११७
आशास्य दास्यं १६७

इ

इति प्रेष्ठेनोक्ता १४६
इति स्मारं स्मारं २१०
इतीयं सीमन्ते २५०
इतोभयमितस्त्रपा १०६
इत्थं कीरैरनुक्त १६३
इत्थं बाले महसि १६८
इत्थं राधे पथि १६०
इत्थं विहस्य १४
इयं सा कालिन्दी २६३
इहैवाभूत् कुञ्जे २१०

ई

ईशानी च शची ७८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उ

उच्छिष्टामृतभुक्तवैव	२४०	उन्नीयालकमञ्जरीः	१२३
उज्जागरं रसिक	१६	उन्मर्याद-प्रवृद्ध	६१
उज्जृम्भमाणरसवारि	११	उन्मीलन्नवमल्लिदाम	१५१
उत्क्षिप्य प्रियपाणि	२४६	उन्मीलन्मिथुनानुराग	६४
उत्फुल्लस्थल पङ्कज	८६	उन्मीलन्मुकुटच्छटा	१२०
उत्फुल्लेन्दीवर	१८६	उपास्यचरणाम्बुजे	१२२
उदञ्चद्रोमाञ्च	२०२		

ए

एकं काञ्चनचम्पक	१६६	एकस्या रतिचौर	२३३

ओ

ओष्ठः सख्या हिम	२०७	ओष्ठप्रान्तोच्छलित	१८६

क

कटाक्षैरालोके	८७	कलिन्दगिरिनन्दिनी पुलिन	६२
कदा गाथं गाथं	२०१	कलिन्दगिरिनन्दिनी सलिल	१३२
कदागोविन्दाराधन	१८३	काचिद् देवी सकल	२२७
कदाचिद्गायन्ती	२५५	काचिद् वृन्दावन नवलता	१४५
कदा नु वरनागरी	५८	कान्ताढ्याश्चर्यकान्ता	६१
कदा नु वृन्दावन	१६७	कान्तिः कापि	२३७
कदा मधुरसारिकाः	२२१	कामं तूलिकया	२०५
कदा रत्युन्मुक्तं	१७४	कारुण्यद्रवभाविनि	१८१
कदा रासे प्रेमोन्मद	१५८	कारुण्यार्द्र कटाक्ष	१८८
कदा वा कस्तूर्या किमपि	२०२	कालिन्दीकूलकल्पद्रुम	१२६
कदा वा कस्तूर्यास्तिलक	१७४	कालिन्दीतटकुञ्ज मन्दिर	६५
कदा वा खेलन्ती	६५	कालिन्दी तट कुञ्जे	१६८
कदा वा गोविन्दः	१६१	कालिन्दी सलिले	५६
कदा वा प्रोद्दाम	१६२	किन्नूमोन्यत्र	१७५
कदा वा राधायाः पद	१६१	किं रे धूर्तप्रवर	१६०
कदा वृन्दारण्ये मधुर	१३७	किं वा नस्तैः	२१६
कदा श्री राधायाः पद	१३७	किंवा वैकुण्ठलक्ष्म्या	२१६
कदा सुमणिकिङ्किणी	११३	किञ्च श्यामरति	७६
कदाहं दुःखाब्धौ	२१४	किञ्चित् केलिकला	६६
कन्दर्पकोटिशर	५	किञ्चिद्राधे कुरु	२१५
करं ते पत्रालिं	१०५	किञ्चैकं बहुमान	१६६
करीन्द्रवन	५७	किन्तु प्रेमैकसीमां	२३५
करे कमलमद्भुतं	१७१	किशोरं तज्ज्योति	१५०
करोतु स कृपां	१११	कुञ्जान्तरे किमपि	४७
कर्पूरादि सुवासितं	१३४	कुर्वाणाहं मृदुमृदु	२१२
कर्माणि श्रुतिबोधितानि	८२	कृष्णः पक्षो	८८
कलङ्करहितामृत	१८५	कृष्णामृतं चल	१४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्णे कस्मात्तव ८८
केनापि नागर ६
केनाप्यद्भुतमुल्लस ९५
केयूराङ्गदकङ्कणावलि १५१
कैङ्कर्यणाद्भुत २५६
कैर्वा भावरहस्य ८२
कैशोराद्भुत माधुरी ८०
कोटिन्दुच्छविहासिनी १८२
क्रीड़न्मीनद्वयाक्ष्या: २४१
क्रीड़ासर:कनक ३५
क्वचित् कनकवल्लरी २२१
क्वासौ राधा निगम २६०
क्वाहं तुच्छ: २६०
क्वाहं मूढ़मति: २६८
क्षणं मधुरगानत: १६६
क्षणं शीत्कुर्वाणा २०३
क्षरन्तीव प्रत्यक्षर १५३

ख

खेलन्मुग्धाक्षिमीन १७२

ग

गता दूरे गावो २२८
गतौ कुञ्जद्वारे १९२
गत्वा कलिन्दतनया २३
गम्भीरावर्त्तनाभेर्बहुल १७२
गम्भीरावर्त्तनाभेर्बहुल २४१
गाढ़स्नेहानुबन्ध १७३
गात्रे कोटितड़िच्छवि ६८
गायन्त्यहोदिनमपार ४८
गायन्दिव्यगुणांस्तवैव २४०
गोविन्दप्रियवर्गदुर्गम १२८
गौराङ्गे म्रदिमा ७४
ग्रैवेयोज्ज्वलकम्बुकण्ठि १०८

घ

घन पुलककपोला १५५

च

चकोरस्ते वक्त्रामृत २५१
चन्द्रास्ये हरिणाक्षि ११६
चरन्मकरकुण्डलं १८४
चलत्कुटिलकुन्तलं १८५
चलत्पिच्छोत्तंस: २३१
चलल्लीलागत्या २१९
चित्रग्रामनिवासनी १८२
चिन्तामणि: प्रणमतां २६

ज

जड़ीभूत: क्रीडामृग १८७
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिषु १६४
ज्योति: किञ्चन ६७
ज्योति:पुञ्जद्वय २२६

त

तच्छ्रीमुखं कुटिल २४
तज्जीयान्नवयौवनो ६८
तड़िन्मालागौरं ५०
ततो नीवीं न्यस्ते १०४
तत्कर्म्मैव कर: १४१
तत्कृष्णचेतोहरणैक २३८
तत्कैंकर्यमनुक्षणा ८५
तत्रैव त्रुटिता: १७९
तत्सौन्दर्यं स ८४
तदा न: किं धर्मै: ११५
तद् गोपेन्द्र कुमार २२३
तन्न: प्रतिक्षण ६
तन्नूतनस्तनयुगं ३४
तन्मामात्मसखीं कुरु २४५
तयोर्दासीभूत्वा १४८
तवैकं श्रीराधे १५४
तस्मै नमो भुवन ३५
तस्या अपार रस ३९
तस्या: कदानु ११
तस्यां: कदा रस ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तादृङ्मूर्तिर्व्रजपति २१८
ताम्बूलं क्वचिदर्पयामि १३४
तारुण्य प्रथम प्रवेश विलसन् १३५
तारुण्य प्रथम प्रवेशसमये ७१
तिर्यग्ग्रीवा रुचिर १८९
तेजोरूपनिकुञ्ज २६६
त्यक्ताः कर्मभिरात्मनैव ८०
त्वयि श्यामे नित्ये १४९
त्वां कामकेलि २२
त्वां श्यामचन्द्र ३१

द

दिव्य प्रमोद रस ५
दिव्यानन्ताद्भुतरसकलाः १४५
दीर्घापाङ्गच्छवि ६६
दुकूलं बिभ्राणामथ ५२
दुकूलमतिकोमलं १५७
दुकूलेनोन्मीलन्नव १८३
दूरादपास्य स्वजनान् ३२
दूरे स्निग्धपरम्परा ७३
दूरे सृष्ट्यादिवार्ता २३५
दृग्भङ्गी पुनरद्भुता ११८
दृशौ कुञ्जच्छिद्रै १०५
दृशौ त्वयि रसाम्बुधौ ९०
दृष्ट्या यत्र क्वचन ६२
दृष्ट्वैव चम्पकलतेव १८
देवानामथ भक्त मुक्त ९६

ध

धत्तेऽन्याभुज २३३
धम्मिल्लं ते नव ६६
धर्माद्यर्थचतुष्टयं ७७
धूर्तेन्द्र त्वद्भयमुपगता ६२
ध्यायंस्तं शिखिपिच्छ २५८

न

न जानीते लोकं १४६
न देवैर्ब्रह्माद्यैर्न १४८
न वीक्षे श्री राधां २०९
नासाग्रे नवमौक्तिकं २२९
निकुञ्जकलृप्ते वै १९३
निजप्राणेश्वर्या यदपि ५५
निजां व्यञ्जन्नत्यद्भुत २३४
नित्यं चानुव्रजति २१८
निधायैवं चित्ते २५७
निर्माय चारुमुकुटं ३०
निष्कग्रीवमुदार १२९
नीलेन्दीवरवृन्द २४५
नो किञ्चित् कृतमेव १०२

प

पतन्नित्यं राधापद २३२
पत्रालीं ललितां कपोल २२२
पत्रावलीं रचयितुं ३६
पद्येनैव सदापराधिनि २६९
परस्परं प्रेमरसे १९६
परानन्दं वृन्दावन ५४
परेश भजनोन्मदा ८३
पश्चाद्राजन्मणिवर २४८
पातं पातं पद २०८
पादस्पर्शरसो ६०
पादाङ्गुलीनिहित १५
पीतारुणच्छवि २९
पीत्वा वक्त्राम्बुज २०८
पीनश्रोणि तनूदरि १००
पीनश्रोणिस्तरुणिम ९९
पुलकितदयितांसे १५९
पूर्णप्रेमामृतरस १८६
पूर्णानुरागरसमूर्ति ४०
पूर्णानुरागरससागर १०
प्रतिक्षणचमत्कृताद्भुत ९२
प्रत्यक्षरं क्षरदपार ४५
प्रत्यङ्गोच्छलदुज्ज्वला १३५
प्रसृमरपटवासे १५९
प्राणालीकोटिनीराजित १२७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रात: पीतपटं ७५
प्रियांसे निक्षिप्तो २३४
प्रीतिं कामपि नाम ५६
प्रीतिरिव मूर्तिमती १९९
प्रेमानन्दरसैक ६९
प्रेमामृताम्बुधि २७
प्रेमाम्भोधिरसो २४३
प्रेमास्पदां व्रज २९
प्रेमोल्लसद्रसविलास ४१
प्रेमोल्लासैकसीमा १३०
प्रेम्ण: सन्मधुरोज्ज्वलस्य ७८
प्रेम्णाकर्णयते ९६
प्रेय:सङ्गसुधा १८१

ब
बध्नीयां कवरीं ७५
बलान्नीत्वा तल्पे किमपि १०४
बिभ्राणे भुजवल्लि ११०
ब्रह्मादि दुर्गमगते ३९
ब्रह्मानन्दैकवादा: १४७
ब्रह्मेश्वरादि सुदुरूह २
बृहत्कटितट १५७

भ
भक्तानां हृत्सरोजे १२६
भञ्जन्मध्यबृहन्नितम्ब ११६
भवति लसितचञ्चत् १६०
भावोत्सवेन भजतां ४
भूयो भूयः कमल २१५
भोः श्रीदामन् सुबल २२७
भ्रमद्भ्रु कुटिसुन्दरं ११९
भ्रू कोण्डं न कृतघटनं २२६

म
मञ्जीर शिञ्जित १९
मञ्जुस्वभावमधि २७
मत्कण्ठे किं नखर १६३
मदाघूर्णन्नेत्रं नवरति १९५
मंदाघूर्णन्नेत्रं रचयति १४४
मदारुणविलोचनं १९४
मध्ये मध्ये कुसुम २४८
मंदीकृत्य मुकुन्द १४२
मल्लीदामनिबद्धचारु १२९
महाप्रेमाकापि २०३
महाप्रेमोन्मीलन्नवरस ५०
महामणिवरस्रजं २४७
महारसमहीपते २४७
महारसिकमौलिना ११९
मालग्रन्थनशिक्षया २४२
माला चन्दन ६०
मिथ:प्रेमावेशाद् १९३
मिथोगाढ़ाश्लेषाद् १९५
मिथोभङ्गी कोटि १४४
मुक्तापंक्तिप्रतिमदशना ९९
मुक्तास्थूलान्नयन २१७
मुखं सुरतरंगिणि ९०
मुदान्त: कान्तेन १५८
मृजन्ती तत्केलि २०१

य
यज्जाप: सकृदेव ९४
यत्किंकरीषु बहुश: ७
यत्पादपद्मनखचन्द्र १०
यत्पादाम्बुरुहै: ७२
यत्प्रादुरस्ति कृपया ४०
यत्प्रेमामृतमाधुरी ७६
यत्प्रेमामृतसिन्धु २६५
यत्र यत्र मम जन्म २६७
यत्र श्रीवृषभानुजा ७३
यत्सिद्धि: परमापदैक ९७
यदि कनकसरोजं १६०
यदि स्नेहाद्राधे ८७
यद्गोविन्दकथा ११४
यद्यत्प्रीतिरकारि ११४
यद्राधापदकिंकरी २६५
यद्वृन्दावन मात्र ७६
यन्नामांकितमन्त्रंजापन ९४
यन्नारदाजेश २३८
ययोन्मीलत्केली १८७
यल्लीक्ष्मी शुक नारदादि ८५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्या: कटाक्षशरपात ३८
यस्या: कदापि वसनाञ्चल १
यस्याः प्रेमघनाकृते: २०४
यस्या: शोणाधरश्रीविधृत १२४
यस्या: स्फूर्जत्पदनख १३६
यस्यास्तत्सुकुमार १३१
यस्यास्ते बत किंकरीषु ६३
यातायातशतेन १३९
यावाराधयति ९७
यो वृन्दावनसीम्नि ७७
या संगुप्ततया २०५
यूनोर्वीक्ष्य दर २२५
ये क्रूरा अपि पापिनो २६४
येषां प्रेक्षां वितरति १०३
योगीन्द्रदुर्गम १
यो ब्रह्म रुद्र शुक ३
यो वृन्दावन नागरी २३९

र

रतामर्दस्रस्तं कच १०६
रसंराधायामाभजति १४६
रसघनमोहनमुर्ति २००
रसागाधेराधाहृदि २३१
रसार्द्रासन्मृद्वी १५३
रसावेशाद्वित: २४९
रहोगोष्ठीं श्रोतुं १०६
रहो दास्यं तस्या: ११५
राकाचन्द्रोवराको १२४
राकानेकविचित्रचन्द्र १२५
राधां ध्यायन् रसिक २६१
राधाकरावचित १३
राधाकेलिकथारसाम्बुधि १४२
राधाकेलिकथासुधाम्बुधि १६४
राधाकेलिक्रलासु २६६
राधाकेलिनिकुञ्ज १३८
राधाचरण विलोड़ित २००
राधादास्यमपास्य ७९
राधाननं हि ६
राधानामसुधारसं १४१
राधानामैवकार्यं १४३
राधापादसरोज ११७
राधापादाब्जलीला १४३
राधापादारविन्दो २१३
राधामाधवयो: परं ६४
राधामाधवयोर्विचित्र १७९
राधायशोमुखर १३
राधाया: सौकुमार्या १६२
राधायाश्चरणाम्बुजं १३८
राधिकारतिनिकुञ्ज २६७
राधेत्वंप्रविलोभय २२९
रूपंशारदचन्द्र १०८
रोमालीमिहिरात्मजा १७८

ल

लक्ष्मीकोटि विलक्ष्य ६७
लक्ष्म्यायश्च न गोचरी २३९
लग्ना: कोमलकुञ्ज २६८
लज्जानम्रतनु: २३७
लज्जान्त: पटमारचय्य १०१
लताश्लिष्टं शाखि २१९
लब्ध्वादास्यं तदति ८६
लसत्तुलसिमालिकां ८१
लसद्दशन मौक्तिक १८४
लसद्वदनपंकजा १७६
लसन्नववयश्रिया १९४
लावण्यं परमादभुतं ११८
लावण्यसाररससार २५
लावण्यसिन्धुरमृत १७
लावण्यामृतवार्त्तया ६१
लिखन्ति भुजमूलतो ८१
लीलापाङ्गतरङ्गितैरिव ८९
लीलापाङ्गतरङ्गितैरुद्भव ७१
लीलामाधुर्यसीमा १३०
लुलितनवलवङ्गोदार १५५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व

वक्षोजस्तवकाल १७८
वर्षन्तमेव सहजाद्भुत ३२
वहन्ती राधाया: कुच २६३
विचित्ररतिविक्रमं १७०
विचित्रवरभूषणोज्ज्वल ११२
विचित्रां स्नेहर्द्धि ५५
विचित्राभिर्भङ्गिवितितिभि २४६
विचिन्वन्ती केशान् ५३
विच्छेदाभासमाना १७३
विदग्धमिथुनं १४०
विपञ्चितसुपञ्चमं ५७
विशुद्धरसवाहिनी १७६
वीक्षे चलत्पदगतिं १५
वीणां करे मधुमतीं ४८
वृन्दाटवी नवनिकुंज ३०
वृन्दाटवी प्रकट ३३
वृन्दाटव्यां नवनवरसानंद १०७
वृन्दाटव्यां सुमहिम १०३
वृन्दानिसर्वमहता ८
वृन्दारण्य नवप्रसून ५६
वृन्दारण्य निकुञ्जकेलि ६८
वृन्दारण्यनिकुञ्जमंजुल ५६
वृन्दारण्यनिकुञ्जसीमनि तदा १२५
वृन्दारण्यनिकुञ्ज सीमनि नव ७०
वृन्दारण्यनिकुञ्जसीमसु १२८
वृन्दारण्यरह: स्थलीषु २४२
वृन्दारण्यस्थलीयं १७५
वृन्दारण्ये नवरसकला २६१
वृन्दारण्ये नवरससुधा १३३
वृन्दावनान्तर्नवकुञ्ज १६६
वृन्दावने विलसता ४६
वृन्दावनेश्वरि तवैव १२
वेणु: करान्निपतित: ३८
वैदग्धीना हृदयं १६६
वैदग्ध्यसाररति २५
वैदग्ध्यसिन्धुरनुराग १७
व्याकोशेन्दीवराष्टा पदकमल २२०
व्याकोशेन्दीवर विकसिता १३३

श

शुद्धप्रेमविलासमूर्ति १३१
शुद्धप्रेमविलास वैभव २४४
शुद्धप्रेमैकलीला १२७
श्यामं तमुन्मद ४३
श्यामश्यामेत्यनुपम २१७
श्यामश्यामेत्यमृत २५४
श्यामप्रेषितपूग २५६
श्यामानुरागमद ४६
श्यामामण्डलमौलि १२१
श्यामामृताम्बुनिधि २०
श्यामे चाटुरुतानि ११०
श्यामेति सुन्दर ३७
श्लोकान्प्रेष्ठय १८०
श्रीगोपेन्द्रकुमार १८८
श्रीगोवर्धन एक एव २२३
श्री गोविन्दव्रजवर २५६
श्रीमद्राधे त्वमथ मधुरं १६८
श्री मद्विम्बाधरे ते २११
श्री राधाकिंकरीणां त्वखिल १४७
श्री राधा जयतान्महा २४४
श्री राधापददास्यमेव २५८
श्रीराधाया मधुर ८६
श्रीराधारसिकेन्द्र २५६
श्रीराधासुखधामनि २४३
श्रीराधिकां निज २८
श्रीराधिके तव कदाचरणारविंदं २१
श्रीराधिके तव कदा नवनागरेन्द्रं २३
श्रीराधिके तव नवोद्गम ४४
श्रीराधिके तव रह: ४७
श्रीराधिके सुरतरङ्गिणि दिव्यकेलि २०
श्रीराधिके सुरतरङ्गिनितम्ब १६
श्रीराधे नव सङ्गमाय २२२
श्रीराधेश्रुतिभिर्नुधै २६६
श्रीवक्षोजे तवाति २११
श्रीवृन्दारण्यवीथी २१३
श्रीवृन्दावन कुञ्जमञ्जु ६१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीवृन्दावनचन्द्रचित्त	२०६	श्रोणीहेमवरासने	१०१
श्रोणीं दधद्रसगुणै	४४	श्रोण्याञ्च प्रथिमा	७४
श्रोणीमण्डलकिंकणीं	१२०	श्रोष्ये तल्पमिलन्महारति	१६७
स			
संगत्यापि महोत्सवेन	२४६	सान्द्रानन्दघनानुराग	६३
संलापमुच्छलदनंग	४५	सान्द्रानन्दरसामृत	७०
सगद्गदमुदीरितं	१०९	सान्द्रानन्दोन्मदरस	२१२
संकेतकुञ्जनिलये	४२	सान्द्रानुराग रस	३४
संकेतकुंजमनुकुंजर	२२	सापि प्रेमसुधा	७२
संकेतकुञ्जमनुपल्लव	३१	साभ्रू नर्त्तनचातुरी	६३
संकेतागमचातुरी	६३	सा मे गोकुलभूप	२०४
सत्तारणीकृतसुभाव	८	सा लावण्यचमत्कृति	१०२
सत्प्रेमराशि	२४	सा श्याम कामवर	२६
सत्प्रेमसिंधु	२१	सा श्यामसुन्दर	१८
सदा गायं गायं	२५३	सिञ्चन्तमद्भुतरसामृत	४१
सदानन्दं वृन्दावन	१५०	सिन्दूरसंवलित	२८
सदा स्थायं स्थायं	२५३	सुखस्पर्शेनामीलित	१६५
सद्गन्धमाल्य	४३	सुगुल्फे न्यस्यन्ती	५३
सद्योगीन्द्रसुदृश्य	२६४	सुधाकरंमुधाकरं	१६१
सद्योवशीकरण	३	सुस्नापिता हि	१६
सभ्रू विभंगमतिरंग	६	सुस्वादु सुरसतुन्दिल	२३६
सर्वत्रोच्चाटनमिव	२५४	सोत्कण्ठमह्नि	३७
सर्वस्व सम्पुटमिव	३३	सोऽयं बिम्बाधर	८४
सर्वार्थसार	२	सौन्दर्यामृतराशि	१५६
सहासरसपेशलं	१७१	स्तवोऽयं कर्णकलशै	२७०
सहासवरमोहना	५८	स्थितां नित्यं	५२
सा काचिद्वृषभानु	२२५	स्निग्धाकुञ्चितनीलकेशि	१००
सा कापि स्मरकेलि	१५६	स्पृष्ट्वा स्पृष्ट्वा मृदु	२५२
सा चेद्राधा रचयति	१३६	स्फुरन्ती प्रेयोऽङ्के	१५२
सातीवोन्मदकामकेलि	१२१	स्फुरन्मीनो जातस्त्वयि	२५१
सान्द्रप्रेमरसौघ	२०६	स्वयंच सकलाकलासु	११२
सान्द्रानन्दं नवनव	२२०	स्वेदापूरः कुसुम	२०७
ह			
हा कालिन्दी त्वयि	२६२	हेमाम्भोरुहकुड्मल	९८
हृर्पितं मधुपतेः	१२	हे राधाया रतिगृह	२६२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi